

# जहाज नम्बर 302

देवराज चौहान सीरीज

फोन की बेल बजते ही देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया ।  
“हेलो।”

“देवराज चौहान।” दूसरी तरफ महादेव था — “पहुँचाना मुझे?”

“महादेव?”

“हाँ। सुनो, मुझे तुमसे जरूरी काम है। बोलो कहाँ मिलते हो?”  
महादेव की आवाज कानों में पड़ी।

“तुम्हारी तबीयत कैसी है। तुम ईलाज करा—।”

“वो बीमारी ठीक नहीं होने वाली। डॉक्टर खामखाह तसल्ली  
देते रहते हैं। मैं जानता हूँ, कभी भी लुढ़क सकता हूँ। वैसे भी बहुत  
जी लिया। छोड़ो इन बातों को, कहाँ मिल रहे हो?”

“तुम बोलो?”

“माहिम, रेलवे स्टेशन के बाहर मिलो। जल्द आना।” महादेव  
की आवाज में बेचैनी आ गई थी।

देवराज चौहान के चेहरे पर अजीब-से भाव उभरे।

“छास बात है?”

“हाँ। यूँ समझो कि जहाज का खतरा सिर पर है।”

“मैं पहुँच रहा हूँ।” कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर  
रखा और जगमोहन को पुकारा — “जगमोहन!”

बंगले के एक कमरे से जगमोहन निकलकर पास आ पहुँचा।

महादेव के फोन के बारे में बताकर देवराज चौहान बोला।

“मैं माहिम जा रहा हूँ। थापर से तुम अकेले ही मिल आओ।  
वक्त मिलता तो मैं वही पहुँच जाऊँगा।”



"कहो तो, मैं भी साथ चलूँ। थापर से बाद में—।"

"थापर कई दिनों से याद आ रहा है। खुद तो वो 'थापर' को जमाने में लगा हुआ है। इसलिए उसे आने का वक्त नहीं मिल रहा। तुम आज उसके पास हो ही आओ।" देवराज चौहान ने कहा। पाठक जानते हैं कि थापर जो मादक पदार्थों का किंग था कभी। अब देवराज चौहान के कहने पर मादक पदार्थों का धंधा छोड़कर, उद्योगपति बनता जा रहा था। शहर के इज्जतदार लोगों में उसकी गिनती होने लगी थी।

"ठीक है।" जगमोहन ने कहा—"मैं थापर से मिलकर आता हूँ।"

अगले ही मिनट देवराज चौहान कार पर, माहिम रेलवे स्टेशन की तरफ बढ़ा जा रहा था।

माहिम रेलवे स्टेशन के सामने, सड़क पार मीजूद पार्किंग में, देवराज चौहान ने कार पार्क की और सड़क पार करता हुआ रेलवे स्टेशन के बाहरी गेट के पास आ पहुँचा और सिग्रेट सुलगाते हुए महादेव की तलाश में इधर-उधर निगाहें दौड़ाने लगा।

मिनट भर ही बीता होगा कि देवराज चौहान की निगाहें महादेव पर ठहर गईं। जो इसी तरफ बढ़ा आ रहा था। परन्तु अभी दूर था। देखने पर एकबारगी तो वह पहचानने में नहीं आ रहा था।

सिर के बाल और दाढ़ी के बाल पूरी तरफ सफेद हो चुके थे। कमजोर इस हद तक हो गया था कि बदन पर पड़े कपड़े झूलकर नीचे सटकते महसूस हो रहे थे। गाल पिचक-से गये थे। देखने पर स्पष्ट तौर पर लग रहा था कि पैसे की तरफ से उसका हाथ तंग है जबकि देवराज चौहान ने ईलाज कराने के नाम पर उसे लाखों रुपया दिया था। वह समझ गया कि महादेव की बीमारी बढ़ती जा रही है। उसी की वजह से उसका शरीर ढल रहा है।

महादेव पास पहुँचा।

देवराज चौहान ने स्पष्ट महसूस किया कि उसके चेहरे पर घबराहट और आंखों में बेचैनी है।

"तुमने अपनी क्या हालत बना रखी है। डॉक्टर क्या कहते—।"

"ये बात बाद में। पहले वो बात करूँगा, जिसके लिए तुम्हें यहाँ बुलाया है।" महादेव ने जल्दी से कहा।



"बाल करने की लिये तुम बंगले पर भी जा सकते हो।" देवराज चौहान ने उसे सहरी निगाहों से देखा।

"नहीं। हालांकि ऐसा है कि मेरा खुले में रहना ठीक नहीं। जान का खुलना है कल रात से भागा फिर रहा हूँ। अचानक तुम्हारा ध्यान आते ही, लगा जैसे सिर से बोझ उतर गया हो। मैं एकदम तुम्हें धोन मारा।" कहने के साथ ही महादेव की निगाहें हथर-उथर दीड़ी।

"बाल क्या है?"

"बाल—।"

उसी पल देवराज चौहान के देखते ही देखते महादेव की चेहरे के भाव बदले। मुँह खुला का खुला रह गया। आँखें फटकर चौड़ी हो गईं। जो गिरने की हुआ कि देवराज चौहान ने उसे फौरन संभाला।

"महादेव—महादेव—।"

महादेव का पूरा बोझ देवराज चौहान पर पड़ चुका था। दूसरे ही पल देवराज चौहान की दाहिने हाथ में बिपबिपाकट-की महसूस हुई। उसने देखा। हड्डेली खून से सन चुकी है। महादेव की कमर में साईंसाईं सगी रिबोंस्वर से गोली मारी गई थी, जो कि पीठ से बाहर निकल गई थी।

देवराज चौहान ने फौरन महादेव को धक किया।

अभी जान बाकी थी उसमें।

देवराज चौहान के दांत पिंच गये। चेहरा मुस्से से घचक उठा। उसने फौरन सिर घुमाकर रेलवे स्टेशन की तरफ देखा। गोली उसी तरफ से चलाई गई थी। वहाँ लोग धौजूद थे। कईयों की निगाह, उन पर पड़ चुकी थी और जो हैरानी से ठिठक कर नजारा देस रहे थे।

"किसने मारी गोली?" देवराज चौहान गुस्सेभरे स्वर में चिल्लाया।

जवाब कौन देता।

"तुम फिक्र मत करो महादेव! मैं तुम्हें—।"

"देव-राज—मेरी छो-छो। मैं तो ऐसे भी गिनती के दिन जी रहा था। दो दिन पहले क्या और बाद में क्या—।"

"नहीं महादेव, मैं—।"

"बल्ल बरबाद मत करो। मेरी सुनो।" महादेव की आवाज मध्यम पड़ती जा रही थी—"मैं—।"

"सुझे इतना बता दो, गोली मारने वाले कौन लोग हैं?" देवराज चौहान ने पिचे स्वर में कहा।

महादेव की आँखें बंद हो चुकी थीं।

"महादेव—महादेव—।" देवराज चौहान ने उसे जोरों से हिलाया।



मुझ-मुझ नीचे लिटा-दो।" महादेव के होंठों से फुसफुसाती आवाज निकली।

~~मैंने देवराज चौहान ने मुझे नीचे लिटाया।~~

महादेव की बंद पलकों में कम्पन हुआ। उसने आंखें खोलीं। देवराज चौहान को देखा।

"कुछ तो बोलो-महादेव-।" देवराज चौहान से सहा नहीं जा रहा था, इस तरह महादेव को मरते देखना।

महादेव के होंठ हिले।

देवराज चौहान ने अपने होंठ और भी सख्ती के साथ भींच लिये।

"ती-तीन सौ दो।" महादेव के होंठ जरा से खुले। मध्यम-सी आवाज निकली और इसके साथ ही उसकी सांसें रुक गईं।

"महादेव, क्या तीन सौ दो? मैं समझा नहीं तुम-।" देवराज चौहान के भिंचे होंठों से निकला।

लेकिन अगले ही पल समझ गया कि महादेव अब नहीं रहा। वो मर चुका है। देवराज चौहान के चेहरे पर पत्थर की कठोरता जैसे भाव आ गये। उसने आसपास निगाहें दौड़ाई। भीड़ बढ़ती जा रही थी। महादेव के शरीर को इसी तरह छोड़कर जाना उसके लिये मजबूरी बन गई थी। पुलिस अब किसी भी वक्त आ सकती थी और उसके देवराज चौहान होने की पहचान होते ही, सिर पर मुसीबतों का पहाड़ टूट सकता था।

महादेव की खुली आंखों को देवराज चौहान ने बंद किया और उठ खड़ा हुआ। भीड़ की तरफ निगाह मारी। वह जानता था कि महादेव की जान लेने वाला, इसी भीड़ में मौजूद है, परन्तु उसे पहचाना नहीं जा सकता। चेहरे पर कठोरता समेटे देवराज चौहान तेज कदमों से सड़क की तरफ बढ़ गया। जिसके पार पार्किंग में उसकी कार खड़ी थी। किसी ने भी उसे रोकने की चेष्टा नहीं की।

देवराज चौहान के मस्तिष्क में इस वक्त सिर्फ दो ही बातें थीं।

उसकी बांहों में महादेव की मौत और तीन सौ दो?

क्या कहना चाहता था महादेव?

□□

□□

जगमोहन ने जब बंगले में प्रवेश किया तो देवराज चौहान को फे पर बैठा पाया। दोनों टांगें सामने मौजूद सेंटर टेबल पर रखी थीं। उंगलियों में फंती सिग्रेट से वह कश ले रहा था।



जगमोहन ने एक ही नजर में पहचाना कि देवराज चौहान मुस्से से जल रहा है। जगमोहन धन ही धन सतर्क हुआ और करीब पहुंचा।

“वापस से मिलेंगे” देवराज चौहान ने धमकाया।

“हां।” जगमोहन ने गहरी निगाहों से उसे देखा—“क्या बात है? मुस्से में हो।”

जगमोहन को देखते, देवराज चौहान ने कश लिया।

“महादेव को गोली मारकर उसकी जान ले ली गई।”

“क्या कर रहे हो?” जगमोहन चिंहुक उठा।

“महादेव घेरे से बात कर रहा था, जब उसे गोली मारी गई। घेरी बाहों में उसने दम तोड़ा। वहां भीड़ थी, गोली मारने वालों को, मैं नहीं देख पाया।” देवराज चौहान के दांत भिंत गये—“वो मर गया। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर पाया, क्योंकि वहां पुलिस कभी भी आ सकती थी। उसके शरीर को छोड़कर आना पड़ा।”

जगमोहन की हालत अजीब-सी हो रही थी। महादेव का मरना उसे हजन नहीं हो रहा था।

“यह सब हुआ कैसे?”

“महादेव जब मुझसे मिला तो, वो पहले ही कुछ डरा हुआ था। बोला कल रात से मैं उन लोगों से बचता फिर रहा हूँ। मेरा ध्यान ही उसे सुबह आया कि—।”

“किन लोगों से बचता फिर रहा था?” जगमोहन के चेहरे पर कठोरता उभरी।

“वो बता नहीं पाया। उसे कुछ भी कहने का मौका नहीं मिला और मारा गया।”

“ओह—!”

“मरने से ठीक पहले उसने सिर्फ ‘तीन सौ दो’ कहा। शायद तब वो असल मामला बताने जा रहा था परन्तु सांसों ने साथ नहीं दिया। वो कुछ भी बता नहीं पाया।”

देवराज चौहान और जगमोहन एक-दूसरे को देखने लगे।

“तीन सौ दो का क्या मतलब?” जगमोहन के माथे पर बल पड़े हुए थे।

“कह नहीं सकता। लेकिन यह किसी चीज का नम्बर है। जिसके बारे में महादेव कुछ जान गया था और उसे मारने वाले लोग नहीं चाहते थे कि कोई ‘तीन सौ दो’ के बारे में जाने। यही वजह रही कि वो महादेव के पीछे पड़ गये और अंत में वो उसकी



जान लेकर ही रहे। तब मेरे बस में कुछ नहीं था। मैं उसे नहीं बचा सका।" कहते-कहते देवराज चौहान के चेहरे पर खतरनाक भाव आने लगे थे।

"यानि कि महादेव जिस मामले के बारे में बताना चाहता था, वे उसकी मौत के साथ ही खत्म हो गया।" जगमोहन बोला।

"महादेव की जान अवश्य चली गई।" देवराज चौहान की आवाज में सुन्नगन थी—"लेकिन मामला खत्म नहीं हुआ। वो तो अब शुरू हुआ है।"

जगमोहन की निगाह, देवराज चौहान के कठोर चेहरे पर जा टिकी।

"मैं समझा नहीं—।"

"तीन सौ दो, क्या है? किस चीज का नम्बर है? मुझे इस बात से कोई वास्ता नहीं, लेकिन जो लोग तीन सौ दो के बारे में जानते हैं, इससे वास्ता रखते हैं, वो ही महादेव के हत्यारे हैं और महादेव की हत्या मेरी बांहों में हुई है। ऐसे में मेरा फर्ज बनता है कि मैं महादेव के हत्यारे को सजा दूं। और महादेव के हत्यारे तक तभी पहुंच सकता हूं, जब तीन सौ दो नम्बर की इकीकत के बारे में जानूं, क्योंकि हत्यारे का सम्बन्ध तीन सौ दो नम्बर से है।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया। चेहरे पर गम्भीरता थी।

"तीन सौ दो नम्बर के बारे में कैसे मालूम किया जाये?"

"शुरुआत महादेव से ही होगी।" देवराज चौहान ने दांत भीककर कहा—"मेरा अभी खुले में जाना ठीक नहीं, क्योंकि बहुत-से लोगों ने महादेव को मेरी बांहों में दम तोड़ते देखा है और उसके मरने के बाद मैं वहां से चला आया। मुझे देखने वालों ने पुलिस को मेरा हुलिया बताया होगा। ताजा-ताजा हुलिया सुने पुलिस वाले मुझे देखकर पहचान सकते हैं। और मैं बेवजह वाले पुलिस के ड्राइव से दूर रहना चाहता हूं।"

जगमोहन, देवराज चौहान को देखता रहा।

"महादेव ने कहा था कि वो बीती रात से जान बचाता फिर रहा है?"

"हां।"

"तो मालूम करो महादेव किन-किन लोगों में बैठता था। किन से मिलता था और इन दिनों क्या कर रहा था। खासतौर से यह मालूम करो कि कल रात वो कहाँ था।" देवराज चौहान ने पिंछे स्वर में कहा।



जगमोहन ने समझाने वाले ढंग से सिर हिलाया।

“कहाँ से शुरूआत करोगे?”

“महादेव के घर के आस-पास से ही। इस बारे में पहली खबर तो वहीं से मिलेगी।” जगमोहन ने कहा।

“अगर महादेव के घर पुलिस पहुंच चुकी हो तो, अभी पूछताछ मत करना।” देवराज चौहान बोला।

जगमोहन, बंगले से बाहर निकल गया।

देवराज चौहान उठा और बेचैनी से वहाँ टहलने लगा। महादेव की मौत को वह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। खास वजह यह थी कि उसके सामने महादेव को गोली मारी गई। उसकी बांहों में यो भरा।

तभी फोन की बेल बजी।

देवराज चौहान ने रिसीवर उठाया।

दूसरी तरफ सोहनलाल था।

“महादेव के बारे में सुना।” सोहनलाल की आवाज कानों में पड़ी—“किसी ने माहिम रेलवे स्टेशन के बाहर उसे गोली मार दी। वो मर गया है। ये एक-दो घण्टे पहले की बात है।”

देवराज चौहान के चेहरे पर कठोरता आ गई।

“उसके मरने के बारे में तुम्हें किसने बताया?”

“अभी दस मिनट पहले, किसी ने बताया था।” सोहनलाल की आवाज आई—“कल वो मुझे मिला था।”

“कौन—महादेव?”

“हां।”

देवराज चौहान मन ही मन सतर्क हुआ।

“कहाँ?”

“चैम्बर में—वहाँ—।”

“उसके साथ क्या बात हुई?” देवराज चौहान ने उसकी बात काटकर पूछा।

“बात हो ही नहीं पाई। सड़क पर ही आमना-सामना हुआ। उसने मुझे कोई भाव नहीं दिया। मेरी तरफ देखकर सिर्फ मुस्कराया था। मैं समझ गया कि वो किसी फेर में है। क्योंकि तब उसके साथ कोई खूबसूरत युवती थी। मैंने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की। वो अपने रास्ते लग गया और मैं अपने रास्ते—।”

देवराज चौहान की आंखें सिकुड़ चुकी थीं।



"ये कितने बजे की बात है?"  
"दोपहर का बक्त होगा। एक-दो-तीन के बीच का। तुम क्यों पूछ रहे हो?"

"इस बक्त क्या कर रहे हो?" देवराज चौहान ने कहा।  
"खास कुछ नहीं। मैं—।"

"मेरे पास आओ। कुछ बात करनी है।" कहने के साथ ही देवराज चौहान ने रिस्तीवर रख दिया।

□□

□□

"समझे।" देवराज चौहान की कठोर निगाह, सोहनलाल के चेहरे पर थी— "महादेव ने मेरी ही बांहों में दम तौड़ा था।"

सोहनलाल सब-कुछ जान चुका था। चेहरे पर गम्भीरता लिए, उसने गोली वाली सिग्रेट निकाली और मुलगाकर कश लिया। निगाहें देवराज चौहान पर जा टिकीं।

"महादेव के मरने का वास्तव में अफसोस हुआ, क्योंकि वो अच्छा बंदा था। कई बार हमारे साथ काम कर चुका था।"

"तुमने बस युवती को अच्छी तरह देखा था, जिसके साथ कल महादेव था?" देवराज चौहान ने पूछा।

"हां। बहुत अच्छी तरह देखा था। क्योंकि उसका और महादेव का कोई मेल ही नहीं था। वो खूबसूरत थी। जबकि महादेव उसके बलता, बेहद गरीब इन्सान लग रहा था। वो लड़की पैसे वाली ही थी। मेरे ख्याल से महादेव नोटों के फेर में ही उसके साथ होगा।" सोहनलाल बोला।

"तुम्हारा मतलब कि युवती का कोई काम करके, महादेव उससे नोट वसूलना चाहता होगा।"

"हां।"

"मैं नहीं मानता।"

"क्यों?"

"महादेव को मुझ तक बाद आज ही मैंने देखा है। वो बहुत कमजोर हो चुका है। इस काबिल नजर नहीं आया कि वो कोई काम कर सके या फिर कोई उसे काम करने को कहे। काम कराने वाले को उससे बढ़िया सेहत वाले और फुर्तीले लोग मिल सकते हैं तो वह युवती, मेरे ख्याल में महादेव से कोई काम नहीं करायेगी।"

"मैं समझा नहीं कि तुम कहना क्या चाहते हो?"



"यही कि किसी खास वजह से तबत महादेव उस युवती के साथ था।" देवराज चौहान ने शब्दों पर जोर देकर कहा।

सोहनलाल होंठ सिकोड़े, कई बातों तक सोचभरी निगाहों से देवराज चौहान को देखता रहा।

"मेरे ख्याल में उसी वजह के कारण ही महादेव की जान गई।"

"और वो वजह क्या थी?" सोहनलाल ने पूछा।

"अभी इस बारे में कुछ नहीं बता कि महादेव क्या कर रहा था।" देवराज चौहान को होंठ थिथे गये— "लेकिन यह तो पक्के तौर पर तय है कि महादेव किसी बड़े मामले में हाथ दे बैठा था और उस मामले का ताल्लुक किसी ऐसी चीज से था जो तीन सौ दो नम्बर से वास्ता रखती है। क्योंकि गरते वक्त, उसके मुँह से आखिरी शब्द यही निकले थे—तीन सौ दो।"

"यह तीन सौ दो क्या हो सकता है?"

"येने तुम्हें दो बातों के लिये बुलाया है।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या?"

"एक तो यह कि कल महादेव के साथ वो युवती कौन थी। अगर उसके बारे में मालूम हो जाये तो काफी हद तक मामला सुलकर सामने आ सकता है।" देवराज चौहान ने सोचभरे स्वर में कहा।

"यह काम इतना आसान नहीं।" सोहनलाल ने होंठ सिकोड़कर कहा।

"क्यों?"

"यह ठीक है कि मैं उस युवती को देखते ही पहचान लूँगा। लेकिन वो मिलेगी कहाँ? मुम्बई जैसे शहर में अपनी बीबी छो जाये तो उसे नहीं ढूँढा जा सकता। वो तो मेरे लिये बिल्कुल अज्ञान युवती थी। वो नहीं मिलने वाली।"

"उस युवती तक एक ही रास्ते से, पहुंच सकते हो।"

"कैसा रास्ता?"

"महादेव के बारे में जानना शुरू करो कि इन दिनों वो किस काम में था। ऐसे में हो सकता है कि वो युवती कहीं नजर आ जाये। साथ ही साथ ये भी जानने की कोशिश करो कि तीन सौ दो का क्या मतलब है। यह कौन-सा नम्बर है। तीन सौ दो कहकर, महादेव क्या बताना चाहता था।"

सोहनलाल ने सोचभरे अन्दाज में सिर हिलाया।



“कोशिश करता हूँ।”

“मुझे महादेव के हत्यारे के अलावा और किसी चीज में दिलचस्पी नहीं है और तीन सौ दो के बारे में जाने बिना, महादेव के हत्यारे तक नहीं पहुँचा जा सकता।” देवराज चौहान ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा और उठकर वहाँ से सामने नजर आ रहे कमरे की तरफ बढ़ गया।

जब वापस आया तो हाथ में अखबार का छोटा-सा पैकिट था।

“ये पचास हजार रुपये हैं, भागदौड़ में खर्च के लिए। खत्म हो जायें तो और ले लेना।”

“इसकी क्या जरूरत थी।” कहते हुए सोहनलाल ने पैकिट थामा और विदा लेकर बाहर निकल गया।

देवराज चौहान सोचभरे अंदाज में कई पलों तक खड़ा रहा। फिर मन ही मन तय किया कि पहचाने जाने की सोचकर बैठे रहना ठीक नहीं। महादेव के बारे में उसे भी छानबीन करनी चाहिये। इस सोच के साथ ही बाहर निकला और पोर्च में खड़ी कर, बाहर निकालता चला गया।

□□

□□

दस मिनट बाद देवराज चौहान की कार भीड़ वाली सड़क से गुजर रही थी कि तभी देवराज चौहान को महसूस हुआ कि उसके कान के पास से अंगारा, गर्म हवा देता निकला है। दूसरे ही क्षण वो अंगारा विण्डशील्ड में छेद बनाता हुआ बाहर कहीं खो गया।

गोली की आवाज नहीं गूँजी थी।

वो साइलेंसर लगी रिवॉल्वर से फायर था।

उसका निशाना लिया गया था। स्टेयरिंग विण्डों से गोली ने भीतर प्रवेश किया। खिड़की का शीशा पहले से ही नीचे था। देवराज चौहान चौंका। सतर्क हुआ। गर्दन फौरन घूमी और तब तक रिवॉल्वर निकलकर हाथ में आ चुकी थी। एक हाथ स्टेयरिंग पर था।

दायीं तरफ वो काली कार थी।

उसमें पांच आदमी ठूँसे हुए ढंग से बैठे हुए थे। देवराज चौहान को अपनी तरफ देखते पाकर, उनमें से दो ने उसे रिवॉल्वरों की झलक दिखाई।

देवराज चौहान समझ गया कि रिवॉल्वरें उन दो के ही नहीं, अन्यो के पास भी होनी चाहियें। क्योंकि उनके चेहरों से ये जाहिर हो रहा था कि मरना-मारना उनका काम है। लेकिन ये लोग हैं कौन? उसकी जान क्यों लेना चाहते हैं? गोली चलाने वाले का निशाना बढ़िया था।



मामूली सा ही फरक रह गया था उसकी सिर उड़ने में। देवराज चौहान ने उन चेहरों को पहले कभी नहीं देखा था।

देवराज चौहान ने फौरन हिसाब लगाया कि अपनी रिश्तेदार का इस्तेमाल इन लोगों पर करना है तो खाम फायदा नहीं होने वाला। दो तीन को खत्म भी कर देता तो चौथा पावसा अब तक उसका निशाना ले चुका होगा। इसलिए वे अनायास घावों की सूची निम्नलिखित उस पर रहीं।

अगले ही पल देवराज चौहान ने महसूस किया कि अब वो उसका निशाना नहीं ले रहे।

देवराज चौहान ने अपना ध्यान इर्दगिर्द पर लगा दिया। रिश्तेदार गोदी में रख ली। इसके साथ ही घंटों पर बगैरता निग, उनकी हरकतों पर भी निगाह रख रहा था। वो कार उसकी कार के बगैर आने की कोशिश कर रही थी। जाहिर था कि कोई और बात थी। दूसरी गानी उस पर चलानी होती तो अब तक चला चुका होता।

देवराज चौहान ने कार की स्पीड कम की।

उस कार को बगन से पास आने दिया।

देवराज चौहान ने नज़रों से काली कार में बैठे उस पुरुष को चेहरों को देखा।

"अपनी जान की खरिद चाहते हो तो आगे जाकर रुकती जगह मिलन ही, कार रोकें। तुमसे बात करनी है। अगर हमारी बात नहीं मानी तो इस बार गानी तुम्हारे सिर पर नौंगी।" उस कार में से एक ने चिल्लाकर कहा।

देवराज चौहान ने शब्दों को सुना और खामोशी में सिर झिं दिया।

ट्रेडिंक में कार आगे बढ़ती रही। काली कार अब दोरु उससे पीछे हो गई थी। बंक मिर में देवराज चौहान काली कार पर निगाह रखे था। नज़रें सामने भी रहीं। वह इन लोगों के बारे में जानना चाहता था। परन्तु उससे भी ज्यादा जरूरी था इन लोगों से पीछा छुड़ाना। इस वक्त इनका मुकाबला करना ठीक नहीं था।

तभी आगे लाल दली आ गई।

देवराज चौहान ने कार धीमी की। आसपास के अन्य वाहन भी धीमे होने लगे। इसी दौरान उसके और काली कार के बीच एक अन्य कार आ गई थी। इससे बड़ेरा मोका फिर नहीं मिलना था। देवराज चौहान की कार सबसे आगे थी। लान बन्ती पर। सामने अन्य मादड़ का ट्रेडिंक गुजर रहा था। किसी बात की परवाह न















न शिन्दगीभरे स्वर में कहा—“धन तो करना है ही...  
 धन रोह नहीं मकने। बहुत जल्द मैं तुम तक पहुँचाना चाहता हूँ।  
 अपनी सुरक्षा के लिये इस से बढ़िया इन्तजाम नहीं है। मैं तुम्हें  
 एक तुम्हें ये मतलब न रहे कि अपने बचाव में कुछ कर न सको।  
 “मगर अब कि तुम्हें मौत का खौफ नहीं?” कान में पड़ने वाले  
 आवाज़ में ऐसा भाव आ गया था।

“उसी खौफ की तस्वीर तुम्हें दिखा रहा हूँ, जिससे टीक से तुम  
 रुकना नहीं पा रहे। रही बात तीन सौ दो की तो यह आनन्द  
 दक बता देगा कि क्या होता है?”

“मौत का इन्तजाम करो अब—।” इससे मध्य ही दूसरी तरफ  
 से लाईन काट दी गई।

देवगन जमान ने गिलियर रखा। चेहरा कड़ोर हुआ पड़ा था  
 देवगन चौकान जानता था कि ये जो भी है, अब हाथ धोकर रख  
 पीछे पड़ जायेगा। क्योंकि उसके मुह से तीन सौ दो मुनकर, ब  
 दगी तरह बाखला गया है। और वो बही चाहता कि तीन सौ दो के  
 बारे में कोई जान। क्या है ये तीन सौ दो?

देवगन चौकान को लगने लगा जैसे इस तीन सौ दो के बारे में  
 जानना बहुत जरूरी हो गया है। बहरहाल अब सावधानी की जरूरत  
 है। उसे रात में रुकने को भरोसा देखा की जायेगी। और उसे बचना  
 होगा।

□□

□□

जगमोहन जब महादेव के एक कमरे वाले घर पर पहुँचा तो दरवाजा  
 बंद पाया। बाहर ताला लगा हुआ था। स्पष्ट था कि अभी पुलिस महादेव  
 की लाश की शिनायत नहीं कर पाई, वरना पृष्ठाल के लिए पुलिस अ  
 नक यहाँ पहुँची होती। ताल पर अपना ताला भी टोक गई होती।

जगमोहन ने आनवास देखा। गली में दो दरवाजों को छोड़कर  
 तीसरा दरवाजा खुला नजर आया तो जगमोहन वहाँ जा पहुँचा।  
 खुले दरवाजे का धक्का लगा तो वीस बरस का लड़का सामने आया।

“किससे मिलना है?” लड़के के दोहन का लो ही शायद  
 अकड़ था।

“मैं तुम कमरे वाले से मिलने आया था।” जगमोहन ने हाथ से  
 इशारा किया “महादेव नाम है उसका। वहाँ ताला लगा हुआ है।  
 तुम बता सर। तो वह कहा मिलेगा या कब गया था?”

नहीं था। वह भीतर से भीतर ही भीतर (हँस) रहा था।

"बुढ़ापे में मजे तो रहा है।"

"क्या मतलब?"

"बीस तीन चार दिन से मैं तो खुदमूलतः छोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ। दोनों कमर में रहा हूँ, दोनों भावर में रहा हूँ। लेकिन, जानती है नहीं भावूम नथी। कोई साथ रहा आशा रहता हूँ।"

"तुम इतनी नाकाल क्या हो रहे हो?" जगमाहन ने गहरी निराशा से देखा।

"बेल दोपहर को। कोई साथ आगला हो गया था मग।" लड़का उसी ढंग से कहा।

"क्यों?"

"छात्रों के साथ घर में निरुत्तर रहा था तो दादा सा मकड़ कर लिया छोड़ने से। यम, वो माला महारद्व उबल पड़ा, जगमाहन ने जगमाहन हुआ तो। लागा ने बचा दिया चरना बहुत मगर माला का हाथी।"

जगमाहन ने समझने वाले ढंग से सिर हिलाया।

"तीन चार दिन से मवादव उस नदरी के साथ था।"

"हा।" लड़का व्यग्र से बोला— "हद होती है मल मिनाप ही। वो मूला सा बूढ़ा और वो दस का पछाड़न वाली घन्टी। मगर जैसे के साथ होती तो, देखने में तकलीफ नहीं होती।"

"बात तो तुम्हारी सही है।" जगमाहन ने फौरन कहा "उस पुवती का हलिया बनाना।"

"हलिया क्या होता है वो तो बला की खूबसूरत थी।" लड़का अजीब से स्वर में कह रहा— "दादा ने लार टपकती थी। न दादा तो सपनों में आकर, छाती पर दबा और—।"

"लम्बी थी।" जगमाहन ने उसे ख्यालों की दुनिया में वापस निकाला।

"ठीक-ठीक थी। खूबसूरत इतनी कि सामन वान की हाथ हाथ कम देती थी। मग तो कितनी बार हो चुकी है।"

"क्या पटलती थी?"

"कमीन सलवार। लम्बे मिलकी बाल, कंधों तक आकर, लहंगने गहरा था। मुहता बदल। जब मुम्हगती तो गालों में गहरे पद लगे। कानों में टीक्स डाल रखी थी। मन में सोने की चेन। उंची एली क मीटल पहनती थी। लाकून बहुत सादर ढंग से चलती थी। उसे शर्मा खूबसूरती पर तब भी घमण्ड नहीं था।"



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

... ..

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

... ..

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions.  
 2. It also mentions the need for regular audits to ensure compliance with financial regulations.  
 3. Furthermore, it highlights the role of technology in streamlining accounting processes.  
 4. Finally, it concludes by emphasizing the value of transparency and accountability in financial management.

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਰਾਹ ਤੇ ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਫਲ ਦੇ ਬਾਰੇ ਸੋਚੋ -

नहीं।

नवि ।

[illegible]

1. The first part of the text discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions, including sales, purchases, and expenses. It emphasizes that proper record-keeping is essential for determining the correct amount of tax liability.

...  
...  
...

करते हुए कहा ।

“क्यों ?”

— १५ —

आगे बढ़ गया।

आज यह गया।  
 आजकल के लोग इस तरह के काम करते हैं।  
 दिन में एक बार केवल एक बार ही।  
 आजकल के लोग इस तरह के काम करते हैं।  
 आजकल के लोग इस तरह के काम करते हैं।

ਸ੍ਰੀ ਭਗਵੰਤ ਸੇਵਾ ਸਦਾ ਸਾਧਨ ਨਾਮ ਅਧੀਨ ਸੇਵਾ ਸਦਾ

॥ १ ॥ मन्त्रः निम्नं दत्तः । तत्र दत्तः निम्नः वा ॥ १ ॥

५४ हा जन्म जन्मदा फिरे ।

“गन्धर्व अन्न आद्य” - जगन्मन्त्र में सूची है पृष्ठ ।

“नहीं। वल आया था।” पतन करने में लापरवाही में कहा—“गुरु

नहीं है क्या?"

“दोनों तो अस्मर घर ही मिलकर थे। अब तो हवा में उड़ गए हैं। दोनों के साथ।” पानरत्न मन्दमन्दा।

जगन्मोहन सिंह मिश्रदेवर मन्मथदास ।







[illegible]

2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729 2730 2731 2732 2733 2734 2735 2736 2737 2738 2739 2740 2741 2742 2743 2744 2745 2746 2747 2748 2749 2750 2751 2752 2753 2754 2755 2756 2757 2758 2759 2760 2761 2762 2763 2764 2765 2766 2767 2768 2769 2770 2771 2772 2773 2774 2775 2776 2777 2778 2779 2780 2781 2782 2783 2784 2785 2786 2787 2788 2789 2790 2791 2792 2793 2794 2795 2796 2797 2798 2799 2800 2801 2802 2803 2804 2805 2806 2807 2808 2809 2810 2811 2812 2813 2814 2815 2816 2817 2818

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 1, 1861. It is a formal communication, and it is written in a very formal style. The President is addressing the Congress, and he is talking about the state of the Union. He is talking about the progress of the country, and he is talking about the challenges that the country is facing. He is also talking about the role of the President, and he is talking about the responsibilities of the Congress. The letter is very long, and it covers a wide range of topics. It is a very important document, and it is one of the most famous letters in American history.



一、政治：政治是经济的集中表现，政治对经济有反作用。政治的进步或落后，对经济的发展起着促进或阻碍的作用。政治的进步或落后，对经济的发展起着促进或阻碍的作用。政治的进步或落后，对经济的发展起着促进或阻碍的作用。

[illegible]

१. संस्कृत २. हिन्दी ३. उर्दू ४. अंग्रेजी ५. बंगाली ६. मराठी ७. गुजराती ८. तमिल ९. तेलुगु १०. कन्नड़ ११. मलयालम १२. सिन्धी १३. पंजाबी १४. संथाली १५. कोची १६. मणिपुरी १७. नेपाली १८. बोडो १९. डोग्री २०. सिक्किम २१. असमिया २२. ओड़िया २३. मैथिली २४. ब्रज २५. वज्जी २६. मगधी २७. सौराष्ट्री २८. गुजराती २९. मराठी ३०. तमिल ३१. तेलुगु ३२. कन्नड़ ३३. मलयालम ३४. सिन्धी ३५. पंजाबी ३६. संथाली ३७. कोची ३८. मणिपुरी ३९. नेपाली ४०. बोडो ४१. डोग्री ४२. सिक्किम ४३. असमिया ४४. ओड़िया ४५. मैथिली ४६. ब्रज ४७. वज्जी ४८. मगधी ४९. सौराष्ट्री ५०. गुजराती ५१. मराठी ५२. तमिल ५३. तेलुगु ५४. कन्नड़ ५५. मलयालम ५६. सिन्धी ५७. पंजाबी ५८. संथाली ५९. कोची ६०. मणिपुरी ६१. नेपाली ६२. बोडो ६३. डोग्री ६४. सिक्किम ६५. असमिया ६६. ओड़िया ६७. मैथिली ६८. ब्रज ६९. वज्जी ७०. मगधी ७१. सौराष्ट्री ७२. गुजराती ७३. मराठी ७४. तमिल ७५. तेलुगु ७६. कन्नड़ ७७. मलयालम ७८. सिन्धी ७९. पंजाबी ८०. संथाली ८१. कोची ८२. मणिपुरी ८३. नेपाली ८४. बोडो ८५. डोग्री ८६. सिक्किम ८७. असमिया ८८. ओड़िया ८९. मैथिली ९०. ब्रज ९१. वज्जी ९२. मगधी ९३. सौराष्ट्री ९४. गुजराती ९५. मराठी ९६. तमिल ९७. तेलुगु ९८. कन्नड़ ९९. मलयालम १००. सिन्धी १०१. पंजाबी १०२. संथाली १०३. कोची १०४. मणिपुरी १०५. नेपाली १०६. बोडो १०७. डोग्री १०८. सिक्किम १०९. असमिया ११०. ओड़िया १११. मैथिली ११२. ब्रज ११३. वज्जी ११४. मगधी ११५. सौराष्ट्री ११६. गुजराती ११७. मराठी ११८. तमिल ११९. तेलुगु १२०. कन्नड़ १२१. मलयालम १२२. सिन्धी १२३. पंजाबी १२४. संथाली १२५. कोची १२६. मणिपुरी १२७. नेपाली १२८. बोडो १२९. डोग्री १३०. सिक्किम १३१. असमिया १३२. ओड़िया १३३. मैथिली १३४. ब्रज १३५. वज्जी १३६. मगधी १३७. सौराष्ट्री १३८. गुजराती १३९. मराठी १४०. तमिल १४१. तेलुगु १४२. कन्नड़ १४३. मलयालम १४४. सिन्धी १४५. पंजाबी १४६. संथाली १४७. कोची १४८. मणिपुरी १४९. नेपाली १५०. बोडो १५१. डोग्री १५२. सिक्किम १५३. असमिया १५४. ओड़िया १५५. मैथिली १५६. ब्रज १५७. वज्जी १५८. मगधी १५९. सौराष्ट्री १६०. गुजराती १६१. मराठी १६२. तमिल १६३. तेलुगु १६४. कन्नड़ १६५. मलयालम १६६. सिन्धी १६७. पंजाबी १६८. संथाली १६९. कोची १७०. मणिपुरी १७१. नेपाली १७२. बोडो १७३. डोग्री १७४. सिक्किम १७५. असमिया १७६. ओड़िया १७७. मैथिली १७८. ब्रज १७९. वज्जी १८०. मगधी १८१. सौराष्ट्री १८२. गुजराती १८३. मराठी १८४. तमिल १८५. तेलुगु १८६. कन्नड़ १८७. मलयालम १८८. सिन्धी १८९. पंजाबी १९०. संथाली १९१. कोची १९२. मणिपुरी १९३. नेपाली १९४. बोडो १९५. डोग्री १९६. सिक्किम १९७. असमिया १९८. ओड़िया १९९. मैथिली २००. ब्रज २०१. वज्जी २०२. मगधी २०३. सौराष्ट्री २०४. गुजराती २०५. मराठी २०६. तमिल २०७. तेलुगु २०८. कन्नड़ २०९. मलयालम २१०. सिन्धी २११. पंजाबी २१२. संथाली २१३. कोची २१४. मणिपुरी २१५. नेपाली २१६. बोडो २१७. डोग्री २१८. सिक्किम २१९. असमिया २२०. ओड़िया २२१. मैथिली २२२. ब्रज २२३. वज्जी २२४. मगधी २२५. सौराष्ट्री २२६. गुजराती २२७. मराठी २२८. तमिल २२९. तेलुगु २३०. कन्नड़ २३१. मलयालम २३२. सिन्धी २३३. पंजाबी २३४. संथाली २३५. कोची २३६. मणिपुरी २३७. नेपाली २३८. बोडो २३९. डोग्री २४०. सिक्किम २४१. असमिया २

[illegible]

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions.  
 2. It also mentions the need for regular audits to ensure compliance with financial regulations.  
 3. Furthermore, it highlights the role of technology in streamlining accounting processes.  
 4. Finally, it emphasizes the importance of transparency and accountability in financial reporting.

8-1 5-8 1-2 3-4 7-8 1-3 4-5 6-7 8-9 10-11 12-13 14-15 16-17 18-19 20-21 22-23 24-25 26-27 28-29 30-31 32-33 34-35 36-37 38-39 40-41 42-43 44-45 46-47 48-49 50-51 52-53 54-55 56-57 58-59 60-61 62-63 64-65 66-67 68-69 70-71 72-73 74-75 76-77 78-79 80-81 82-83 84-85 86-87 88-89 90-91 92-93 94-95 96-97 98-99 100-101 102-103 104-105 106-107 108-109 110-111 112-113 114-115 116-117 118-119 120-121 122-123 124-125 126-127 128-129 130-131 132-133 134-135 136-137 138-139 140-141 142-143 144-145 146-147 148-149 150-151 152-153 154-155 156-157 158-159 160-161 162-163 164-165 166-167 168-169 170-171 172-173 174-175 176-177 178-179 180-181 182-183 184-185 186-187 188-189 190-191 192-193 194-195 196-197 198-199 200-201 202-203 204-205 206-207 208-209 210-211 212-213 214-215 216-217 218-219 220-221 222-223 224-225 226-227 228-229 230-231 232-233 234-235 236-237 238-239 240-241 242-243 244-245 246-247 248-249 250-251 252-253 254-255 256-257 258-259 260-261 262-263 264-265 266-267 268-269 270-271 272-273 274-275 276-277 278-279 280-281 282-283 284-285 286-287 288-289 290-291 292-293 294-295 296-297 298-299 300-301 302-303 304-305 306-307 308-309 310-311 312-313 314-315 316-317 318-319 320-321 322-323 324-325 326-327 328-329 330-331 332-333 334-335 336-337 338-339 340-341 342-343 344-345 346-347 348-349 350-351 352-353 354-355 356-357 358-359 360-361 362-363 364-365 366-367 368-369 370-371 372-373 374-375 376-377 378-379 380-381 382-383 384-385 386-387 388-389 390-391 392-393 394-395 396-397 398-399 400-401 402-403 404-405 406-407 408-409 410-411 412-413 414-415 416-417 418-419 420-421 422-423 424-425 426-427 428-429 430-431 432-433 434-435 436-437 438-439 440-441 442-443 444-445 446-447 448-449 450-451 452-453 454-455 456-457 458-459 460-461 462-463 464-465 466-467 468-469 470-471 472-473 474-475 476-477 478-479 480-481 482-483 484-485 486-487 488-489 490-491 492-493 494-495 496-497 498-499 500-501 502-503 504-505 506-507 508-509 510-511 512-513 514-515 516-517 518-519 520-521 522-523 524-525 526-527 528-529 530-531 532-533 534-535 536-537 538-539 540-541 542-543 544-545 546-547 548-549 550-551 552-553 554-555 556-557 558-559 560-561 562-563 564-565 566-567 568-569 570-571 572-573 574-575 576-577 578-579 580-581 582-583 584-585 586-587 588-589 590-591 592-593 594-595 596-597 598-599 600-601 602-603 604-605 606-607 608-609 610-611 612-613 614-615 616-617 618-619 620-621 622-623 624-625 626-627 628-629 630-631 632-633 634-635 636-637 638-639 640-641 642-643 644-645 646-647 648-649 650-651 652-653 654-655 656-657 658-659 660-661 662-663 664-665 666-667 668-669 670-671 672-673 674-675 676-677 678-679 680-681 682-683 684-685 686-687 688-689 690-691 692-693 694-695 696-697 698-699 700-701 702-703 704-705 706-707 708-709 710-711 712-713 714-715 716-717 718-719 720-721 722-723 724-725 726-727 728-729 730-731 732-733 734-735 736-737 738-739 740-741 742-743 744-745 746-747 748-749 750-751 752-753 754-755 756-757 758-759 760-761 762-763 764-765 766-767 768-769 770-771 772-773 774-775 776-777 778-779 780-781 782-783 784-785 786-787 788-789 790-791 792-793 794-795 796-797 798-799 800-801 802-803 804-805 806-807 808-809 810-811 812-813 814-815 816-817 818-819 820-821 822-823 824-825 826-827 828-829 830-831 832-833 834-835 836-837 838-839 840-841 842-843 844-845 846-847 848-849 850-851 852-853 854-855 856-857 858-859 860-861 862-863 864-865 866-867 868-869 870-871 872-873 874-875 876-877 878-879 880-881 882-883 884-885 886-887 888-889 890-891 892-893 894-895 896-897 898-899 900-901 902-903 904-905 906-907 908-909 910-911 912-913 914-915 916-917 918-919 920-921 922-923 924-925 926-927 928-929 930-931 932-933 934-935 936-937 938-939 940-941 942-943 944-945 946-947 948-949 950-951 952-953 954-955 956-957 958-959 960-961 962-963 964-965 966-967 968-969 970-971 972-973 974-975 976-977 978-979 980-981 982-983 984-985 986-987 988-989 990-991 992-993 994-995 996-997 998-999 1000-1001 1002-1003 1004-1005 1006-1007 1008-1009 1010-1011 1012-1013 1014-1015 1016-1017 1018-1019 1020-1021 1022-1023 1024-1025 1026-1027 1028-1029 1030-1031 1032-1033 1034-1035 1036-



बाला "तब तब न उठता फिर भी गयी हुई थी। जगमगन न  
—क उठने की कोशिश में उठे और कुछ धरती लगा।

उठे "मामू, एक दोस्त गुप्त है वरना तो जगमगन न उठता,

"मामू, क्या कर रहा रहता है।" सनन ही "सं?"

पुनः दृष्टि पान करने न गयी निगली म उठे दृष्टि।

**"क्या काम है उससे?"**

"पहला है " जगमगन समझ गया कि जो सननकर का  
काम है।

"क्या काम है? काम न तो म चले बाला," पानकर हीम  
स्वर में बोला।

जगमगन न उठे "मामू, मैं दृष्टि।

**"क्यों?"**

"मामू, पान न तो लगाना पान न तो जगमगन के जगमगन  
म चले और म जगमगन म भुनकर उठ गया। पान का नहीं पना।  
पान उठने उठने है। जगमगन मगन न तो जगमगन ही था,"

"मामू, मैंने लगे दृष्टि कर आये हैं।"

"मामू, पान पर पान मगन के लगाने भाव है और पान म म  
दृष्टि मगन मगमगन अपन म अपन पानी म पान पान  
है म म मगन मगन मगन का पान म लगे कही कही नती  
पना। म म मगमगन के जगमगन म पान है। वहा जगमगन  
म म भावना भी पानकर दिना लग।"

जगमगन समझ गया कि मामला गहरा होता जा रहा है। उन  
मगमगन और उमर मगन की लगे मगन जगमगन म पान है,  
जगमगन के मगमगन म पान पान मगमगन का भाव मगन।  
जगमगन मगमगन की गली लग चले पान घण्टे हो चुके हैं।

तो क्या जगमगन का इसलिये मगन मगन कि मगमगन की म  
लड़की उससे मिले थे?

"जगमगन मगन मगन मगन था।"

"बाला तो, मगमगन था मगन, मगमगन की मगन म मगन  
मगन काम करता था।"

जगमगन का वह मगमगन मगन कि पान पान म पान मगन मगन  
काम की मगन मगन मगमगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन  
मगन मगमगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन  
मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन मगन

कर्मचारी का पत्र-कागज की सील पर लिखें। पत्र कागज का सील पर लिखें।  
बंद कर दें।

साथ ही बदकी कीन दी।

00

00

[illegible][illegible]

... ..

रामायण २०

[illegible]

५२४

• 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

भी कर सकते हैं - १

[illegible]

ममता : "अब यह सारा समय पा रहा हूँ कि अब इस  
समय में आने क्या करूँ?"

१. १९४७-४८ में भारत सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में  
 २. १९४८-४९ में भारत सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में  
 ३. १९४९-५० में भारत सरकार ने शिक्षा क्षेत्र में

1.  $\frac{1}{x^2} = x^{-2}$   
 $\frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$



...परी बहुरी थी। ...

... नदी ...

...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...

ने तिमोथर रुठ दिया ।

00

[illegible][illegible]

६-२ क री त कृत्य दत्ता फल मय ।

— २२३ —

एक सप्ताह का समय देना है। जिस पर विचार किया जाता है।  
हम जानते हैं कि यह समय है जिसका है। दूसरी  
पक्ष है। मैं जानूँ कि यह विचार है। न. क. क. क.  
मार्ग पर है। दूसरी विचार है। दूसरी है। दूसरी है।  
दूसरी है। दूसरी है। दूसरी है।

राज्य की सेवा हो सक रही हो

मन्त्रः । ॐ मन्त्राय नमो ह्रीं पद्मे श्रीं, तेने उक्तेने पहने दाया या





[illegible][illegible]

“साद्वैत साधना” में आचार्य बताता है, “मन्त्रों का उपयोग करना”  
साधना का एक प्रकार है जो शिवाचारों में से एक है। यह एक प्रकार का  
साधना है जो धर्म के दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

अगस्त्यः पुनः नमः सौ गुणः ॥ १ ॥ अगस्त्यः पुनः  
मः ॥ अगस्त्यः पुनः ॥ अगस्त्यः पुनः ॥ अगस्त्यः पुनः ॥  
॥ अगस्त्यः पुनः ॥ अगस्त्यः पुनः ॥ अगस्त्यः पुनः ॥

• इसी धृती से या तो जलन की साथ रहनी थी, या १२२  
पूरा ही १२२ में ही, या पचाना उ ही से था। और जो  
जलन १२२ जलन की है, जो मुझ से जलन १२२ से मुझ  
से लम्बी है या पूरा का काट्ट मुझ ही से था। जिसे भी  
मरना है या १२२ काट्ट और भी ।

अवगाहन की वषा, उसे घायला करती जा रही है। घायल, भारी जा चुका है, जो उस घायल को न बर्बाद कर रहा है। उसका चेहरा लाल बना हुआ है। उसी में तीन सौ दो नब्बे के वार में जानना आसान नहीं है जो इस बीज का नम्बर है। अगर जो पुराना घायल बाढ़ को शरीर सारे घायली को तबाल घिब न पड़े

जगन्नाथन कृत धी नैरा श्री गणेशाय नमः  
भक्त्यै नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः  
श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

□□  
 □□  
 सोमनाथ मंदिर का नाम है । इस मंदिर का नाम है ।  
 इस मंदिर का नाम है । इस मंदिर का नाम है ।  
 इस मंदिर का नाम है । इस मंदिर का नाम है ।  
 इस मंदिर का नाम है । इस मंदिर का नाम है ।  
 इस मंदिर का नाम है । इस मंदिर का नाम है ।

[illegible]

[illegible]

... ..

... ..

... ..

- + .9 77-1 1-7 1. 27 I F+I 1

... ..

[illegible][illegible]

4 2 1

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

... ..

... शब्द ध्वनि की भाँगी में शांति का है।"

१५ अथवा १६

१. जनरल घा. गा. रंगा. १

... १०० ...

“॥ अन्तः । जहा दिवाग कुभी लान नही होता ।”

• **Figure 1**

जहाज नम्बर 302-32



मुस्कुराया।

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

“तब तो मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो।”

सुखसूख तो छोड़ती ऊँह साध दी। मैं तो ऊँह साध दी।  
देखकर हक्क-बक्का रह गया। मैं तो ऊँह साध दी।  
पूरी बोंबन लेकर उल्टे पाव चला गया। पूरा हाँ हक्क-बक्का  
चुके हैं। आज कल सारा सारा है। दने का नाम भी नहीं।  
दिन माने की गदन पकड़नी पड़ेगी। शक का विश्वास भी नहीं  
होता है।” लाला ने मुँह बिखरवाया।

सोहनलाल ने लाला को धुँकर देया।

“उसके साथ छोड़री दी। जो भी सुखसूख—”

“हां।”

“दीमाय तो नहीं सुख हो गया होगा। महादेव लाला के  
लायक है। उसकी हानत...।”

“वो भी नहीं जानता कि छोड़री का क्या करना होगा। लेकिन  
उसके साथ छोड़री दी।” लाला ने उसकी बात कटोटी।

“हुनिया बता।”

“किसका?”

“छोड़री का बतावेगा। महादेव का तो नहीं पूछ रहा।” सोहनलाल

की निगाह लाला पर पड़ी।

लाला ने छोड़री का हुनिया बताया।

सोहनलाल को वास्तव में हैरानी हुई कि ऐसी युवती महादेव

के साथ। जबकि वो महादेव की आदत को अच्छी तरह जानक था  
औरतों में उसकी दिलचस्पी न के बराबर थी।

“आजकल महादेव के रंग-रंग टीक नहीं लग रहे।” लाला ने कहा।

"नहीं - और क्या किया है उसने?"

"महाराज है कि उसकी आदमी सिगरेट चुली है।" लागा

पुनः बोला - ।

"आगे तो धीरे - ।"

"पागल दिन पढ़ने अमरम सान का आदमी भाया था।

तब महादेव यहाँ बैठा दाऊ पी - ।"

"अमरम सान - वो साना नशे का घ में बैठने वाला "

सोहननाल ने टोका।

"जानता है।"

"हा। पढ़ने उसी से सिगरेट के सिगरेट गोरी से था। लेकिन वो हाथी भाव से लगे लागा था। मैंने उससे माफ़ लेना छोड़ दिया। उसका पार है रात रुपया देने देना है। और फिर क्या हुआ?"

"उसका आदमी आया। महादेव से बिना, दो मिनट तक दोनों ने घुंघुट कर बाने की फिर महादेव दाऊ की बागल बगल में दबकर उससे सलाम किया गया। लगता है महादेव ने नशा करना शुरू कर दिया है जो - ।"

"नहीं। महादेव शराब के प्रत्याश और गुप्त नहीं लेता था।" सोहननाल ने विस्मयसम्भरे स्वर में कहा।

"नहीं लेता था। हाँ तो सततवत।" लागा ने सीधे सीधे सोहननाल को देखा।

"नहीं रहा वो अब।" सोहननाल ने गहरी सांस ली।

"महाराज।"

"महाराज ने कहा। गोरी पार दी आज दिन में उसे किसी ने।"

लागा ने दोरी पर अजीब से भाव रक्खे।

"मुझे तो विश्वास नहीं था। महादेव को किसी ने पार दिया। भयानक कहा था।" लागा ने फिर विस्मय से कहा - "मैं तो चाहते ही कम पढ़ था महादेव की कहानी बगल नहीं है। अमरम सान नशेवाला मान ही कबले का पछा नहीं करता और भी कई अन्य घुंघुटे काय कोला है। महादेव को उससे बचक नहीं रहना चाहिये था।"

सोहननाल ने लागे को लकी सिगरेट का कल किया।

"कल घुंघुट पढ़ा कल पढ़ा महादेव।"

"नहीं।"

"कल कलें एक साथ घ घल कि मु। महादेव को कल उमड़े का है कलें घुंघुट पढ़ा पढ़ा है।"



“कह-”

“यही तो कुछ नहीं होता। जैसे वो तेरा दामन था न •

“दामन नहीं, जानकार-”

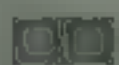
“एक ही बात है। मरने के बाद, उसी आत्मा को शरीर पहनाना चाहता है तो कुछ कहूँ।” लाला ने कहा।

“कह-”

“उसका उधार चुका दे। तब वो पैर त मरग में रह जाएगा।  
बोल, खाता खीनू उसका-”

सोहनलाल ने नीली निगाहों में लाला को देखा।

“तुम्हें को शायद पता नहीं कि मरग में मरतुड़ ही चिड़ी अड़ है। वहाँ उसकी आत्मा को घेन मिल चुका है और मरगलाल ने उसने निगा है कि लाला को मरग में मरग कहना।” मरग के साथ ही सोहनलाल वहाँ से हिरा और बाहर ही तरफ बढ़ता चला गया। साचों में असमय खान था। मरगलाल का और उसका कोई मेल नहीं था।



सोहनलाल, असमय खान के उस छिकाने पर पहुँचा, जहाँ से हर तरफ का नशा मिलता था। बहुत बाद सोहनलाल वहाँ आया था। असमय खान से गोली लेनी उसने कब करी छोड़ रखी थी।

कई नया ही बदा उसे वहाँ न 12 आया।

“क्या चाहिये?” सोहनलाल की भीतर आने देखा वो ब 12 था।

“असमय खान कहाँ है?”

“क्या, तू को क्या काम पड़ गया उसमें? पहले कभी नहीं देखा तू को।” उसके बावें पर बस पड़े।

“पहले तूने इन्होंने नहीं देखा कि पहले तू गया नहीं था। समझा क्या।” सोहनलाल ने उसकी “कह करके तू कर-” असमय खान का बाल सोहनलाल आता है।”

“सोहनलाल-”

“हाँ, वो मरगलाल का बाल।”

सोहनलाल का दूराव वो पीछे लगे दामन में चला गया।  
दूराव ही मिलता होता।

“हाँ, वो तूने इन्होंने कर रहा है। शिवाय वो कर रहा है-”

“कह कर-” वहाँ तूने न 12 कभी ही ही कर रहा था। तू

अपनी झुपड़ी पर लगा रहा।" कहने के साथ ही सोहनलाल पीछे से दरवाजे में प्रवेश कर गया।

तीन-चार कमरा का पार करने के बाद वो, वही दिन जिस आदमी से कमरा में पड़ा था। वो जगह किसी ऑफिस की तरह लग रही थी वहां बैठा पश्चिम पश्चिम धूप फैलने लगी, हाथ में पत्र धाम हिमाचल लगाने में व्यस्त था। उसने धीरे से स्पष्ट लग रहा था कि वो बड़ा धिसा हुआ इन्सान था।

उसने एक निगाह सोहनलाल पर डाली फिर अपने काम में व्यस्त होना हुआ बोला।

"आ। बैठ सोहनलाल—।"

"कैसे हो अमलम खान?" सोहनलाल बैठने हुए बोला।

"ठीक हू। तब से चार हजार रुपया लेना है।" अमलम खान अपने काम में व्यस्त बोला।

"मिल जायेगा। मैं भागा नहीं जा रहा।"

"दो साल पहले भी तूने यही कहा था।"

"वो अब भी कह रहा हूं।"

"कहने कहने एक दिन भर जायेगा लेकिन मेरा चार हजार नहीं देगा। जल्दी देना।"

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

"अब तू मेरे से गोली भी नहीं लेता। श्याम के यहाँ से मान लेता है ना?"

"वो शायद ठीक लगाता है।"

"मैं भी ठीक लगा दूंगा। यहाँ से ले जाया कर।" कहते हुए वो अभी भी हिमाचल लगाने में उलझा था।

सोहनलाल ने कड़ा लिया।

"बोल क्यों आया?"

"तूने शुरु के बार में, अपना आदमी भेजकर, दफ्तर को बुलाया था।" सोहनलाल की निगाह उस पर जा गिरी।

अमलम खान की निगाह फाइल में उठकर सोहनलाल पर लग गई।

"एक छ दिन भी गये इस बात को। आज तू क्यों पूछने आया?"

"बग़रब से काम है। वो मिल नहीं रहा।" सोहनलाल बोला -

"उसके बारे में शुरु के दफ्तरवाले में पूछने गया तो लाला ने बताया, मुझसे आदमी उसे ले गया था।"



“हा। वो जया था। लेकिन मैं उसे बच नहीं गया। हांग  
करी। दू दे ले।”

“दू दे। नहीं मिला।”

“मिल जायगा। मैंने उसे कोई काम दिखाया था। वो उसमें  
ब्यस्त होगा। एक-दो दिन में नजर आ जायगा।”

“क्या काम बताया था?”

असलम खान ने पैर फाड़ल में रख दिया।

“वो तोर जानन का नहीं है। महादेव बताय तो उसमें पूछ लेना -।”

असलम खान बात समाप्त करने वाले ढंग से बाग।

“वो नहीं बतायेगा।” सोहनलाल ने गिर दिखाया।

“तेरी खाम पहचान बाग है वो। नहीं बतायेगा ना तुम जानो।”

असलम खान ने गहरी निगाही से सोहनलाल की दस्त - “महादेव  
के लिये तू इतना क्यों तड़प रहा है। मुझे पता तो उसे, तोर बाग में  
बोल दूंगा।”

“तोरे को भी नहीं मिलेगा।” सोहनलाल ने पुन गिर दिखाया।

असलम खान की आंखें सिकुड़ीं।

“बात क्या है। खुजकर बाग।”

“महादेव को आज किसी ने गोली मार दी है। वो मर गया  
है।” सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

असलम खान के चेहरे पर अजीब-से भाव रहे।

“महादेव को गोली मार दी। वो मर गया।” असलम खान की  
आंख में अविश्वास था।

“वो उसी काम की वजह से मरा है, जो तुमने उसे दिखाया  
था।” सोहनलाल ने तुरन्त मारा।

“लेकिन वो काम मरने मारने वाला नहीं था। उस काम में  
गोली चलने की कोई गुनाइश ही नहीं थी।”

“क्या था वो काम?”

“तू क्या करेगा जानकर। महादेव मर गया तो बात खत्म।”  
असलम खान ने गहरी सांस ली।

“तोरे को मालूम है महादेव ने देवराज चौहान की बागो में दम  
तोड़ा।” सोहनलाल ने उसे घूरा।

“क्या?”

“जब महादेव को गोली लगी तो देवराज चौहान से वो बात  
कर रहा था।”

असलम खान सनक-सा दिखने लगा।

“वा, देवराज चौहान को कुछ बनाना चाहता था। बात करना चाहता था। लेकिन उससे पहले ही उसे शूट कर दिया गया। अब देवराज चौहान जानना चाहता है कि महादेव क्या काम कर रहा था। मेरी बात पर यकीन नहीं तो फोन लगाऊ देवराज चौहान को।” साहनलाल ने फोन की तरफ हाथ बढ़ाया—“मेरे से बात करना तेरे को सस्ता पड़ेगा। देवराज चौहान से तूने सीधी बात की तो शायद तेरे लिए सौदा महंगा हो जाये।”

असलम खान ने साहनलाल को रिसीवर नहीं उठाने दिया।

“बात मन बढ़ा। यान कुछ भी नहीं है।”

“जो जो बात कुछ भी नहीं है। वो ही मैं जानना चाहता हूँ तूने महादेव को क्या काम दिलवाया?”

असलम खान ने हाट सिकोड़कर दो पल के तुरे सोचा।

उसे देखते साहनलाल ने सिग्रेट सुनगाई।

“कहा गोली मारी?”

“माहिम रेलवे स्टेशन के सामने।”

“हो सकता है, पुरानी रजिश का मामला हो। मेरे दिनाये काम की वजह से वो न मरा हो।”

“ये बात बाद में तय हो जायेगी। तू बात कर।”

“मेरे पहवान वाले आदमी ने बताया कि, एक युवती को किसी ऐसे आदमी की जरूरत है, जो मुम्बई बन्दरगाह के बारे में जानकारी रखता हो और गोंताखोर भी हो। इसके लिये वह लाख रुपया दे सकती है। एक-दो दिन का काम।” महादेव का ध्यान आया। कभी वो, जयानी के बक्त मुम्बई बन्दरगाह पर ही कोई काम करना था और गोंताखारी भी जानता है। मैं जानता था कि महादेव को पैसे की जरूरत है। वो बीमार है। मैंने उसे और युवती को मिला दिया। बस यही काम किया था मैंने। उसके बाद मुझे उन दोनों की कोई खबर नहीं।”

“सब कह रहा है?”

“इस मामले में देवराज चौहान है तो मैं शूट नहीं बोल सकता।” असलम खान ने गम्भीर स्वर में कहा।

“क्या नाम था उस युवती का?”

“अनिता गोस्वामी।”

“उसका पता?”

“पता तो - ।” कहते रहते अमनम खान फिर टेबल का ड्रायर खोलने हुए बोला - “तब की पहली बार मुझे किसी की तो उसने अपना कांड दिया था। वो शायद यहीं पुराना।” कहने के साथ ही ड्रायर से कांड निकालकर साहनलाल की तरफ बढ़ाया - “यह अनिता गोस्वामी का पता है।”

साहनलाल ने कांड लेकर देखा। उस पर अनिता गोस्वामी का नाम और पता लिखा था।

“य अनिता गोस्वामी तेरे से किसी बार मिली?”

“दो बार। पहली बार मेरा आदमी इन्ने लेकर मेरे पास आया था। दूसरी बार तब, जब महादेव को मैंने इसके साथ दिया था। दोनों बार वो यहीं आई थी।” अमनम खान ने बताया।

“अनिता गोस्वामी ने बताया नहीं कि मुम्बई बन्दरगाह पर उसे क्या काम है?”

“नहीं।”

“तुम्हने पूछा था?”

“नहीं, लेकिन उसने इस बात का जवाब नहीं दिया और मैंने भी दोबारा पूछने की जरूरत नहीं समझी।”

“अनिता गोस्वामी की कोई तस्वीर है तुम्हारे पास?”

“मेरे पास उसकी तस्वीर का क्या काम - ।”

“इस मामले में कोई और बात बताने वाली?”

“नहीं।” अमनम खान ने फिर हिलाया - “जो बात थी। मैंने सब-सब बता दी। मुझे तो अभी भी यकीन नहीं आ रहा कि महादेव इस मामले की वजह से मरा होगा। वो कोई पुराना दुश्मन - ।”

“तू इस बारे में अपना दिमाग मत लगा।” सोहनलाल अनिता गोस्वामी के कांड को देखता हुआ बोला - “भूल जा इस सारी बात को। देवराज चौहान का नाम तो इस मामले में आना ही नहीं चाहिये।”

“यें किसी से जिक्र नहीं करूंगा।”

“मुझे मानूम है तू समझदार है।” सोहनलाल उठ खड़ा हुआ।

“देवराज चौहान को मेरा सन्नाम बोलना।”

“फिक्र नई कर। मेरे पैर बोल दिया। समझ देवराज चौहान को बोल दिया।” सोहनलाल जान लगा।

“वो मेरा चार हजार रुपये - ।”

“दे दूंगा। भाग तो नहीं जा रहा।” कहने के साथ ही सोहनलाल बाहर निकल गया।



जगमोहन ने जो बातें जगद पर निम्न पते पर पहुंचा। जो आज सा,  
 १२५ मकान था। प्रवेश द्वार पर अनेक मास्वामी की पंक्तियाँ  
 लगी थीं। जगमोहन ने देखा कि भगवान् के साथ जो युवती थी, वो वहीं  
 खड़ी थी। उसका नाम अनेक मास्वामी था। जो कि गिरिगिरि  
 कई पर लिखा था।

जगमोहन जो न सा गिरिगिरि भीतर प्रवेश कर गया और  
 बगमः में पहुँचकर बैठ बैठा।

उस दिन बार दिन न होने पर भी जब जगद नहीं मिला तो,  
 जगमोहन ने लगा प्रेम घर में रुक नहीं है। उसने भागपास देखा।  
 जगमोहन पर मकान था। सड़क पर से टाँक रुक गया था।  
 जगमोहन भी वहीं रुक गया। न ही कि...  
 इन बातें दिखाई दी।

जगमोहन ने जगद में भागकर 'जी' निम्न की ओर मास्वामी से  
 'ह' हाल में फंसा। जगमोहन ने ही देखा जाने लगा। जगमोहन  
 पर वो भरपूर काँशिश के बाद भी जो लौक नही खोल पाया।  
 जगमोहन समझ गया कि दरवाजे में रुक गया किम्बत लौक  
 है जो आसानी से नहीं खुलेगा। जगमोहन रुक थी। उन पर दिन  
 नहीं रुक थी। याने कि भीतर जगद का रुक रुक नहीं था।

जगमोहन के बीच ही लौक से, भीतर प्रवेश करने का  
 लौक मिला। वह सावधान जगमोहन पकड़ा ही था कि रुक गया।  
 मकान के बाहर, उसके कार के पास, साहबजान की कार जो  
 उसने रुकने पाया तो धरों पर असीब से भाव आ गए।

साहबजान और वहा :

साहबजान ने कार से निकलकर, मकान पर नजर मारी। जो  
 जगमोहन को वहा पकड़ उसे भी हैरानी हुई। वो आगे बढ़ा और  
 गेट पर रुक के जगमोहन के पास आ पहुँचा।

जगमोहन उसे घूर रहा था।

"तुम यहा क्या कर रहे हो?" साहबजान ने मुँह बनाकर पूछा।

"यही मकान मैं तुमसे करने वाला था।" जगमोहन के होठ  
 'सुनो'।

"ये तो वहा आका रहता है।" साहबजान ने जगमोहन से कहा।  
 "क्यों?"

“यहाँ से” कहता था “है।”

“अनित्य” कहता था “काल” ने जो भी गीत गाया “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है।”

जो न सुनता वह भी भाव भरा प्यारी है “काल” ने

आपने न कहा था “है।”

“नो” उसी ही गीत। धन्य है “है” जो भी “है” ही “है।”

सादर-सादर हीन से कहता।

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

है। “काल” ने हीन से कहा “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

सादर-सादर हीन से कहता।

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

हीन कहता है। “काल” ने हीन से कहा “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है।”

“हो”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

सादर-सादर हीन से कहता।

“हो” वह हीन कहता था “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

कहा था “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

सादर-सादर हीन से कहता।

“हो”

“हो” वह हीन कहता था “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

“हो” वह हीन कहता था “है” जो भी “है” ही “है।”

“आपने चाँच पाँच दिनों में निम्न लक्ष्य की कसौटी पर १०००  
मार्क में पूरा किया। निम्न पर गहरा ध्यान पड़ा।”

“साधारण कर्म विना?”

“जगदीश के घर पर।”

“क्या है, जिसका घर घर हो। वो जगदीश के साथ जगदीश  
महा प्रभु की जैसे कर्मों में क्या रह रही थी?”

“जैसे ही वो मनुष्य घर गयी वो घर है। मुझे तो उसमें मुक्ति  
में घर का दिशा का ड थिरा था।” जगदीश ने बोला।

“क्या है, वो मनुष्य हुआ।” सोहनलाल बोला। “अब भी घर  
की क्या परीक्षा है?”

“इस का प्रभाव नहीं मिल रहा और मास्टर ‘की’ से दरवाजा  
को नहीं खोल पा रहा।” जगदीश ने कहा।

सोहनलाल ने दरवाजे के ‘की’ हाथ पर निगाह मारी।

“यह भी-यों-क लौक है। आगामी से नहीं खुलता।” सोहनलाल  
कहा। “और घेरा तो घेरा ही ताले खोलना है। नृ मुझे आघ

“घर के बिना भाड़ द कि सामने से कोई न देख पाये, मैं क्या कर  
ऊँ?” कहते हुए सोहनलाल दरवाजे के पास जा पहुँचा। जगदीश ने

दूर नजर मड़ा ही गया कि सड़क पर उसकी हरकत को न देखा जा  
सक

सोहनलाल ने अपनी फुलती कमीज ऊपर उठाई। कमर में  
हथी हेल्ट में फस आँखों में से एक पतला सा औजार निकाला  
और ‘की’ हाथ में उलझ गया।

कत ही मजहलों में लौक खुल चुका था।

सोहनलाल ने औजार वापस हेल्ट में फसाया फिर बोला।

“यह क्या काम।” कहने के साथ ही सोहनलाल ने दरवाजे के  
लौक पर दबाव डाल चक्का दिया तो दरवाजा खुलता चला गया।

सोहनलाल हँस कर गया। जगदीश ने दरवाजा भीतर से बंद कर  
लौक

मास्टर की आज्ञा का मुगमुग डटकर पालन था। वहाँ गहरी लामोचि  
कह रही थी

“जगदीश ने।” जगदीश ने जहाँ घुमाने के बाहर बोला—“घर  
‘जगदीश’ नहीं है। प्रीतक लामोचि घर पर नहीं है। पूरा घर की  
लामोचि है। जगदीश का लौक भीतर मिले कि हम तीन ही दो के  
हैं। मैं जान नहीं।”



[illegible]

शायर को बच बहा गया ।  
 मोहनदास की जिज्ञासु हृदय में दौड़ रही थी ।  
 जो बैरघस था - समस्त जगमोहन ने पंखों फिटा था । तब  
 हृदय पीछा प्रवेश करत ही टुटकर गया । समस्त ही धुन-धून रहने  
 बैर था । जिस पर धून में पूरी लाल पत्ती थी ।  
 मोहनदास - जगमोहन ने पुकारा ।

सं०

“अ-रा।”

“अ-रा।”  
“अ-” उस कला की तरह बहने का सन्तुष्टि का दृष्टि।  
“रा” में उस कला की शक्ति का सन्तुष्टि का दृष्टि।

ये जया है।"

हो गया है।  
क्यों वे जलम रात्रि ही मरना चाहते हैं। वह भूना का  
छुता रह गया।

वो ऐकस्मिन् पञ्चमः कर्मिणः सा कः उं नन्दः सा । अग्रे शरीर  
 वा साहचर्य-मे कन्दः यः - देवः उं कन्दः । अग्रे शरीर मे लक्षणः  
 यः । देवः वा भीः मन्दः मन्दः वा मन्दः वा मन्दः । अग्रे शरीर मे लक्षणः  
 वा, देवः मन्दः मे, देवः मन्दः मे, देवः मन्दः मे । अग्रे शरीर  
 एकः वरः मन्दः मन्दः कः मन्दः परः भीः वा । अग्रे शरीर मे लक्षणः  
 मन्दः अग्रे, मन्दः कः मन्दः लक्षणः वा । अग्रे शरीर मे लक्षणः  
 कन्दः कन्दः एकः मन्दः हो अग्रे शरीर मे लक्षणः दिशः हो ।

लाश की हड्डन वेश्मन हा राने थी ।

एक ही निगाह देखने पर स्पष्ट हो रहा था कि इसे मर ज़रा  
देर नहीं हुई। क्योंकि कमरे और बेंड पर, बहकर बिछा खून  
अभी गीला था।

गीता या !  
"तुने देखा है इसे पहले कभी?" कर्मभूत ने पूछा।

“नहीं। पहली बार, दो भी मरे हवन में डेउ रहा है।”  
सोहनलाल ने गम्भीर स्वर में कहा।

जगमोहन बेड के पास पड़ा और जगमोहन उस ही घंटे को देखा। फिर जब ये तस्वीर किसी को देकर उसे सूझने से रोका की निकली थी। जगमोहन ने तस्वीर को देखा। माने जाना कोई आर ही था। मोहनलाल ने पास पहुँचकर, तस्वीर को देखा।

“यह किसकी तस्वीर है?”

“अनिता गोस्वामी की सूझने से पड़ी मिली थी। जो हम माने जाना यह नहीं है।” जगमोहन ने कान और तस्वीर वापस अब से चले ली। नज़र लाज पर आ गयी।

“यह बेस्वामी से भाग गया है इसे—” मोहनलाल ने कहा।

“नहीं।” जगमोहन की निगाह लाज पर आ गयी—“चाहूँ माने जाना अनाड़ी था। जगन से चाहूँ के वगे से दया। धबगाह और अनाड़ीपन से यह फिर गया है। गाने पर चाहूँ का चार। गिर पर माने की तरह घसा पया चाहूँ इस बात की मजली दे रहा है कि, जिसने भी इसे भाग, वो इस हद तक धबगाह हुआ था कि उसे समझ नहीं आ रही थी कि क्या वो चाहूँ भाग कि यह चर जाय। गिर पर जब हत्यारे ने चाहूँ का शर किया, तब तक यह यहीनन पर चुका होगा।”

मोहनलाल एकाएक कुछ न कह सका।

“यह घर अनिता गोस्वामी का है, जो तीन चार दिन से मरने के साथ थी?” जगमोहन ने उसे देखा।

“हां।”

“यहीन के साथ कह सकते हैं?”

“हां। पूरा दावा है। बाद में दगाऊंगा कि किस हद तक शर कर रहा है। तुम कहना क्या चाहते हो?”

“मेरे ह्यान में अनिता गोस्वामी ने ही यह कल्प किया है।”

“यह बात तुम कैसे कह सकते हो?” मोहनलाल के होठ सिकड़ें।

“इसलिये कि—” जगमोहन ने अनाड़ी था। वो अनाड़ी अनिता गोस्वामी से यही— और कान हाँ कहता है।”

“तब तो—” इस तक नहीं हुआ।”

“मेरा ह्यान—” जगमोहन ने कहा है। लेकिन अपने तक को मे कोई सवत नहीं दे—” जगमोहन ने कहा है। अगर यह हत्या अनिता गोस्वामी ने नहीं की तो—” जगमोहन ने कहा है कि किसी अनाड़ी हत्यारे ने की—” जो धबगाह हुआ था।”

मोहनलाल ने जगमोहन को देखा।

“जब क्या करना है?”

“हम दो गे यहा की नकली लेने हैं।” जससाहब ने गम्भीर भाव से कहा “यहा न हम ऐसी हाई थीज नकली करने की कोशिश करना है जिसका आस्था करने भी दा नकल हो जा।”

“ठीक है।”

\*म मरन वाले की तलाशी लगा दू। शाहद हमरु बाँ में कर  
पता चर।" जगमाहन ने कहा और दूर पर गयी लाश के कपड़े को  
जैसे हटाने लगा।

साहबलाल दुसरी कामर में १२५१ गयी

जगन्नाथन को उसी जेल में स पस के जलावा कुँड में मिला। पस खालीर चैरु दिधा ता उसमें सीरुद गरुमात्र काम ही चीत्र झाईशग लायसस मिला, जिस पर मरने वाले का नाम गोपाल कुमार और उसका पता लिखा हुआ था।

जगमोहन न इम्पिंग लाइमस अपनी जेब में डाल निशा और  
घर्त वापस लाश की जेब में। उसके बाद कमरे में निगाह दौड़ाई।  
एक तरफ ड्रेसिंग टेबल थी। जगमोहन इम्पिंग टेबल की चारू करने  
लगा। वहाँ कोई भी काम की चीज नहीं थी। कमरे में पड़ी आलमारी  
के पास पहुँचा। उसे खोजकर देखा।

आलमारी में लंबीज कपड़ें हंगर पर लटके हुए थे। या दूमे हुए थे। मर्द के कपड़ों को क्या मदाना रुमाल तक भी नज़र न आया। जिससे जगमोहन समझ गया कि घर में अतिना गाम्ग्रामी अकेली रहती है। आलमारी में से भी काम की चीज़ नहीं मिली। आलमारी के लौकर में कुछ जेवरगत अवश्य पड़े थे, जा उसने वहीं रहने दिए। एक तरफ़ टेबल और कुर्सी पड़ी थीं।

जगमोहन टेबल के पास पहुँचा और झर झर चीख कर  
लगा।

इअर मे कोई खास चीज नहीं मिली।

दस मिनट उसे घेरू करने में ही बीत गये।

फिर जब घलटा तो बैड के पास ही नीचे फर्श पर छोटा सा पर्स पड़ा नजर आया। जो कि लेंडीज परस था। जगमोहन ने आगे बढ़कर फौरन परस को उठाया। उस पर जग सा खून भी लगा हुआ था। उसे खोलकर देखा तो भीतर सौ और पाव सौ के नाट दूने हुए थे। साथ में छोटी-सी डायरी थी। जगमोहन ने शायी निकालकर देखा, वो फोन नम्बर वाली डायरी थी। जिसमे नम्बर लिखे हुए थे।





उसके बाद उन्होंने पूरे घर को तलाश कर पाती है। इस  
को चीक नज़र पड़े। उसने कहा मैं नहीं देखी। अन्त में अन्त में अन्त में  
दरवाज़े खोला हूँ और अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में  
बतल करी।

जगमोहन ने अपना बगला कि वो इस बार पुनः पुनः  
हुए अनिता गोस्वामी के घर परना था।

सोहनलाल ने भी उसे अपनी भावना के बारे में बताया।

“हम एक हीमा सामने काम करने के कह रहे हैं। यहाँ  
रहने की जेब से मिले हुए जो भावना है। उम्मीद है कि यहाँ  
कभी पड़ेगी कि वो कभी था।” अन्त में अन्त में अन्त में  
अनिता गोस्वामी के घर में अन्त में अन्त में अन्त में  
अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में अन्त में

सा उसका लाल नम्बर हा सड़क है कि उसे अन्त में अन्त में  
हो वहाँ पनाह ले सके। जो अन्त में अन्त में अन्त में  
ले पनाह लिए हुए थी। अब उसे हवा तो पर गीत करने में पड़ी  
जाहिर होगा है।”

“मैंने जेब से पेंसिल निकाल ली है। हा सड़क है  
कि वो सारी तस्वीरें अनिता गोस्वामी की ही हैं।” सोहनलाल ने  
कहा—“ये असल में सारी तस्वीरें अनिता गोस्वामी की हैं।  
हैं, अनिता गोस्वामी हैं।”

“हा। कम से कम अनिता गोस्वामी के चेहरे को मैं नहीं पनाह  
हो, किसे हम दूँ रहे हैं।” जगमोहन ने सोहनलाल के साथ  
इनकी भागदौड़ के बाद भी अन्त में अन्त में अन्त में  
हो सके कि वह इस चीज का नम्बर है। यहाँ हा सड़क तो  
भागदौड़ का फायदा नज़र आता।”

सोहनलाल ने अपनी बातें फिर से सुनाई।

शाम और रान का अन्त में अन्त में आ रहा था।

“मैं देवराज चौहान से फोन पर बात करके आता हूँ।” जगमोहन  
ने कहा और सामने दिखाई दे रही पेंटिंग की तरफ बढ़ गया।  
सोहनलाल चेहरे पर सोच के भाव लिए उसे जान देखता रहा।

00

00

जगमोहन ने फोन पर देवराज चौहान से बात की।

“उम्मीद है कि देवराज चौहान की आज्ञाकारी में पड़ी।

“हा। सोहनलाल भी मर स'क है।” कहकर जगमोहन ने मारी भागदौड़ बता दी।

“कहाँ है।” देवराज चौहान का स्वर कानों में पड़ा—“अभी सारे काम सँकट दो। तुम सोहनलाल के साथ उगकें घर पहुँचो। मैं भी सोहनलाल के घर पर पहुँचना हूँ मौका मिलने ही।”

“मौका मिलने ही।” जगमोहन के होठों में निहत्ता—“मैं समझता नहीं।”

“हा।” देवराज चौहान का शांत स्वर कानों में पड़ा—“महादेव जब मरा उसे छुड़कर मरिम से जब मैं चला तो, महादेव की जान लेने वाला शायद मेरे पीछे लग गया था। अब वे लोग जानते हैं कि मैं यहाँ बगल पर हूँ। वे कोई एक नहीं, ज्यादा लोग हैं। फोन भी आया मुझे। यह पूछा गया कि महादेव ने मरने से पहले मुझे क्या बताया है। वे अब मुझे खत्म करना चाहते हैं और इस वक्त मैं मरसुन कर रहा हूँ कि वे बहुत सारे लोग हैं और बगलें का घर गह है। शायद अंधेरा होने पर वो बगलें के भीतर घुसने की चपटा करेंगे। मैं उनसे झगडा नहीं करना चाहता। क्योंकि मुझे तीन सौ दो नम्बर के कार में जानना है। महादेव के असली हत्यारे को पकड़ना है। मैं कुछ ही देर में बगलें से निकलने जा रहा हूँ। वो यही समझने लगे कि मैं बगलें के भीतर हूँ। यहाँ से मैं सीधा सोहनलाल के घर पहुँच रहा हूँ।” इसके साथ ही देवराज चौहान ने रिसीवर रक्त दिया था। हाट भीड़ जगमोहन में भी रिसीवर रख दिया।

रक्त में जगमोहन और सोहनलाल, असलम खान से मिले। तत्पश्चात् दोनों एनबस दिवलाकर यह बात पकड़ी कर ली कि वो तत्पश्चात् जगमोहन मायामी की ही हैं।

□□

□□

देवराज चौहान जब सोहनलाल के कमरे में पहुँचा तो रात के दस बज रहे थे। देवराज चौहान की बाह माथूनी सी घायल थी। त्रिमे देखने ही जगमोहन बोला।

“मारी लगी है।”

“रक्त लानी निकल गई।” देवराज चौहान बैठने हुए कह उठा।



"मगर कि जब वहाँ से निकल आया तो मैंने देखा कि  
 धा गये।" रामायण का पात्र राम  
 "हमारे राजा राम ने मेरी सुलझाई लालन में लिए  
 लालन में राम का हाथ बलन लालन का हाथ राम का  
 करिब आदमी है हा हाड पालन का राम राम लालन  
 हा। बलन ही आने हा में लालन बलन का हा हा कि लालन  
 लालन किमी ही लालन में बलन न लालन"

"मगर मैं ही हा लालन कि व लालन लालन है"  
 "मैंने। कि लालन ही हा लालन लालन का लालन लालन हा हा  
 लालन ही हा हा लालन लालन का लालन लालन हा हा लालन  
 लालन लालन लालन का लालन हा हा लालन लालन लालन  
 का लालन लालन लालन का लालन हा हा लालन लालन लालन  
 हाड लालन लालन - लालन लालन लालन लालन"

"बहुत लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन"

"लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन"

**"वो कैसे?"**

"हमने बहुत लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन"

"लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन"

"लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन"

"लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन  
 लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन लालन"

"असलम खान का तो यही कहना है।"

"असलम खान ने यह नहीं बताया कि बतौर गोताखोर को महादेव से समन्दर में से क्या तलाश करवाना चाहनी थी?"

"यह बात असलम खान को भी नहीं पता।"

"तुमने पूछा था?"

"हां।"

मोर्चों में दूबे देवराज चौहान ने टेबल पर तम्बाकू की उपाया जो जगमोहन को सूटकेस में से निकाली एक ही निगाह से लग रहा था कि वो किसी अमीर आदमी के तम्बाकू रखी है। उसने उसके पीछे कुछ देखा उपा नहीं था।

देवराज चौहान ने तम्बाकू रखते हुए जगमोहन से कहा।

"अनिता गोस्वामी अपने सामान के साथ, महादेव के घर रह रही थी। जबकि उसका अपना घर भी है।"

जगमोहन ने सहमति से सिर हिलाया।

"इसका मतलब कि वो कोई खास काम कर रही थी। शायद किसी के छिनाफ कुछ कर रही थी और उसे डर था कि उसकी जान लेने की कोशिश भी की जा सकती है। महादेव के यहां रहने की एकमात्र यही वजह हो सकती थी।"

"तो फिर महादेव की जान क्यों ली गई?"

"इसलिये कि, अनिता गोस्वामी, महादेव से जो काम करवा रही थी, कुछ लोग नहीं चाहते थे कि वो ऐसा करे। मेरे ख्याल में अनिता गोस्वामी को खतरा का एहसास हो गया होगा। वो तो खुद का बचा गई, परन्तु महादेव उनकी निगाहों में ही रहा और गोली का निशाना बन गया।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा - "बन्दगाह पर मौजूद ऐसे किसी आदमी को जानने हो, जो महादेव का वरिष्ठाकार हो?"

"नहीं,"

"यै भी नहीं।"

"महादेव, मुम्बई बन्दगाह पर जो काम कर रहा था तो जाहिर है कि वहां उसका कुछ सार्वजनिक भी होगा। और महादेव ने ऐसी कोई गलती या भी नहीं की, जो उसकी मौत की वजह बनी।" देवराज चौहान ने कहा।

नितम तब महादेव की शूट किया गया, तो सकता है कि

उसी तरह अनिता गोस्वामी की भी हत्या कर दी गई थी।" जगमोहन ने कहा - "क्योंकि वो भी तो जान बचानी भागी फिर रही थी।"

"तुम्हारी बात सच ही मानना अगर अनिता गोस्वामी के घाव, उस आदमी की लाश न पड़ी होती और खून लगा लवंग्र पत्र पास में न मिलना। उससे स्पष्ट ज़रूर है कि वो खून अनिता गोस्वामी ने ही किया है और अभी तक वो जिंदा है परन्तु मौत उसका पंगु है। वो हलके में है। अगर वो हम मिल जाय तो हमारे सारे सवालों का जवाब मिल जायेगा। एक गुरु बान आइने की तरह साफ हो जाये। परन्तु जिसे जान का डर हा, वो आसानी से मिलने वाली नहीं। वो तो अपनी परछाई से भी दूर भागी।"

"यह बात तो है।" मोहनलाल ने सिर हिलाया।

"मुरेश जोगेलकर का मरना, मुझे समझ में नहीं आया।" जगमोहन कह उठा।

"तुमने मुझे बताया कि उनके वैम्बूर ले जाने वाला टैक्सी ड्राइवर कह रहा था कि लड़की घबराई हुई थी और महादेव उस तमल्लू दे रहा था कि मुरेश जोगेलकर सब ठीक कर देगा। वो उसका दोस्त है। यानि कि महादेव वैम्बूर में, अनिता गोस्वामी के साथ, जोगेलकर से मिला। और जब तीन सौ दो नम्बर वाला को मालूम हुआ कि महादेव जोगेलकर से मिला है, तो उन्होंने जोगेलकर को खतम कर दिया। यानि कि महादेव या अनिता गोस्वामी जिससे भी मिलते, वो लोग उनके खतम कर देते। शायद यह सोचकर कि उन दोनों ने सामने वालों का उनके बारे में जाने क्या बताया होगा। जैसे कि उन्होंने मुझे भी खतम करने की चेष्टा की। स्पष्ट ज़रूर है कि वो लोग नहीं चाहते कि तीन सौ दो नम्बर की हकीकत किसी को पता चले।"

"तब तीन सौ दो के क्या?" मोहनलाल सीढ़ियों के स्तर में रुक उठा।

"वही तो मालूम करने की चेष्टा कर रहे हैं," देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा - "यह तब जो खतम सम्पन्न आई हैं, मैं अभी है ग्यारह बार बार बता रहा हूँ। जल्द बात तो शायद बाद में मालूम हो, जब तीन सौ दो नम्बर के बारे में पता चलेगा कि वो किसका, किस चीज का नम्बर है।"

दोनों स्तब्ध रहें। चेहरों पर सोचों के भाव नाच रहे थे।

देवराज चौहान ने टेबल पर पड़ा ड्राईविंग लायसेंस उठाया। उसे खोलकर देखा। मरने वाले की नम्बर और उसका पता लिखा था। देवराज चौहान ने लायसेंस मोहनलाल को थमाते हुए कहा।



“माने बने के बारे में जानकारी इकट्ठी करेंगे। नाम पता भी लिखा है। वो कैसा आदमी था। किसके लिए काम करता था। उस फ़िर ऐसी ही कोई बात।”

मोहनलाल ने सिर हिलाकर लारमैम ज़ब में ग़ार किया।

देवराज चौहान ने टुकल पर पड़ी अनिता गाम्वासी की फ़ोन डायरी उठाई और एक एक पन्ना पलटने लगा, उन पर लिखे पान नम्बरों को चेक करने लगा।

पूरी डायरी चेक करने के बाद उसने जगमोहन को देखा।

“इस डायरी में एक फ़ोन नम्बर के साथ नाम की जगह पर खाली लिखा है। इस पंजी को चेक करें। इससे भूतारा और भी कुछ नम्बर हमारे काम के हो सकते हैं। सब नम्बरों को चेक करें, शायद कोई काम की बात पालूँ हो।”

जगमोहन ने फ़ोन की डायरी ली।

देवराज चौहान ने अनिता गाम्वासी की तस्वीरों वाली पोस्टरबोर्ड साईज की एल्बम उठाई और एक एक तस्वीर को गार से देखने लगा। कोई तस्वीर भी बाजार में ली गई थी। तो कोई तस्वीर पार्क में। कुछ तस्वीरें समन्दर के किनारे की थीं तो कुछ तस्वीरें पानी में चाने गले बड़े-बड़े जहाज़ों की थीं। जिस पर बहुत सूर्यनमा चेहरों में अनिता गाम्वासी खूब नज़र आ रही है।

“तस्वीरों और एल्बम की हानन बनाता है कि यह तस्वीर हानन ही में ली गई है। आधी से ज्यादा तस्वीरों में एक ही चेहरा कपड़ों में जानि कि ऊपर में पनी फ़िल्म एक दो दिन में ख़त्म कर दी गई है। तो सवाल यह आता है कि तस्वीर खींचने वाला कौन है जो भी है, अनिता का कोई ख़ास ही होगा।” कहने के साथ ही देवराज चौहान ने जगमोहन और मोहनलाल को देखा।

“यह तस्वीर में वो खुलकर पसरा रही है तो तस्वीर खींचने वाला उसका ख़ास ही होगा।” जगमोहन बोला।

“और उस ख़ास का फ़ोन नम्बर इस डायरी में भरखा होगा।”

देवराज चौहान ने विश्वासभरे स्वर में कहा।

“हां,” जगमोहन ने सहमति में सिर हिलाया “मैं कोशिश करूँगा कि उसका पता पता कर सकूँ।”

देवराज चौहान गलबस बन्द करने ही जा रहा था कि तभी एक बूढ़ा आदमी ही पन उसकी आंखें गिरकर गई। चहर पर अजीब-से भाव आ गये।



“हा” दशरथ चौहान ने सगुन देता था कि “हा” ही  
हम जहाँ नम्बर तीन सी दो कह सकते हैं -

जगमोहन और मोहनकाव को निगाह देकर चौहान पर  
दिखा।

“तुम्हारा मतलब कि महादेव इसी जहाँ नम्बर तीन सी दो  
बारों में कहा करता है - !” जगमोहन ने कहा था।

“हाँ भी सकता है और नहीं भी।” मोहनकाव ने फोफा दिया,  
दशरथ चौहान ने सिद्धांत सुनकर और दोनों पर निगाह पड़कर  
बोला।

“महादेव, इसी जहाँ नम्बर तीन सी दो के बार में कहा करता  
चाहता था।”

“यह बात तुम इतने दूरे के साथ हम कह सकते हैं कि  
सकता है तभी तो मैं तीन सी दो नम्बर जहाँ का दिखाना चाहता  
इतना ही। इस नम्बर का हम महादेव के साथ इसीलिए बात  
है कि मरने तक महादेव के घर में तीन सी दो निगाह था,  
जगमोहन ने अपने शब्दों पर जोर देकर कहा।

दशरथ चौहान के शब्दों पर अतीव-संतुष्ट मोहन उभरी।

“तुम्हारी बात सही है कि इस तक हम यह जानने का प्रयास  
कर रहे हैं कि तीन सी दो नम्बर जहाँ है। हमें तो भी तीन सी  
दो नम्बर हमारे सम्मुख आया। हम इस महादेव जहाँ तीन सी दो  
समझने लगे। इस तक अगर हम जहाँ पर निगाह तीन सी दो  
नम्बर के साथ-साथ अनिष्ट गोंगायों का भी साथ ले, जो कि तीन  
सी दो नम्बर जहाँ पर गता है। जो अतीव तीन-चार दिना में  
महादेव के साथ रही थी, जो - - - - - जगमोहन पर कहा हम  
करना रही थी, तो हम जहाँ जहाँ पढ़ा कि महादेव इसी जहाँ  
नम्बर तीन सी दो के बार में कहा करता था। ऊपर तीन  
सी दो नम्बर के जहाँ और अनिष्ट गोंगायों का एक ही गता  
होना महान दुर्भाग्य नहीं हो सकता।

जगमोहन और मोहनकाव दशरथ चौहान को डटते गये।

मन पढ़ते ही कहा था कि यह नम्बर जहाँ ही मैं भी गता  
लगाते हैं। यानि कि जहाँ में जहाँ हम बहुत दिन पढ़ते इसका  
मतलब जहाँ नम्बर तीन सी दो महादेव बन्दरगाह पर हा इस तक  
जहाँ जहाँ खड़ा है। इस जहाँ में महादेव निहित है कि नम्बर तीन  
जहाँ पर जो गता है। नम्बर तीन जहाँ महान में बार पर जो



थी। उसी रात पर जागृत होगी। १९१२ में ही उसी की  
जन्मजन्म के विषय में है। जो कि १९१२ में लया गया है।  
है। १९१२ में गम्भीर स्वर में कहने के साथ दूसरी की है।  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
की है। जन्मजन्म के बारे में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में

“मेरे सौभाग्य के बारे में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में

“जो मेरे सौभाग्य के बारे में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में

देवगज चौहान ने सो तस्वीर उठा ली। जिसमें अज्ञान पर  
अज्ञान गम्भीर स्वर में कहती थी। जिस अज्ञान के सबसे नीचे  
१०२ जिज्ञा नजर आ रहा था।

“मेरे इस अज्ञान के बारे में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में

“अज्ञान गम्भीर स्वर में कहती थी। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में  
जन्मजन्म के विषय में जानना चाहते हैं। जो कि १९१२ में

“वो नहीं भिन्नगी।” जगमोहन ने उस देखा।

“क्यों?”

“बनाया तो। वो इतनी बेटी है। कहीं रिश्ता हड़ है। सही जान  
की सुनना है। महादेव को साथ लेकर वो बन्दरगाह पर जाई खाम  
काम कर रही थी। लेकिन महादेव की मौत के बाद तो उसे अपनी  
जान की चिन्ता पड़ गई होगी। ऐसे में वो मायने भाने वाली कहा।”  
जगमोहन ने पकड़ स्वर में कहा।

देवगज चौहान ने तस्वीर पर से निगाह हटाकर सारनलाल से  
कहा।

“जिन्होंने महादेव की जान ली है, वो मेरा सारा सारा है और  
मुम्बई बन्दरगाह से वापस लवरे है। मेरे मेरे सारा सारा बन्दरगाह पर







हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

हमारे साथ साथ ही।

“हाँ, नौ न, कभी पढ़े है।”  
“बहुत पढ़े है, मेरा एक पट्टी भी था। वो भी बहुत पढ़ता था।” उसने गहरी साँस लेकर कहा।  
“पढ़ता था, तो अब क्या हो गया उस?”  
“तल में है। अब केद की सजा भुगत रहा है, उपन्यास पढ़ने की इच्छा है।”

“वो कैसा हो सताता है, मैं समझा नहीं।”  
“जुआरी नौ न, फुल गई थी। कहीं और नौ न मिली नहीं। पल्ले बाग नौ न भी भा गया। अब नौ न की जगह थी। दो ही काम थे। भी व माँ या घाँ कर। नौ न मिलने की आस तो पूरी तरह खत्म हो गई थी। और जो उसे लखन के उपन्यास पढ़ता था, जिसकी कहानियों में दकैती की यातनाएँ होती थीं।” कहकर दो पल के लिये चौकीदार निष्ठुरा - “साहब जी। आप लोग जो उपन्यास लिखते हो, वो कल्पना की उपज होती है। माँचों की पट्टी होती है। हकीकत की हवा भी उपन्यास को मृतर नहीं गई होती। लेकिन रुझ पढ़ने वाले समझ बैठते हैं कि उपन्यास में सच लिखा है। मैं पगोसी को बात समझाया कि ये सब झूठ होता है, परन्तु वो नहीं माना। उसने उस उपन्यास लेखक के उपन्यास में से, ऐसा उपन्यास चुना, जिसमें उप्पा डकैती थी और इसी दकैती को माफ़ने रखकर जैसे छोटे बच्चे बेपर दने हैं, वैसे ही उसने डकैती करने की कर्मागार ही और जेल में पहुँच गया। इतने पर भी उसे अकल नहीं आई। परगो ही जेल में उसकी बीबी उससे मिलने गई तो बीबी को बोला मुझे उम्मी लेखक के छोटकर वो उपन्यास लाकर दो, जिन उपन्यासों में उपन्यास का हीरो जेल से भागता है योजना बनाकर। मतलब कि अब वो जेल में भागने की सोच रहा है, उपन्यास के हीरो की तरह -।”

देवराज चौहान मुस्कराया।

“तो ये उपन्यास लिखने वाले की गलती हुई या पढ़ने वाले की?” देवराज चौहान बोला।

“लिखने वाले ने तो कल्पना से लोगों का मनोरतन किया है। शागद उपन्यासों में ऐसा कुछ लिखा छपा भी होता है कि ये नकली कहानी है। इसे मजे लेने के लिए ही पढ़ें। इस पर भी वो नहीं समझा तो गलती पढ़ने वाले की ही हुई कि नकली बातों को भ्रमली समझ कर चल दिया मूढ़ उठाकर -।” चौकीदार ने गुर्र बसाया।  
मुस्कराता हुआ देवराज चौहान उसे देखता रहा।





इसे काम करना नहीं मानता।" उसने कुछ ज्यादा ही लम्बी साँस ली। घोड़ा-सा मुँह बनाया।

देवराज चौहान के होंठों पर बराबर मुस्कान छाई हुई थी। बात आगे बढ़ने के लिये वो पुनः बोला।

"आप कुछ कह रहे थे—?"

"मैं बता रहा था कि मैं उपन्यास लिखता हूँ। और अब जो उपन्यास लिख रहा हूँ उसमें मुम्बई बन्दरगाह दिखाना है। गोदी, सामान रखने की जगह और एक जहाज को अन्दर से देखना है कि वो कैसा होता है।"

"देखने के बाद ये सब चीजें आप उपन्यास में लिखेंगे?"

"हां।"

"फिर तो आपको ये भी जानना होगा कि जहाज पर कौन कर्मचारी, क्या-क्या काम करता है।"

"हां।"

"एक बात के अलावा बाकी बातें तो मैं पूँगी कर सकता हूँ।"

"कहां दिक्कत है?"

"जहाज भीतर से दिखाना मेरे बस से बाहर है।"

"क्यों?"

"किसी बाहरी आदमी को बन्दरगाह पर लंगर डाले जहाजों के भीतर नहीं ले जाया जा सकता। जमाना बड़ा खराब है। क्या मालूम कोई बम रखकर, जहाज को नुकसान पहुंचा दे।"

देवराज चौहान ने जेब से पांच सौ का नोट निकाला और उसकी हथेली में दबा दिया।

"यह क्या?"

"रख लो। मैं यह नोट खर्च में डालकर फर्मा प्रकाशक को दूँगा कि ये पैसे उपन्यास लिखने की भागदौड़ में खर्च हुए तो वो हमें दे देगा है। अब बताओ, जहाज को भीतर से देख सकता हूँ?"

देवराज चौहान मुस्कराया।

"प्रकाशक आपको इस तरह के खर्च देता है तो फिर शायद जहाज को देखा जा सकता है।" वो मुस्कराया।

"दिखाओ। नोट और मिल जायेंगे।"

"आगे का काम मुझी करेगा। वो जो कुर्सी पर बैठा है। आप यहीं रुकिये। मैं उसको एक ही लाईन में सारी बात समझा देगा हूँ। आपकी बात समझने में दो दिन लगा देगा।" देवराज चौहान को

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

...

... ..

... ..

... ..

...

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

...

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

...

... ..

□□

□□

... ..

... ..

... ..

... ..

“और कोई चक्कर नहीं है। तुम अपनी बात करो।” देवराज धीमान ने शांत स्वर में कहा।

“नहीं, तुम्हें जेली दिखा सकता हूँ। जेलम दिखा सकता हूँ। जेलम पर कौन कबजगी क्या करता है, जिसके जिम्मे क्या काम होता है? वो बता सकता हूँ। जेलम तो समन्दर का ठोंग-सा चक्कर घी लगा देता हूँ, बाहर में। जेलम किसी जेलम के भीतर नहीं ले जा सकता। नौका खारे में पड़ जायेगी।”

“तुम्हारी बीबी की सारी रिश्ते की भाँति है।” देवराज चौहान ने पूछा।

“तीन हजार तो लग रहा। तुम देगी छोट की बात कर रहे थे तो साढ़े तीन लगा लो।”

“इसके अलावा सानी ६ साढ़े साय और जो जो भी कपड़े जाते हैं, उनकी कीमत लगाओ।”

“लेकिन—।”

“कीमत तो लगाओ।”

“फिर तो पांच हजार का सारा पैसा ज़रूरी।” जमान देवराज चौहान के चेहरे पर निगाह मारी।

देवराज धीमान ने जेब से दस हजार की गूँटी निकाली। “मर्जी आखो के सामने पड़ी है और उसे जमान जेब में रखकर सब हो व्यवसाय।”

“इसे जमान क्यों रखा?”

“यह दस हजार मैं किसी और को दूँगा। वो मुझे १३०० रुपए के भीतर भी घुसा देगा।”

“ये क्या कह रहे हो? फिर तो मेरी बीबी का सारा पैसा जमान”

“मेरा काम जमान तो सारी की सारी सारा पैसा जमान में जायेगा।” देवराज चौहान ने कहा। “इस हथकर दूँगा। १३०३ रुपए जमान लिखने के लिए जमान का भीतर में देना बस १३०३ रुपए। तो मैं देखकर ही रहूँगा। तुम दिखाओ नहीं तो कोई दूँगा।”

“दूसरे की बात मत करो। जमान गूँटी मुझे दे।”

देवराज चौहान ने गूँटी निकालकर उसे दी, वो सारी पैसा में पहुँचकर रुक ही गई।

“सुनो, तुम्हारा काम मैं करता देता हूँ। लेकिन याद रखना, तुम मेरे मित्रदार हो और तुमने कभी भी भीतर से जमान नहीं देना। तुम्हारी जिद और रिश्ते की मजबूती में तुम्हें जमान दिखा रहा हूँ।

कहीं बान हो तो ये ही कहना। कहीं दम हवा के चक्कर में मेरी नीकरी मन लड़का देना।"

"फिर मत करो। लेकिन मैं वहीं जहाज भीतर से देखूंगा, जो मुझे बाहर में पसन्द आयगा।"

"जब तक जहाज बन्दरगाह पर लहर डाले खड़े हैं, तब तक वो अपना ही मान है, कोई भी देख सता। तुम रुको। मैं अपनी जगह पर किसी और को फिट कराऊँ आता हूँ।"

□□

□□□

शो मुर्गी, जिसका नाम रघुवीर सिंह था। उसने देवराज चौहान को गोदाम दिखाया उसके बाद हैरत। देवराज चौहान वहाँ के माहौल को बारीकी से देख रहा था।

"मुन्नी।" रघुवीर सिंह बोला— "तुम्हारे उपन्यास की कहानी में लड़का बन्दरगाह पर आता है या कहानी की हीरोईन?"

"अभी यह तय करना बाकी है।" देवराज चौहान ने कहा।

"तो अभी तय नहीं किया। कहानी तैयार नहीं की अभी?"

"सबकुछ तैयार है। जहाज के भीतर नगर मगन के बाद, बाकी बानें भी तय हो जायेंगी।" देवराज चौहान ने कहने के पश्चात् सिग्रेट सुनवाई।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"रोशन कुमार - ।"

"रोशन कुमार - ?" रघुवीर सिंह सावधानी स्वर में कह उठा— "शायद मैंने तुम्हारा नाम सुन रखा है।"

"मैं उपन्यास भी लिख रहा हूँ।"

"हा-हा, वो भी देखता है। याद आ गया।" रघुवीर सिंह जैसे बात आ जाने का लड़कने में कह उठा।

देवराज चौहान के होठों पर शान मुस्कान उभरी।

"जहाज पर चलो?"

"हां-हां चलो। आओ, बन्दरगाह के किनारे की तरफ चलने हैं। वहाँ से बाहर न लेंगे। वहीं से तुम्हें नगर डाले खड़े कई जहाज नजर आ जायेंगे। जो कहोगे, दिखा दूंगा।"

दोनों चल पड़े।

कई रातों से गुजरते हुए सन्न-आठ मिनट बाद वे दोनों बन्दरगाह के किनारे पर पहुँचे। समुन्द्र की सतह से टकराकर अपनी नवी से



पास किन्तु खनो की सहाई थे।

१. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 २. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ३. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ४. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ५. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ६. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ७. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ८. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 ९. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।  
 १०. संस्कृत भाषा का अर्थ है संस्कृत।

“उज्ज्वल की पैयागी हो रही है रघुवीर”

[illegible]

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

सुख भार गहन है - यह ही वास्तविक 'सुख' है -

ਮਾਨ ਨਿ ਧਰੀ ਸ ਤੇ ਮਾਏ ਕੰਤ ਪਾਈ ਹੋਇ ਪਦਮ

कृष्ण सा तन्मय इव सा । तन्मय इव सा तन्मय सव

भारत के अर्थ मन्त्रालय

हम ही नहीं, बल्कि हमारे देश के लोग

“मारी इच्छा” के पास में बड़े रिश्ता” के प्रस्ताव लगाना

बला दुगा ।"

\*समस्त गंगा गणपति - २\*

“विन्मज्ज समझ गयी।” वह समझा ही नहीं था कि वह क्या कह रहा था।

देवराज चौहान को दूर नगर तक लुप्त जलवा की बात पता  
 चले गयी थी कि लम्बे समय से दिखने देने वाला जलवा नन्द  
 कौन सा ही लड़का है।

परन्तु इतनी दूर से काँड़ भराला नहीं लग पा रहा था।

बोट धातुक एक जहाज के पास पहुँचा, दूर से जहाज जाई  
स्वाम बड़ा नहीं लग रहा था परन्तु पास पहुँचने पर, जहाज की

साइड इतनी ऊंची थी कि गर्दन से भी ऊपर तक जा रही थी।  
 मैं भी सोच रहा था कि यह तो बहुत ही बुरा है।  
 मैं भी सोच रहा था कि यह तो बहुत ही बुरा है।

क्या?"

“सा” से बना हुआ है, जिसका अर्थ है “सा” से “सा” तक।  
अर्थात् “सा” से “सा” तक।

जहाज के पास पहुँचकर ऐसा ही करना बता दूंगा।"

“ठीक है। चन भाई गोपाल।”

वोट में लगाने ३१ अक्टूबर १९५५

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ ज्ञानं च धर्मश्च भीष्म उवाच ॥

मोट जव तीसरी नजर पर पड़ती तो इतना न सोचता ही कि  
 ५ मिनट के भाव भी गये। उस नजर में तीस मिनट नाच व  
 डेक के नीचे १०२ लिखा हुआ था। सो काफी विश्वास लगा था।  
 मरीच छ मंजि ने और तीन बड़े बड़े डेक नजर आ रहे थे। नजर  
 में बाहरी लिखी सिन्धर जैसी साइ मजबूत पगल थी। नजर के  
 दोनों तरफ साइने में मोट मोट अक्षरों में 'भी तीसरी' लिखा था।

मोटरबोट नं ५०२ का चक्कर लगाया ।

“यह जहाज मुझे भीरा से दिखा दो।” देशगान की गन ने कहा।

रघुश्रीर सिंह ने गोपालन छो दिया ।

“इस जगत् के भीतर कौन होगा ?”

“सफाई वालें होंगे। सप्ताह पारने सिगापुर से आया था और तीन दिन बाद फिर सिगापुर जायेगा।” गोपाल बोला।

“यह सरकारी जहाज है” देवराज चौहान ने जानबूझकर पूछा।

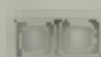
“नहीं। ये नीर्लागरी शिपिंग कॉर्पोरेशन का जहाज है। इस कम्पनी के चार बड़े बड़े जहाज हैं। बृंग साहब मालिक है इस कम्पनी के। बहुत बड़िया आदमी हैं।” गुरुर सिंह ने जवाब दिया - “गोपाल, बोट को सीढ़ी के साथ लगा जो नीचे लटक रही है। वहाँ से हम ऊपर चले जायेंगे।”

“लेकिन जहाज देखने में तो बहुत वक्त लगेगा।” गोपान्न बोट का रुख उधर मोड़ता हुआ बोला।

“ये बात तो है।” कहते हुए रघुनिर सिंह ने प्रश्नरुपी निगाहों से देशराज चौहान को देखा।

*[Faint handwritten notes in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]*

7 17 1

[illegible]

नती मगधने से एक गायत्री इनही नाइ बहक न कर आया ।  
श्री वाणिज्य वरद का, गांधी ने लिख्य का रीढ़ राई भा विमान के  
आदी थी।

"शास्त्रानुसारं नृपतया" गङ्गासिन्धु नदिभ्योऽप्युत्पत्तिर्वाप्यते ।

[illegible]

**● ● ● ● ●**

1980

[illegible]

2000年12月15日

[illegible]

... ..

[illegible]

*(Musical notation)*

**THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS**

• 208 •

ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਦੇ ਹੁ। ਲੰਗਾ ਸਮੇਂ ਦੀ ਰ। ਸਮੇਂ ਦੇ  
ਸਮੇਂ ਦੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹੁ। ਲੰਗਾ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹੁ।

“उसके पीछे सर पीर” सा कदम मे रत न जाया ।

“जो मेरे थोड़े राधा-पूज को है। राधा-पूज मेरा भाइ है। राधा-पूज मे  
मेरे राधा-पूज को है और पीछे तरकीब उसी की ही है। अगले  
पक्ष में है। जो जो मेरे राधा-पूज को सुपर बाजार में नीला कर रहा है।”

॥ सत्यं ज्ञानं परमात्मनः ॥

इस वक्त उसी तस्वीर को देखने का बहुत शौक था और मैं मशहूर होने से घबराता था कि लोग फिर आराम से नहीं बैठने देंगे। ऐसे वे मैंने अपने भाई के नाम से और उसकी तस्वीर के नाम से उपन्यास लिखने शुरू किए। अब हाथ है यह कि वो काया सुपर बाजार में साफ़ न लेने वाले कम और उसके आलेखक लेने वाले ज्यादा आते हैं। वो पसंदान हुआ पड़ा है। किसी को कह भी नहीं सार कि उपन्यास मैं नहीं, मेरा भाई लिखता है। और मैं निश्चित होकर यही





... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..

... ..

...

... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..  
... ..

... ..

... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

यह जगत यात्रा पर रवाना हुआ है तो बृहत् साहब अक्सर इनो जहाज पर यात्रा करने है। कभी नहीं भी क्या। परन्तु इस तरफ कोई आम आदमी नहीं जा सकता बृहत् साहब धानर है या न हो। जहाज की खानगी के दल से ही यात्रा सफल पुरा लगे जाया है।"

देवराज चौहान की मजबूत हवा कि उस मन्तव्य की बात मालूम हो रही है। हुनने वह जहाज के एंफ फोर के आगे हिस्से की इन तरफ हमेशा ही रित्त रचना गवारी समझ से बाहर था। यही नन कोई बात हसी चाहते। शिपिंग कम्पनी का मार्जिट बृहत्, पागल तो होगा नहीं।

"तुम कभी भीतर गए हो? इस दरवाजे के पार..." देवराज ने मुस्कराकर पूछा।

"हो! दो तीन बार बृहत् साहब के आदर्शियों के साथ ही गया था," राजपाल ने बताया।

"ज्या है इस दरवाजे के पार। मन्तव्य कि भीतर के गमन कैसे हैं और-?"

"सारी।" राजपाल ने सिर हिलाकर मुस्कराकर कहा— "बृहत् साहब की तरफ से सख्त हिदायत है कि जहाज के प्राइवेट हिस्से के बारे में किसी से कोई बात नहीं की जाये। और आप तो उपन्यासकार हैं। कहीं अपने उपन्यास में भीतर के रास्तों का जिक्र कर दिया तो मेरी खैर नहीं।"

"यकीन रखिये। यह बात मैं उपन्यास के लिये नहीं, अपनी जिज्ञासा के लिये पूछ रहा हूँ।"

"तो भी मैं माफी चाहूंगा। बृहत् साहब के तरफ से, इस बारे में बात करने की इजाजत नहीं है।"

"कोई बात नहीं। मैं इस बात के लिये आप पर जोर नहीं डालूंगा। अब जहाज कब रवाना हो रहा है?"

"तीन दिन बाद। सिंग पुर के लिये। इस बार तो बृहत् साहब भी जहाज पर यात्रा करेंगे। आओ मैं तुम्हें जहाज की बाकी चीजें दिखाता हूँ। उसके बाद तुम्हें जहाज के स्टाफ के बारे में बताऊंगा। उपन्यास लिखने समय शायद इन बातों की जरूरत पड़े।"

देवराज चौहान ने उस बन्द दरवाजे को देखा। फिर राजपाल और रघुवीर के साथ चल पड़ा। उस बन्द दरवाजे के पार, दूसरी मंजिल के, उस प्राइवेट हिस्से पर कुछ है। खास कुछ है। इसी वजह से उस तरफ किसी को जाने की इजाजत नहीं दी।





... १३ ...  
 ... १४ ...  
 ... १५ ...  
 ... १६ ...  
 ... १७ ...  
 ... १८ ...  
 ... १९ ...  
 ... २० ...  
 ... २१ ...  
 ... २२ ...  
 ... २३ ...  
 ... २४ ...  
 ... २५ ...  
 ... २६ ...  
 ... २७ ...  
 ... २८ ...  
 ... २९ ...  
 ... ३० ...  
 ... ३१ ...  
 ... ३२ ...  
 ... ३३ ...  
 ... ३४ ...  
 ... ३५ ...  
 ... ३६ ...  
 ... ३७ ...  
 ... ३८ ...  
 ... ३९ ...  
 ... ४० ...  
 ... ४१ ...  
 ... ४२ ...  
 ... ४३ ...  
 ... ४४ ...  
 ... ४५ ...  
 ... ४६ ...  
 ... ४७ ...  
 ... ४८ ...  
 ... ४९ ...  
 ... ५० ...

राजधानी के सुसंस्था होने ही देवराज चौहान ने फिर लिखा।  
 "उम्मेद बाद फल्ट मेट या उप कप्तान जहाज का दूसरा, मुख्य  
 अधिकारी होता है। कप्तान की सहायता करने के साथ साथ इसका  
 मुख्य कार्य है कि कर्मचारियों, मान सदान-दलवाई, जैसे कार्यों और यात्रियों  
 की निगरानी का ध्यान रखना होता है। कान-से कर्मचारियों ने क्या  
 काम करना है, फल्ट मेट ही यह तय करता है। सामान क्या रखना  
 है, कहाँ रखना है, यह सब काम इसके जिम्मे ही होते हैं।"  
 "इसके जिम्मे तो कफ़ी काम रहता है।" देवराज चौहान ने कहा।  
 "हाँ। उप कप्तान की बहुत कुछ सफलता होता है। लेकिन  
 सबका काम ही कराना होता है।" राजधानी ने सोचभरे स्वर में  
 कहा - "उप कप्तान के बाद सहायक कप्तान जहाज के मुख्य  
 कामकाज करता है। मुख्य रूप से रात का काम इसे सफलता  
 पड़ता है। कर्मचारियों, गइसोकम्पास जैसे उपकरणों की देखभाल  
 इसी के लिए होती है। कर्मचारियों की शिक्षा इगूरी के मामले में यही  
 सफलता है। बन्दरगाह के बाहर, छोड़े होने के लिए जब जहाज को  
 छोड़ डालना होता है तो जगह का चुनाव और सारा काम इसी की  
 देखभाल में होता है। बीमार कर्मचारियों के इलाज करने तक की  
 निगरानी इस पर होती है।"

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००

१५५५ अथवा १५५६

पुस्तक संख्या १००



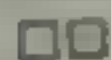
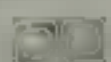




## “जगज की दुमरी

13- तेमा प्रष्टवट कि, उषर

फाड़ ही देगी।"

[illegible]

मिला।  
 "माझ्या दिसा भर्तिला माझ्याही को हा पर मने जगा जग  
 या." दुसरा जगाने न बोलला हा मुला।

“पना करने जा रहा था कि गन्धर्व अन्धकार में गिरा पड़ा  
हो मरे।”

"अमलम खान?"

या ही, विमने मनाद्वय सा प्रसिद्धा माण्डवली ३ साव प्रसिद्धा  
या, मण्डवली न वही ।

इदं त शोभन न निर निजया ।

[illegible]

शरणा शरण की आ । निरु ।

\* अनाम गान ने क्या कर दिया कि मन्त्रों का उच्चारण  
निश्चय ही सुनीयमान मान ले चुका है, मन्त्रों का मीठा  
होना, उससे अनाम उमर बढ़ाने का दुकान है। अनाम गान ने





1. 本報社址：上海南京路

1. **Figure 1**

१ इति गीतम् ।

प्रत्येक शीतल में गन्धीर स्तर में कहा-

५१-र से देखना चाहता हूँ। आ। ..... है क्या? ऐसी क्या चीज  
 है कि तुम उसे सबकी निगाहों ..... है?

— 10 —

[illegible]

३. १९५७-५८ में मम-१।

... का नाम भी देना पड़ेगा ।

... का नाम भी देना पड़ेगा ।

[illegible]

— १५ —



इन्तज़ाम था कि वह सब पर  
सके कि बोट को इन्तज़ाम  
मोच धरे स्वर में कह उठ।

"क्यों?"

वह जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की

"नाव?"

वह जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की  
बात पर जो इन्तज़ाम था वह जानता था कि वह सब की

इन्तज़ाम फोरम में हो गया।

"मेरे एक घण्टे में वह सामान लेकर आना है।"

मोच ने वह सामान लेकर आना है।

मोच ने वह सामान लेकर आना है।

मोच ने वह सामान लेकर आना है।

"जहाज पर अगर कार्पेंटर की जरूरत पड़े तो मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।  
मोच ने वह सामान लेकर आना है।

"मोच ने वह सामान लेकर आना है।"

"मोच ने वह सामान लेकर आना है।"





महा पदले आता श्री मिलेले। अथवा श्री पदले  
होते हे ही नवीन ज्ञान ही। ज्ञान ज्ञान ज्ञान ही

मन की है कि जिसने उसकी आज- १"

• 111 • 附 錄 四

[illegible]

क्या? अपने दाढ़ों को धोने को कहना है  
अधोक्ष्ण को आशा में आता है।

११।" जगन्मोहन के द्वारा १९३४ में ।

[illegible][illegible]

वो, जगमाहन का देखती रही।

"जवाब नहीं दिया तुमने?" जयभाहन बोला।

ਸੁਕਾਤਾ ਨਿ ਸਾਗਰ ਦੇ ਨੀਚੇ ਅਗਰ ਤੇਰੇ ਆਰ ਥੀ ਪ੍ਰਾਨਾ ਨਾ ਨਾ ।

<sup>a</sup> ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । १ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

जयगोहम बाबा ।

"और कहाँ ?"

"अग्निने का गोकुल रागी ने आग्ने पर पर क्रिसी का बाहु मार दिया।  
क्यों?"

“मैं कभी सही जानने का हाथ नहीं उठा था।” उसने शान्त स्वर में कहा।

• बाकी सवालों का जवाब •

"बाकी जगह शाश्वत मैं न बता सकूँ - उससे साक्षर स्वर में कहा - "श्रीनारा से ही पूछो तो शीघ्र रहेगा।"







ST-27-302-87

जहाज नम्बर 302-58







... लम्बा कोमें से गुमाया और  
... हो पर क निय पात  
... हाव और कल पला

[illegible]

करीब पाव थिनट २० ३३ ४० ५० ६० ७० ८० ९० १०० ११० १२० १३० १४० १५० १६० १७० १८० १९० २०० २१० २२० २३० २४० २५० २६० २७० २८० २९० ३०० ३१० ३२० ३३० ३४० ३५० ३६० ३७० ३८० ३९० ४०० ४१० ४२० ४३० ४४० ४५० ४६० ४७० ४८० ४९० ५०० ५१० ५२० ५३० ५४० ५५० ५६० ५७० ५८० ५९० ६०० ६१० ६२० ६३० ६४० ६५० ६६० ६७० ६८० ६९० ७०० ७१० ७२० ७३० ७४० ७५० ७६० ७७० ७८० ७९० ८०० ८१० ८२० ८३० ८४० ८५० ८६० ८७० ८८० ८९० ९०० ९१० ९२० ९३० ९४० ९५० ९६० ९७० ९८० ९९० १०००

अगमोक्तं समग्रं यथा किं उच्यते तद्वत्तु न च तत्राद्यं न च तत्राद्यं

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]







... १३ ... १४ ... १५ ... १६ ... १७ ... १८ ... १९ ... २० ... २१ ... २२ ... २३ ... २४ ... २५ ... २६ ... २७ ... २८ ... २९ ... ३० ... ३१ ... ३२ ... ३३ ... ३४ ... ३५ ... ३६ ... ३७ ... ३८ ... ३९ ... ४० ... ४१ ... ४२ ... ४३ ... ४४ ... ४५ ... ४६ ... ४७ ... ४८ ... ४९ ... ५० ... ५१ ... ५२ ... ५३ ... ५४ ... ५५ ... ५६ ... ५७ ... ५८ ... ५९ ... ६० ... ६१ ... ६२ ... ६३ ... ६४ ... ६५ ... ६६ ... ६७ ... ६८ ... ६९ ... ७० ... ७१ ... ७२ ... ७३ ... ७४ ... ७५ ... ७६ ... ७७ ... ७८ ... ७९ ... ८० ... ८१ ... ८२ ... ८३ ... ८४ ... ८५ ... ८६ ... ८७ ... ८८ ... ८९ ... ९० ... ९१ ... ९२ ... ९३ ... ९४ ... ९५ ... ९६ ... ९७ ... ९८ ... ९९ ... १०० ...

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

इस दृष्टिकोण के फल से यह सिद्ध होता है कि सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

सामान्य और सामान्य भी मिले।

ਜਾਂ ਜੀ ਜੀਵ ਜੋ ਦੁਖਾ ਲੀ ।”

“आशा थी ही सक्ती है।” देवगन धीमे से साराट स्तर में

"अस्य २३"

मगधराज ने कुछ नर, : १५।

गौडनगाल अपनै मध्य ५ लया रमा ।

• 10 मिनिट बीन मस ।

१५ अक्षरस्य सौन्दा ।

ये। आँखों में सतर्कता थी।

\* १११ \* १११ \*

[illegible][illegible]

... ..  
... ..  
... ..

...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...

यह सच है कि "द्विगज चोखाने ने सपाट स्तर  
भी कहा।

[illegible]

“साह—” हमका मतलब धीनर काइ है और या जगा हम  
 श्री ५००० स्टेशन पर इन्त रह हंग। कहने हंग, साहजलाल के हंग  
 धिनर मय—“को ये है यहा या नगर मयुने का इन्तजाम।”

दरवाज़े पर लुहा जगमगाते बाहर की लम्फ मजरा रही खामोशी  
से घातें सुन रही थी।













"हम भी १-२ दिन की छुट्टी हम  
 "मन में है कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे दें  
 नहीं दे देंगे। दूसरे दिन हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 की छुट्टी वाली छुट्टी को दूसरे दिन दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 नहीं दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग

सोचते हैं, हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग

"हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग

"हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग  
 कि हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग को २-३ दिन की छुट्टी दे देंगे। हम लोग

□□  
 □□

**मलानी।**


नरेश मलानी। वृद्ध २५ मई १९५५। नरेश मलानी की  
 पत्नी। पिछले पन्द्रह सालों से वृद्ध के साथ था। मलानी की पत्नी  
 जिस। मलानी के घर सामान्य था। मलानी की पत्नी की  
 मृत। वृद्ध पर अस्तर मृत पड़े रहता था। मलानी की पत्नी की  
 श्राव। चेहरा से निहाय ही शरीर फालतु भीतर से बाहर निकल रहा  
 लगने वाला, नरेश मलानी।

वृद्ध जैसे अश्वार्थ व्यक्ति के करने करने काम था। जिस  
 काम से वह काम करता है, मलानी को मृत जवानी बाद मलानी।  
 कोई भी काम भूलता नहीं था। वृद्ध उसी समय मलानी का हमेशा  
 साथ रहता था। पिछले पन्द्रह सालों से एक बार भी वृद्ध को उसके  
 काम पर नागज होने का मौका नहीं मिला था और मलानी का  
 दुश्म, लगभग वृद्ध का ही दुश्म माना जाता था।





ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥  
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥  
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥  
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥  
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥  
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥  
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥  
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥  
 श्रीहरिणे नमः ॥ १० ॥  
 श्रीकल्याणाय नमः ॥ ११ ॥  
 श्रीसुखाय नमः ॥ १२ ॥  
 श्रीसौख्ये नमः ॥ १३ ॥  
 श्रीशान्तिाय नमः ॥ १४ ॥  
 श्रीवैष्णवाय नमः ॥ १५ ॥  
 श्रीभक्त्याय नमः ॥ १६ ॥  
 श्रीप्रेमाय नमः ॥ १७ ॥  
 श्रीशुद्ध्याय नमः ॥ १८ ॥  
 श्रीज्ञानाय नमः ॥ १९ ॥  
 श्रीयोगाय नमः ॥ २० ॥  
 श्रीसत्ताय नमः ॥ २१ ॥  
 श्रीसत्ये नमः ॥ २२ ॥  
 श्रीदharmaय नमः ॥ २३ ॥  
 श्रीअहिंसाय नमः ॥ २४ ॥  
 श्रीस्वच्छे नमः ॥ २५ ॥  
 श्रीसौन्दर्याय नमः ॥ २६ ॥  
 श्रीशोभाय नमः ॥ २७ ॥  
 श्रीमङ्गलाय नमः ॥ २८ ॥  
 श्रीवैभवाय नमः ॥ २९ ॥  
 श्रीश्रेष्ठ्याय नमः ॥ ३० ॥  
 श्रीपरमात्मने नमः ॥ ३१ ॥  
 श्रीब्रह्मणे नमः ॥ ३२ ॥  
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ३३ ॥  
 श्रीशिवे नमः ॥ ३४ ॥  
 श्रीमहेश्वरे नमः ॥ ३५ ॥  
 श्रीनारायणे नमः ॥ ३६ ॥  
 श्रीहरिणे नमः ॥ ३७ ॥  
 श्रीकल्याणे नमः ॥ ३८ ॥  
 श्रीसुखे नमः ॥ ३९ ॥  
 श्रीसौख्ये नमः ॥ ४० ॥  
 श्रीशान्तिाय नमः ॥ ४१ ॥  
 श्रीवैष्णवाय नमः ॥ ४२ ॥  
 श्रीभक्त्याय नमः ॥ ४३ ॥  
 श्रीप्रेमाय नमः ॥ ४४ ॥  
 श्रीशुद्ध्याय नमः ॥ ४५ ॥  
 श्रीज्ञानाय नमः ॥ ४६ ॥  
 श्रीयोगाय नमः ॥ ४७ ॥  
 श्रीसत्ताय नमः ॥ ४८ ॥  
 श्रीसत्ये नमः ॥ ४९ ॥  
 श्रीधर्माय नमः ॥ ५० ॥  
 श्रीअहिंसाय नमः ॥ ५१ ॥  
 श्रीस्वच्छे नमः ॥ ५२ ॥  
 श्रीसौन्दर्याय नमः ॥ ५३ ॥  
 श्रीशोभाय नमः ॥ ५४ ॥  
 श्रीमङ्गलाय नमः ॥ ५५ ॥  
 श्रीवैभवाय नमः ॥ ५६ ॥  
 श्रीश्रेष्ठ्याय नमः ॥ ५७ ॥  
 श्रीपरमात्मने नमः ॥ ५८ ॥  
 श्रीब्रह्मणे नमः ॥ ५९ ॥  
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ६० ॥  
 श्रीशिवे नमः ॥ ६१ ॥  
 श्रीमहेश्वरे नमः ॥ ६२ ॥  
 श्रीनारायणे नमः ॥ ६३ ॥  
 श्रीहरिणे नमः ॥ ६४ ॥  
 श्रीकल्याणे नमः ॥ ६५ ॥  
 श्रीसुखे नमः ॥ ६६ ॥  
 श्रीसौख्ये नमः ॥ ६७ ॥  
 श्रीशान्तिाय नमः ॥ ६८ ॥  
 श्रीवैष्णवाय नमः ॥ ६९ ॥  
 श्रीभक्त्याय नमः ॥ ७० ॥  
 श्रीप्रेमाय नमः ॥ ७१ ॥  
 श्रीशुद्ध्याय नमः ॥ ७२ ॥  
 श्रीज्ञानाय नमः ॥ ७३ ॥  
 श्रीयोगाय नमः ॥ ७४ ॥  
 श्रीसत्ताय नमः ॥ ७५ ॥  
 श्रीसत्ये नमः ॥ ७६ ॥  
 श्रीधर्माय नमः ॥ ७७ ॥  
 श्रीअहिंसाय नमः ॥ ७८ ॥  
 श्रीस्वच्छे नमः ॥ ७९ ॥  
 श्रीसौन्दर्याय नमः ॥ ८० ॥  
 श्रीशोभाय नमः ॥ ८१ ॥  
 श्रीमङ्गलाय नमः ॥ ८२ ॥  
 श्रीवैभवाय नमः ॥ ८३ ॥  
 श्रीश्रेष्ठ्याय नमः ॥ ८४ ॥  
 श्रीपरमात्मने नमः ॥ ८५ ॥  
 श्रीब्रह्मणे नमः ॥ ८६ ॥  
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ८७ ॥  
 श्रीशिवे नमः ॥ ८८ ॥  
 श्रीमहेश्वरे नमः ॥ ८९ ॥  
 श्रीनारायणे नमः ॥ ९० ॥  
 श्रीहरिणे नमः ॥ ९१ ॥  
 श्रीकल्याणे नमः ॥ ९२ ॥  
 श्रीसुखे नमः ॥ ९३ ॥  
 श्रीसौख्ये नमः ॥ ९४ ॥  
 श्रीशान्तिाय नमः ॥ ९५ ॥  
 श्रीवैष्णवाय नमः ॥ ९६ ॥  
 श्रीभक्त्याय नमः ॥ ९७ ॥  
 श्रीप्रेमाय नमः ॥ ९८ ॥  
 श्रीशुद्ध्याय नमः ॥ ९९ ॥  
 श्रीज्ञानाय नमः ॥ १०० ॥



...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शकल क्या हुआ।

दोनों की निगाहें झटके पा लीं।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

भरे स्वर में कह लो ।

“मम नमो भगवते वासुदेवाय ॥” मन्त्रान् ३३ - ॥ ३३ ॥  
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

१७५१ वी वर्षापासून १७५२ च्या वर्षापर्यंत

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

15

गै। उनकी बातें सुनते रहे।

काने की किशक से है।"

[illegible]





[illegible]

...। आन्दा। या शोभन कथा है।

१ - अथवा नमो भगवते वासुदेवाय

“बाल गंगाधर तिलक-१” पृष्ठ १८१

2 4 6 8 10 12 14 16 18 20 22 24 26 28 30 32 34 36 38 40 42 44 46 48 50 52 54 56 58 60 62 64 66 68 70 72 74 76 78 80 82 84 86 88 90 92 94 96 98 100

ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਹੀ ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ ਹੋਵੇਗਾ।

— 31 —

[illegible]

— 44 —

॥ गङ्गा नमः ॥

1948 1949 1950 1951 1952 1953 1954 1955 1956 1957 1958 1959 1960 1961 1962 1963 1964 1965 1966 1967 1968 1969 1970 1971 1972 1973 1974 1975 1976 1977 1978 1979 1980 1981 1982 1983 1984 1985 1986 1987 1988 1989 1990 1991 1992 1993 1994 1995 1996 1997 1998 1999 2000 2001 2002 2003 2004 2005 2006 2007 2008 2009 2010 2011 2012 2013 2014 2015 2016 2017 2018 2019 2020 2021 2022 2023 2024 2025 2026 2027 2028 2029 2030 2031 2032 2033 2034 2035 2036 2037 2038 2039 2040 2041 2042 2043 2044 2045 2046 2047 2048 2049 2050 2051 2052 2053 2054 2055 2056 2057 2058 2059 2060 2061 2062 2063 2064 2065 2066 2067 2068 2069 2070 2071 2072 2073 2074 2075 2076 2077 2078 2079 2080 2081 2082 2083 2084 2085 2086 2087 2088 2089 2090 2091 2092 2093 2094 2095 2096 2097 2098 2099 2100 2101 2102 2103 2104 2105 2106 2107 2108 2109 2110 2111 2112 2113 2114 2115 2116 2117 2118 2119 2120 2121 2122 2123 2124 2125 2126 2127 2128 2129 2130 2131 2132 2133 2134 2135 2136 2137 2138 2139 2140 2141 2142 2143 2144 2145 2146 2147 2148 2149 2150 2151 2152 2153 2154 2155 2156 2157 2158 2159 2160 2161 2162 2163 2164 2165 2166 2167 2168 2169 2170 2171 2172 2173 2174 2175 2176 2177 2178 2179 2180 2181 2182 2183 2184 2185 2186 2187 2188 2189 2190 2191 2192 2193 2194 2195 2196 2197 2198 2199 2200 2201 2202 2203 2204 2205 2206 2207 2208 2209 2210 2211 2212 2213 2214 2215 2216 2217 2218 2219 2220 2221 2222 2223 2224 2225 2226 2227 2228 2229 2230 2231 2232 2233 2234 2235 2236 2237 2238 2239 2240 2241 2242 2243 2244 2245 2246 2247 2248 2249 2250 2251 2252 2253 2254 2255 2256 2257 2258 2259 2260 2261 2262 2263 2264 2265 2266 2267 2268 2269 2270 2271 2272 2273 2274 2275 2276 2277 2278 2279 2280 2281 2282 2283 2284 2285 2286 2287 2288 2289 2290 2291 2292 2293 2294 2295 2296 2297 2298 2299 2300 2301 2302 2303 2304 2305 2306 2307 2308 2309 2310 2311 2312 2313 2314 2315 2316 2317 2318 2319 2320 2321 2322 2323 2324 2325 2326 2327 2328 2329 2330 2331 2332 2333 2334 2335 2336 2337 2338 2339 2340 2341 2342 2343 2344 2345 2346 2347 2348 2349 2350 2351 2352 2353 2354 2355 2356 2357 2358 2359 2360 2361 2362 2363 2364 2365 2366 2367 2368 2369 2370 2371 2372 2373 2374 2375 2376 2377 2378 2379 2380 2381 2382 2383 2384 2385 2386 2387 2388 2389 2390 2391 2392 2393 2394 2395 2396 2397 2398 2399 2400 2401 2402 2403 2404 2405 2406 2407 2408 2409 2410 2411 2412 2413 2414 2415 2416 2417 2418 2419 2420 2421 2422 2423 2424 2425 2426 2427 2428 2429 2430 2431 2432 2433 2434 2435 2436 2437 2438 2439 2440 2441 2442 2443 2444 2445 2446 2447 2448 2449 2450 2451 2452 2453 2454 2455 2456 2457 2458 2459 2460 2461 2462 2463 2464 2465 2466 2467 2468 2469 2470 2471 2472 2473 2474 2475 2476 2477 2478 2479 2480 2481 2482 2483 2484 2485 2486 2487 2488 2489 2490 2491 2492 2493 2494 2495 2496 2497 2498 2499 2500 2501 2502 2503 2504 2505 2506 2507 2508 2509 2510 2511 2512 2513 2514 2515 2516 2517 2518 2519 2520 2521 2522 2523 2524 2525 2526 2527 2528 2529 2530 2531 2532 2533 2534 2535 2536 2537 2538 2539 2540 2541 2542 2543 2544 2545 2546 2547 2548 2549 2550 2551 2552 2553 2554 2555 2556 2557 2558 2559 2560 2561 2562 2563 2564 2565 2566 2567 2568 2569 2570 2571 2572 2573 2574 2575 2576 2577 2578 2579 2580 2581 2582 2583 2584 2585 2586 2587 2588 2589 2590 2591 2592 2593 2594 2595 2596 2597 2598 2599 2600 2601 2602 2603 2604 2605 2606 2607 2608 2609 2610 2611 2612 2613 2614 2615 2616 2617 2618 2619 2620 2621 2622 2623 2624 2625 2626 2627 2628 2629 2630 2631 2632 2633 2634 2635 2636 2637 2638 2639 2640 2641 2642 2643 2644 2645 2646 2647 2648 2649 2650 2651 2652 2653 2654 2655 2656 2657 2658 2659 2660 2661 2662 2663 2664 2665 2666 2667 2668 2669 2670 2671 2672 2673 2674 2675 2676 2677 2678 2679 2680 2681 2682 2683 2684 2685 2686 2687 2688 2689 2690 2691 2692 2693 2694 2695 2696 2697 2698 2699 2700 2701 2702 2703 2704 2705 2706 2707 2708 2709 2710 2711 2712 2713 2714 2715 2716 2717 2718 2719 2720 2721 2722 2723 2724 2725 2726 2727 2728 2729 2730 2731 2732 2733 2734 2735 2736 2737 2738 2739 2740 2741 2742 2743 2744 2745 2746 2747 2748 2749 2750 2751 2752 2753 2754 2755 2756 2757 2758 2759 2760 2761 2762 2763 2764 2765 2766

2000

“इति श्री कृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य वचनम् ॥”

"कृष्ण ! परमेश्वर किं इति ज्ञेयम् ?"

“हो। रस्तेपरि बिहल लागे छ। गणम हा म. ग. १०५५ ५५५५

॥ ३ ॥ गंगा नदी का जल पवित्र माना जाता है।

भी इस सत्यना चाहता है। और यही हमारे काँच का काँच है।

महाराज साहब हैं और जहाँ पर कहानी लिख रहे हैं वहाँ पर

म. चन्द्रका नाइका है कि जहाँ व. रूखा हाथ है ।

"अथ त्वान्नाम ज्ञानं विद्यायाः" मन्त्र-सौ नमः नमः विद्यायाः

"दादा दादा" राकेशान ने हिलचिल देकर भाग जाने पर कहा

संस्कृत विद्यापीठ

“सत्यं” - विद्वान् न तान् भाग्यद्वयं प्राप्नुयान् “सत्यं” ।

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पान्थ मनीना के इतिहास पर प्रकाश डालेगा।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

...रा दान म् कश्चिन्मया ...

विष्णुः कुरुते मया विदितं तदा गच्छति

— २४ —

मत्स्यपुराण की मदन तिली ।

אשר יצאנו ממצרים ונעלה אל ה' ונבנה בית לך

१३. सत्यमेव जयते । १४. सत्यमेव जयते ।



अच्छा मैं करना के भाव समझ। "क्यों साराब जब तक नहीं आता  
दे भूत हो।"

"मैं माफ़ी - ।"

"तब तो," मलानी ने धिरे स्वर में कहा - "जब इस बात का  
जिह्वा रिश्ते में मत करना पर इतना पर इस बात काई चर्चा नहीं  
आया। उसीलिए मैं तुम्हें माफ़ के इस प्रार्थना हिस्से में -"

"न जी - ।" मलानी ने घबराते दम से सिर हिलाया और  
तब यही वह दम में बिह्वलता कहा गया।"

मलानी का भावभरी निगाह ऑफ हाथों की टांगों की  
पर जा टिकी।

परम अपने साथी के साथ दूर घण्टा बाद आया और मलानी  
से बात की।

"गुर्जर सिंह मूजी में बात हुई। इन्हीं चर्चा का वाता कि  
रोशन कुमार उसका रिश्तेदार नहीं था। वो खुद का उपन्यासकार  
कह रहा था और जहाज की भीतर से देखने के लिये कह रहा था।  
इसके लिये रोशन कुमार ने उसे दस हजार दिए तो वह उसे जहाज  
दिखाने के लिये यहां ले आया।"

"तुम्हें भी पूरा विश्वास था कि वो उसका रिश्तेदार नहीं होगा।"  
मलानी के होंठ भिच गये।

"थोड़ा और इन्हीं चर्चा का गुर्जर सिंह बोला कि रोशन  
कुमार ने ही, इसी जहाज का दिखाने के लिये कहा था। यान कि  
गुर्जर सिंह सीधे, उसे इस जहाज पर नहीं लाया था।"

"दस हजार रुपया खर्च करके, सिर्फ जहाज की भीतर से  
देखना ही उसका मकसद नहीं रहा होगा।" मलानी ने बतार निगाहों  
से रिश्ते का - "दिन में वो जहाज के भीतरी रास्ते को देख  
सकता और गन भी -" वह इस प्रार्थना हिस्से में आ पहुंचा। उनमें  
आसुर में होने - "यह तो साफ जर्जर है कि उन्हें यकीन है कि  
धुआं माफ़, यहां काई - उन काम करते हैं और उसी गनन उस  
को मान्यता है। के लिये वो यहां आये थे। क्यों, वो कौन थे, इन  
बातों का जवाब जना जरूरी है।"

"इन्हें दूधने की कांज करे।"

"काई जल्द नहीं।" मलानी शब्दों को बहाकर बोला - "तब





१७ वेला भूत जी ज्ञानेन

ਮਧੀ ਲੀ ਏਸ । ਜਗਮੀਤ ਸਿੰਹ ਨਾਨਕ ਦੇਵ  
ਜੋ ਮੇਰਾ ਪਿਆਰਾ ਹੈ । ਤੂੰ ਮੇਰਾ ਹੁਣੇ ਦਲੀਪ  
ਮੇਰੇ ਗਲਾਂ ਦੀ ਰੱਖਿਆ ਕਰ । ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਅੰਤਰ ਵਿਚ  
ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ ਹੈ । ਜਗਮੀਤ ਸਿੰਹ ਨਾਨਕ ਦੇਵ  
ਮੇਰੇ ਸਾਰੇ ਦੁਖਾਂ ਦਾ ਹਰਾਮੀ । ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਅੰਤਰ ਵਿਚ  
ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ ਹੈ । ਜਗਮੀਤ ਸਿੰਹ ਨਾਨਕ ਦੇਵ

ਮੇਰੇ ਸਾਰੇ ਦੁਖਾਂ ਦਾ ਹਰਾਮੀ । ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਅੰਤਰ ਵਿਚ  
ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ ਹੈ । ਜਗਮੀਤ ਸਿੰਹ ਨਾਨਕ ਦੇਵ

ਮੇਰੇ ਸਾਰੇ ਦੁਖਾਂ ਦਾ ਹਰਾਮੀ । ਤੂੰ ਮੇਰੇ ਅੰਤਰ ਵਿਚ  
ਬੈਠਾ ਹੋਇਆ ਹੈ । ਜਗਮੀਤ ਸਿੰਹ ਨਾਨਕ ਦੇਵ

सभी जब मैं इस काम पर लगा था और—

“ਅਜੇ ਦਿਓ”

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
श्रीकृष्णार्चनं । श्रीकृष्णाय नमः ।  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

३७।

“वापस है।”

“सूत्रों”

दे। निकाल-।

[illegible]

"धनलब रु नही देगा।"

सोह नलगन ते माफता हूँ मज्जी - मं 'ह' . . . ५००

[illegible]

साथ धसल करुगा ।”

राहनलाल ने तर्कना कश किया ।

“हरे से ज़ेब साफ़ पढ़ने ली आ है।”

“ये एवास भी जसा हर दे,” मोहनदास ने धृ उमसा ।

“समझ लो, डाकरी में सिगरेट बिया।” जगमोहन ने जल बुझाते

428

... कि देवगत्र चौहान

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

... सोहननाल बाला।  
... लेकर आ। उन्हें देखनी

[illegible]

हमारे पास है ।

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

जब तक कि हमारे अंदर ऐसे हिस्से हैं जो हमें अपने कर्तव्य से बाधते हैं, तब तक हम अपने कर्तव्य से बाधित हैं। जब तक कि हमारे अंदर ऐसे हिस्से हैं जो हमें अपने कर्तव्य से बाधते हैं, तब तक हम अपने कर्तव्य से बाधित हैं।

“अब उन कामों को और दूर के इलाकों का देखना बंद इन बातों को तो बर्झान हो गया कि जवाब के उस पक्ष पर शिष्ट पर धर्मीयता काइ मरत गैरकानूनी काम होता है।” इलाका चौकस की अग्रात में दृढ़ता थी—“और उन कामों को पूरा बंद सावधानी से करता है।”

गणेशाय नमः, ईश्वरं प्राप्ते अथा ।

उस आठ वीं-सीं कैसरों की, जिन्हें जहाज के प्राइवेट हिस्से में लिया, मुसला कटोरे कम से वे उठाकर लाये थे। वी०सी०आर० पर लगाकर उन्होंने एक-एक कैसर को देखा।

पान्थ, मैं भी सब कंस्टेबल हूँ।

“यह क्या। इन कैसेटों में तो किसी का भी चहना नहीं है।”  
साहन्नाह ने हँसी तो निकला— “हर कैसेट में जगाह के उस प्राइवेट  
हिस्से का दृश्य है। कहीं तो वो गैलरी है, जहाँ से हम भीतर प्रवेश  
हुए थे। कभी पूवमूर्ति बैठरूम है। तो हवन डाईनरूम। या फिर  
छाट छाट कबिन। खेनने के लिए बड़ा सा हाल। ऐसी और भी कई  
जगह। लेकिन एक भी इन्सान का चेहरा कैसेटों में दर्ज नहीं है।  
कितनी अजीब बात है—।”





44-38861-302-114







नदीय खान ने पूजा ।  
देवराज चौहान ने बनाया ।

“आमारा तो भय है। यहाँ भयानक गोरु मारा जा रहे हैं।  
आमारा तो बड़े डरने लगे।”

“सब कुछ है।”

“सिंह है। सिंह ने हमें भूखी दी। भयभीत होकर भागने लगे।  
वैदे। इस भयानक में सभी भूखी होकर भागने लगे।  
नदीप हीन ने नदीप हीन कागज की तरह झटका दिया।

देवान हीन ने देवान हीन कागज की तरह झटका दिया।  
नदीप हीन ने नदीप हीन कागज की तरह झटका दिया।

देवान हीन ने देवान हीन कागज की तरह झटका दिया।  
लेने लगा।

नदीप हीन ने देवान हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।

“अच्छा परमा देवता हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।

देवान हीन ने देवान हीन कागज की तरह झटका दिया।  
नदीप हीन भी उठा।

“फोड़ लाने के लिए है इन नदीप हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।

“नदीप हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।

“अच्छा आदर है। अनन्तर।

“हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।

००

००

हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।

हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।  
हीन हीन कागज की तरह झटका दिया।



जुलै १९५१ १००



जगमोहन गहरी सांस लेकर रह गया।

"जो भी हो, जहाज पर हम अपनों बनना ही नहीं कर सकते।"

"क्यों?"

"बूटा का जो जहाज है। मछर के लोगन बूटा भी गया होगा।

अपने प्राइवेट हिस्से में होगा और अब तक उसे मान्यता नहीं दी होगी कि कोई ताला खोलकर, उसकी प्राइवेट जगह में भागा है। हमारे चले भी वीडियो फिल्म में उसने देख लिए होंगे। हमें इस बात की क्या सख्त पहचान होगी, जब कि हम भीतर जाने की सोच रहे हैं।"

सोहनलाल ने देवराज चौहान का देगा।

"यह तो अब देवराज चौहान ही बताएगा कि हमने क्या सोच रखा है कि बूटा के प्राइवेट हिस्से में, उनकी निगाहों से बचकर कैसे प्रवेश किया जा सकता है।" सोहनलाल का स्वर गम्भीर था।

देवराज चौहान बगबर उन दोनों को देख रहा था।

"इस बात का जवाब मैं जहाज पर पहुंचकर ही दूंगा।" देवराज चौहान ने कहा।

"अब क्यों नहीं?"

"कुछ बातें मौके पर बताई जाती हैं। वैसे भी मैं अभी पक्के नतीजे पर नहीं पहुंच पाया हू कि किस तरह बूटा के उस प्राइवेट हिस्से पर पहुंचना है। और कुछ भी करने से पहले, जहाज पर अनिता गोस्वामी से मुलाकात करूंगा। हो सकता है कि उसकी बातों से भी हमें अपने काम में सहायता मिले।" देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

सोहनलाल ने गोली वाली सिग्रेट सुलगाई।

कुर्सी पर बैठे बैठे पुश्त से सिर टिकाकर आँखें बंद कर लीं जगमोहन ने।

"जो-जो सामान माथ में ले जाना है, उसके बारे में सुन लो।"

देवराज चौहान ने सोहनलाल से कहा।

"ये आठों वीडियो कैसेट तुमने जहाज पर ले जानी हैं।"

"वापस—।" सोहनलाल अजीब से स्वर में कह उठा।

"हां।"

"लेकिन इनका इस्तेमाल क्या है? ये तो खाली हैं। बूटा के प्राइवेट हिस्से की रिकॉर्डिंग है। जिनमें कोई इन्सान नजर नहीं—।"

"ये बात की बात है कि इनका इस्तेमाल क्या है।" देवराज चौहान ने बान काटकर कहा— "तुमने इन कैसेटों को जहाज पर ले

... तो मैं भी ...  
... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...

है। कोई ऐसा नुकीला दीया, जिससे कि धीमे धीमे, बस धीमे धीमे  
को उधोता जा सके।" देवराव चौहान ने सोचभरो सार में कहा।  
"और—"

"अभी तो इन सब चीजों का इत्ताम करो। कुछ और था।  
मे आया तो क्या हुआ।"  
सोहनलाल मिर हिलाकर रह गया।  
"इसका मतलब कि तुम्हारे दिमाग में कोई चीज तो भा चुकी  
है।" जगमोहन ने कहा।

"हां।"

"क्या?"

"इस बारे में जहाज पर ही बात करो। अभी यहाँ नहीं बोल  
सकती है। उनके बारे में सोच रहा हूँ।"

"जहाज कब बन्दरगाह में रवाना होगा?"

"बन।" देवराव चौहान ने कहा— "किस दिन में बन्दरगाह के  
आसपास अलग अलग हमें बन्दरगाह पर पहुँचा है।"

□□

□□

जहाज का लहर उठाया जा चुका था। सब यारी जहाज में  
पहल चुके थे। कुछ अपने केबिन में थे तो कुछ धूप में ही डेक पर  
छड़े थे।

जहाज का घण्टा (मायन) कई बार बज चुका था। केबिनो में  
लग छोटे-छोटे स्पीकरों से मध्यम-सो आवाज निकलकर, इस बात  
की सूचना दे रही थी कि जहाज रवाना होने वाला है। डेक पर लगे  
स्पीकर, वहाँ छड़े यात्रियों को भी इस बात की सूचना दे रहे थे।

और फिर धीरे-धीरे जहाज समन्दर की लानी पर रवाना लगा।  
बन्दरगाह धीरे धीरे दूर होने लगा। घण्टा बार-बार बज रहा था।  
धीरे धीरे घण्टा बजना बंद हो गया। जहाज पन्द्रह मिनट में ही समुद्र  
समन्दर की लानों पर गस्तार के साथ दौड़ना शुरू हो चुका था और  
गुम्फे सीढ़ बहती जा रही थी।

शाम के गार बज रहे थे।

जहाज में अखिरकार यही प्रयत्न अपने केबिनो में था।

सोहनलाल के नाम में पन्द्रह नम्बर केबिन बुक थी। पन्द्रहवाँ

1. 0. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100.

देवराज चौहान पांच नम्बर केबिन में था।  
 घंटे पर वो ही में रुक गया था, जब वह बुझा करके मरीच  
 खान से मिला था। फ्रेचकट दाढ़ी और मूंडे इसके अगला गिर पर  
 पी कैंप लगा रही थी। उसने ऐसे रंग उग अपना रंगे थे कि  
 देखने वाला उसे फौजी ही समझे। होर्ने के बीच हाथस सुनगा था  
 बुझा सिगार फसा हुआ था।  
 केबिन में सिगार बैद, फर्श पर कार्पीन और टेबल के अगला  
 दो कुर्सिया थीं। अटैच बायस्कम था। दरवाजा खोलने पर सड़े तीन  
 फीट की गैलरी थी, जिसके सामने की लड़न में और टांगे बाये हर  
 तरफ केबिन बने थे। जिनमें यारी थे।  
 इस वक्त गैलरी खाली नजर आ रही थी।  
 देवराज चौहान ने इन्टर कम पर लम सविम को फोकी के लगे  
 गार्डर दिया। उसके बाद कुर्सी पर बैग और सिगरे सुनगा ली।  
 दस मिनट में ही वेटर कोपी ले आया।  
 "क्या नाम है तुम्हारा?" देवराज चौहान ने पूछा।

राजन" वेटर ने कहा।  
देवराज चौहान ने पनाम का नोट निकालकर उसे धमाया।

"इतनी क्या जरूरत थी सर?"  
देवराज चौहान ने मुस्कुराकर एक और सौ का नोट निकाला

और उसके ताक बढ़ाया।  
"और क्या सेवा कर सर?" वेटर राजन नोट धामन हुए बोला।

"सेवा भी बना दूंगा।" देवराज चौहान ने सिग्रेट रेशा ट्रे में  
रखी - "आने वाले को फौरन जेब में डान लेना चाहिए।"

वेटर ने नुमन नोटों को जेब में डाला।  
"जहाँ।"

वेटर चला गया।

देवराज चौहान ने कॉफी उठाई और सोचमरे ढंग में एक-एक  
घूँटें, कॉफी समाप्त की फिर उठकर केबिन का दरवाजा बंद करके  
मिचकी चढ़ाई और बेंड पर रखा सूटकेस खोलकर उसमें पड़ा सारा  
सामान निकाला। उसके बाद सूटकेस के तने की परत उठाई तो नीचे  
मइबैर लगे दो रिवॉल्वर और फालतू राऊण्ड नजर आये। देवराज  
चौहान ने दोनों रिवॉल्वर उठाकर बाहर रखे फिर तले को वैसे ही फिट  
किया और सारा सामान वापस रखकर सूटकेस बंद किया फिर एक  
रिवॉल्वर तफिये के नीचे रखा। दूसरा उठाकर कपड़ों में छिपाया और  
बाहर निकलकर, दरवाजा बंद करने के पश्चात् वो आगे बढ़ा और  
छा नम्बर केबिन पार करके तीन नम्बर के सामने ठिठका।

दरवाजा भीतर से बंद था।

देवराज चौहान के धपपाने पर जगमोहन ने दरवाजा खोला।  
देवराज चौहान ने भीतर प्रवेश किया। दरवाजा पुनः बन्द हो गया।  
देवराज चौहान ने रिवॉल्वर निकालकर उसे दी।

"इसे रख लो।"

जगमोहन ने रिवॉल्वर लेकर, अपने कपड़ों में रख ली।

देवराज चौहान कुर्सी पर बैठ चुका था।

"अब तक तो सब ठीक रहा -।" जगमोहन ने कहा।

"हां।"

"आगे का क्या प्राग्राम है? सुफारसी क्या योजना है? दूग के  
उप फ्राईवर्ट हिस्से में कैसे प्रवेश करना है?"

"आज रात दस बजे अनिता गोस्वामी से मिलना है।" देवराज  
चौहान ने हल स्वर में कहा - "उसके बाद ही दूग बारे में बात कर लें।"







... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...

... की ...

... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...

... की ... म ... की ... म ...

... की ... म ... की ... म ...

... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...

... की ... म ... की ... म ...

... की ... म ... की ... म ...

“तुमने धावणा सुनी?”

“तन्मार्ग की ... म ... की ... म ...  
ने उसे देखा।

“हा—।”

... की ... म ... की ... म ...  
... की ... म ... की ... म ...

... की ... म ... की ... म ...

“तीन महीने पहले—”

“हा। तीन महीने पहले भी तुमने अपना तन्मार्ग मकाया था  
और आज भी मना रहा है।” देवराज कोशले ने गर्मीय स्वर में  
कहा— “मग छवान है कि आज की पार्टी आजकलका रंगी है तुमने—”

“क्या मतलब?”

“शापद बूटा जानता है कि उस दिन जो लोग दरबार का  
ताना मालूम कर, उसका फाड़नेट हिस्से में गये थे, वो इन्हीं लोगों में है  
और—।”

“व बात बूटा को कैसे मान्य हो सकती है।” जगमोहन ने  
बात काटी।

“अब हमने भीतर प्रवेश किया तो निगताली करने वाले शीश्या  
कैसा मन रहे थे। यानि कि एक कैमरे उसके पास है जिससे हम  
देखा है। अब लगता है कि निगताली करने कैमरे के साथ बातचीत

१००० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००१ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००२ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००३ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००४ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००५ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००६ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००७ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००८ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १००९ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 १०१० ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

“...  
...  
...  
...  
...  
...”

कोई भी तो है जारी रखें।”

“...  
...  
...”

मनुष्य को ज्ञान के द्वारा ही परमात्मा से मिलना है। जो व्यक्ति अपने मन और शरीर को नियंत्रित कर सके, वह ही परमात्मा का अनुभव कर सकता है।

[illegible][illegible]

“य इमं वाचं मा शृणुष्व”

“... ३१ धी समता देना।”

— ११५ —

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

तब ही लखनऊ गया।

भयभीत पर गौर की।



ध्वज धारण कि। अतः न ईश्वर ने बनाया मग धा। १२-१ उसका  
जोत वा मग ईश्वर ने और हमारे भतीजों को भीतर देकर, न-  
से भाग निकली। जो सहाय है यह कम कम ही और ।"

"यह तो नहीं तो मग सा। ये लोग तो नहीं तो मग है " मग सा  
कह उठा।

"करी-१"

"वा जी तो, अगर ईश्वर इस धातु का ईश्वर है तो ईश्वर  
मे इसी भाग हरकत सामने है। अगर ईश्वर ईश्वर है तो  
तो, मग के नार मे मग नार है तो। एक एक की न ही उन  
ना है। निम्न मे नार कम वाली उनकी हरकत मे ही है  
कि ईश्वर नहीं जानते मग क्या नारा कर रहा है। मग न कि  
मग से ही भी मग है तो नहीं जानता।"

"तो मग है। एकाग्र करना ही है। लेकिन यह मग  
नारा नही है। मग क्या है, हीकत क्या है। हम नहीं जानते।  
मग जानने की कोशिश करो।" वृण के मग मे आदेश था "और  
मगामी अभी तक आता है। तब के उसका आवाज रहना हमारे  
लिए ठीक नहीं।"

"सर। मुन्दा मे हमारे आदमी हर जगह उसे नारा कर रहे  
हैं। एक बार तो हमारे आदमी के हाथ लग गई थी लेकिन साने  
किस उसकी जान लेकर भाग निकली। उसके नार आत ही हमारे  
आदमी उसे फौरन खस कर दगे। वो बनने वाली नहीं।" मलानी ने  
जल्दी से कहा।

"मुन्दा ये शब्द मे कब से सुन रहा है।"

"सर। निन्दा की कोई बात नहीं। वो पूर्वज के पास भी नहीं  
जा सकते हैं। गड़ तो पूर्वज साने उसकी बात नहीं सुनेंगे। और  
मुन्दा उसे हमारे हान कर दगे। मैंने साग इन्तजाम कर रखा है।"

"मे मुन्दा इन्तजाम ई बार मे नहीं जानना चाहता।" वृण  
के नार पर नागामी के भाव उभरे "मे चाहता हूँ अनेक  
मगामी की मग कर दिया तावे। जो हमारे लिए मुन्दावर हाथी  
कर सकते हैं।"

मलानी कुछ न कह सका।

"जाओ। कोशिश करो कि पासे मे उन लोगो से पहचाना जा  
सके।"

"जी, मग ईश्वर शिरी करना है " मलानी ने पूछा।

“यहाँ भी नी साढ़े जी बने अपने रंग पर होगी। उस वक्त कुछ  
ही हो जाय जहाँ न गेका जायगा। जहाँ न गेका सता - कोई इस बात  
ही पता न भी नहीं करेगा। वैसे हम वहाँ तक निकलने वाले पढ़ेंगे”

“कमिन् यही नी इस का वक्त होगा।”  
“सक है। वहाँ पहुँचते ही जहाँ न गेका ले- और माल गिरीव  
कर लेना।” कहने के साथ ही बूग उड़ खड़ा हुआ। नीचे पर शांत  
भाव में - “वैशाली क्या है।”

“जो यही, अपने करियर में।”

“भयानक।”

मलानी चला गया।

पान मित्र बाद ही सत्री सत्री वैशाली न भीतर कदम रखा।  
वैशाली कोई भार नहीं, जो ही थी, जिसमें जगमगान मित्र  
था। तो भोक्ता गोस्वामी की पोसी बनी बनी थी, इस वक्त उसका  
खुबसूरती को चार चांद लग रहे थे।

“हाय डार्लिंग -” वैशाली ने जान लेने वान अज्ञान में कहा।  
उस देखते ही बूग के चर पर भीगी मुस्कान फैल गई।

□□

□□

जहाज के ग्राऊंड फ्लोर पर स्थित पार्टी हॉल इतना बड़ा था  
कि वहाँ छ सौ व्यक्तियों के बैठने का इन्तजाम था। वही वक्त में  
टेबल थी। हर टेबल के गिरे चार कुर्सियाँ थी। एक तरफ बग सा  
स्टेज बना हुआ था। जो इस वक्त गेशान में स नमक रंग था।  
छ साल सौ लोगों के खड़े होने का इन्तजाम था। वहाँ अज्ञान  
की सख्या भी काफी थी।

उस हॉल में आने जाने के बहुत दरवाजे थे।

एक तरफ वही वक्त सौ फीट में ज्यादा लम्बा वार काउन्टर था।  
वार काउन्टर के पीछे वही वक्त पन्द्रह वार टेबल सत्रिस के लिये  
माजूर थे। टेबल पूरी नहीं भरी थी। फिर भी वहाँ तीन माढ़े तीन  
सौ के लगभग लोग मौजूद थे। लोगों की बाने करने - हसने और  
ठहाका की आवाजें वहाँ गूँज रही थी।

स्टेज पर डाम शुरू हो गया था। एक खुबसूरत लड़की, चार  
अन्य लड़कियों के साथ डाम कर रही थी। उसके शरीर पर नमक  
के ही कपड़े थे। कोई उसकी तरफ ध्यान दे रहा था न कोई अपनी  
बानो में व्यस्त था। काँक्रेट पार्टी अभी शुरू नहीं हुई थी।

1. 凡在本行开立存款账户的存款人，均可向本行申请开立支票。
 2. 支票的出票人必须是在本行开立存款账户的存款人。
 3. 支票的金额必须与存款账户的余额相符。
 4. 支票的有效期为自签发之日起10日内。
 5. 支票的收款人必须为本行开户的存款人。
 6. 支票的用途必须符合国家有关规定。
 7. 支票的签发必须使用本行规定的支票格式。
 8. 支票的签发必须加盖本行规定的印章。
 9. 支票的签发必须使用本行规定的墨水。
 10. 支票的签发必须使用本行规定的语言。

[illegible][illegible]

— 100 —

[illegible]

अथः ॥ १ ॥

॥ १ ॥

ਸ੍ਰੀ ਮਾਤਾ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਪਿਤਾ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਪੁਤ੍ਰਾ ਜੀ ਸ੍ਰੀ ਪੁਤ੍ਰੀ ਜੀ ।

आप सब लोग हाथ धोकर बैठ जाइए। जो आप लोगों ने  
मेरा जन्मदिन की पार्टी में आकर, भाग लिया है। जन्मदिन की  
पार्टी में भाग लेना पानी का इलाक़ा दिया गया है। पानी  
है। आप सब इस पानी का पूरा भोजन करें। इसके साथ ही  
बगीचे में मोड़क पास में आदमी को धमका। फिर रुक से उतरकर  
आप सबका हाथ धोकर बैठ गया। दोनों गजनें सबके से बराबर  
उम्मेदों साथ थे।

रखन में नजर आने जाने लोगों से ऐसी ही हो करता जैसे बड़ा  
रहा। इस के चेहरे पर खल-खल मुस्कान पड़ी थी। बूढ़ा बार  
फास्टर के एक पक्षी की बार टेम्पर ने भी तो गार करके दे में  
गुल्लार गुल्लार नरक बड़ा दिव।

हमने देन उम्मा और दान सड़ लोमो की तरफ घूमने हुए  
हमने उम्मा तर में दोला ।

"अपनी शक्ति, मेरी लक्ष्मी और मेरे नाम।" इसके साथ ही  
हृदय में एक ही बार में वेग खानी कर दिया।

[illegible][illegible]

१. छात्रों को शिक्षित करना।  
 २. छात्रों को नैतिक शिक्षा देना।  
 ३. छात्रों को नैतिक शिक्षा देना।  
 ४. छात्रों को नैतिक शिक्षा देना।

[illegible]

अद्वैत सारक मंत्र ।  
 ॐ ध्यानं वागं हि विष्णुं शिवं ।  
 ब्रह्मणोऽस्य भवति ।  
 आदमी मां भी कुरुतां ।  
 निरुद्धं दुर्गं नरुद्धं ।  
 याः प्रियं देव तं नरुद्धं ।  
 श्रीरामे नमः ।  
 श्रीरामे नमः ।  
 श्रीरामे नमः ।

जिसकी भी निम्नलिखित बातें होनी चाहिए—

दशक संवत् मंगल १४ ने पंच दश ना शिव का आर

पुत्री है।

हम भी सुझा ही गयी।

पुमानर उस दशा।

"हम पागलाना?"

"हम"



1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity and transparency of the financial system.

2. The second part of the document outlines the various methods used to collect and analyze data. It describes how different types of information are gathered and how they are processed to generate meaningful insights.

3. The third part of the document focuses on the role of technology in modern data management. It explores how advanced tools and software can enhance the efficiency and accuracy of data collection and analysis.

4. The fourth part of the document addresses the challenges associated with data security and privacy. It discusses the risks of data breaches and the measures that can be taken to protect sensitive information.

5. The fifth part of the document concludes by summarizing the key findings and recommendations. It highlights the need for continuous improvement and innovation in data management practices.

१. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 २. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ३. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ४. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ५. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ६. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ७. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ८. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 ९. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।  
 १०. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

1. The first part of the document is a letter from the President of the United States to the Congress, dated January 3, 1862. It is a message of condolence to the people of the State of California, who have been afflicted by a severe drought and famine. The President expresses his sympathy for the suffering and his hope that the Congress will take prompt action to relieve the distress.

[illegible]

...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...

[illegible]

1. 凡在本行开立存款账户的客户，均可向本行申请开立定期存款账户。  
 2. 定期存款账户的开立，须由客户填写《定期存款开户申请书》，并提供有效身份证件。  
 3. 本行定期存款账户分为整存整付、零存整付、存本付息、零存零付四种类型。  
 4. 定期存款账户的期限分为三个月、六个月、九个月、十二个月、十八个月、二十四个月、三十六个月、四十八个月、六十个月、七十二个月、八十四个月、九十六个月、一百零八个月、一百二十个月。  
 5. 定期存款账户的利率按中国人民银行规定的利率执行。  
 6. 定期存款账户的利息按季结息，到期一次支取本金和利息。  
 7. 定期存款账户的提前支取，须由客户填写《定期存款提前支取申请书》，并提供有效身份证件。  
 8. 定期存款账户的提前支取，按活期存款利率计息。  
 9. 定期存款账户的销户，须由客户填写《定期存款销户申请书》，并提供有效身份证件。  
 10. 定期存款账户的销户，按销户时的利率计息。

मिलते ही शोर पड़ गया ।

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

*[Faint, illegible handwritten notes]*

— 177 —

*[Faint, illegible handwritten notes]*

## श्रीन देता अनाद ?

[illegible]

३ पृष्ठा ।

नहीं।

1. The first step is to identify the problem or question that needs to be answered. This involves understanding the context and the specific requirements of the task.

— 22 —

[illegible][illegible]

1911

॥ ३॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उसे गोली मार दी गई।"

ਸਰ ਸਾਹਿਬ ਜੀ ਤੇਰੇ ਹੋ ।

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२. श्री कृष्ण मुस मरुत के तहत बसाव का ३. अलग अलग

३३३३।

371

...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...

[illegible]

7-11-1955

चार आसस्टेंट थे।

मलानी ने उसे देखा :

[illegible]

निः शङ्कं गच्छति यः शरीरं भक्ष्यं च विनश्यति न

[illegible]

इस बार मैं विनोद ज्योति से ज्यादा कर सका तो फल में  
शुक्रम में लखवारे की अपनी सामने देखना चाहता हूँ ।

गुप्तं म कर्त्तुं न श्या म ज्ञानो व्याप्य निरुद्धा नृना गमा

☐ ☐

देशाज गीतन के केरिन से जगमगन् आर सोननखान मोरुद  
ध,

"जब बाइर्मा की सैन्य बल के प्रलापन पर धर्म और राष्ट्र  
गन्धर्व नहीं था।" सत्यनारायण ने गम्भीर स्वर में कहा "यदि  
महा प्रलय होगा तो न होगा, इस पर मैं सन्देह नहीं करता कि इस  
दुर्गम में श्रेष्ठ हो सकेगा।"

[illegible]

२३. १००००० १०००० १००० १०० १० १

“समं ज्ञानं हीनं च वाचं । तद्वत्तु यत्तु च ॥” इति ।  
प्रागुक्तं ।



“क्या है?”

“क्या है?”

“क्या है तुम्हारा क्या कहना?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”

“क्या कहना है?”





— 10 —



Figure 1. The effect of the concentration of the *Agrobacterium* suspension on the transformation efficiency of *Agrobacterium* strains.

[illegible]
$$P_0 = \frac{1}{\pi} \left( \frac{\partial^2}{\partial x^2} + \frac{\partial^2}{\partial y^2} \right) P$$

*Journal of Management Education* 30(6)p.789-804

可也 可也

*Journal of Management Education* 30(6)p. 789-804

*(continued)*

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..





[illegible]

बैशाली की आँखें सिकुड़ीं ।  
 "ओ भाई, मैंने कहा था कि तुम मेरा हाथ नहीं छोड़ोगे।  
 नापसन्दाही से पूछा ।  
 "आ जा, बाहर घूमने चलते हैं । आज तुम्हारे साथ मैं भी जाऊँगा।  
 टण्डी हवा का बजा लेगे ।"

जहाद नम्बर 302-145



...  
...  
... और कुछ की बात  
...  
...

[11]  
[12]

...  
...  
...  
...  
...  
... और फिर

यह बात तो सच हुआ।

मगर भी भी न बीना लोग कि आहट हुई।

इसका बीना ने ध्यान दिया।

...  
...  
...

... ने कहा इस हद तक स्पष्ट न कर

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...





ली। मैं जानती थी कि जो चीज है। और इस बात का मैं कभी  
ऐनसाज भी नहीं बनूँगी। अभी तो मैं ही हूँ। मैंने देखा  
मैं पड़ मोबाइल फोन को देव बनी। मन्तानी ने फोन पर बात की,  
दूसरी तरफ बूढ़ा था।

अनिता गोस्वामी को एन के बिना लाया जाता है।

देवराज चौहान की निगाह उस पर ली।

“मन्तानी ने बूढ़ा को बताया कि इस गली में एक घर है।  
उस घर का नाम देवराज चौहान के नाम पर रखा गया है। वह घर  
और गिराम हार ही करे मुझे बता कि उसे जहाँ पर ही साथ  
पहले का काम है। मुझे उस घर में जानना है। बूढ़ा ने देवराज  
से कहा गया। मैं जो बैटूँ मैं देवराज की और वहाँ गया। मैं  
था कि किसी काम से भागा हुआ लगे। उस बिना बताये घर में  
अपनी जगह में उठी और बैटूँ मैं देवराज के पास पहुँचा। मैं  
छुल्ला तो वो लूँ गया। मैं यह बात दूँ कि बैटूँ मैं जो घर  
की गल्ले में खूबसूरत था और है और।”

“बूढ़ा के इस घाटे में जिस क जो गली में जा रहा है। मैं  
आगे बात करूँ।”

“बूढ़ा ने जो जगह देते हैं। वहाँ तो मैं ही जानता हूँ।”

अनिता गोस्वामी के हाथों से निकला।

“तीन दिन पहले, यही जगह पर भागा था और मैं  
देखा था।”

“ओह—” अनिता गोस्वामी ने समझने का चेहरा देकर  
जिनाया। “लेकिन, तो मैंने बैटूँ मैं देवराज को भी बताया था।  
मन्तानी वहाँ भी नहीं था। मैंने साग बैटूँ मैं जान मारा। जो भागा  
हूँ। वहाँ से बाहर जाने का अन्य कोई रास्ता न बना दिया। मन्तानी  
भी कोई नजर नहीं आया। देवराज पर जान मैं मैं वापस लाने में आ  
गई। मेरे पास मन्तानी की वापसी के इन्तजार में मन्तानी और मैं  
रहता नहीं था। साथ ही मैंने जाना कि भागा था और मैं  
मैं से कहा चला गया।”

देवराज चौहान की आँखें सिरे में चली गी।

“उसके बाद मन्तानी ऊपर से वापस आया।” देवराज चौहान  
ने पूछा।

“उसी बैटूँ मैं। एक घण्टे बाद उसकी बारी थी और मैं भी  
हुँ। मैंने देवराज को भी बताया था। मैंने देवराज को भी बताया कि

१०. ११. १२. १३. १४. १५. १६. १७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

-कह रहा नही अपना दर्जिए था," घतार्ज ने सम्भीर स्वर में कहा।





"मैं तुम्हें जाने ही नहीं चाहता। लेकिन मेरी बात मनकर ही तुम्हें जाना होगा। जीवन में लाली, धन के चक्कर घूमें रहते हैं।" वरन के साथ ही मन्नाजी ने उसको बाहर पकड़ी और दूसरे कमरे में ले गया। उसे सोफे पर बिठाया और मुँह भी साफने बैठ गया।

"जो बात गोस्वामी की बात थी, मन्नाजी को देख जा रही थी।

मन्नाजी ने लालाईय फावें निकाला और बुग से बात की।

"मन्ना सामान आ गया है।"

"मुझे तुम बताते पर ही रहता, अन्तर ही खुश है। मैं तो धन के लाले, सामान के जाने से बिना आदमी बन रहा हूँ।" बुग की बातें मन्नाजी के हाथों में पड़ी।

मन्नाजी ने फावें थक कर के अब से खाना फिर से देखा।

"अब क्या। तुम क्या कह रही थीं।" मन्नाजी ने हीरे की रीखें गम्भीर हो रहा।

"मैं कुछ नहीं कहना चाहती। मैं यहाँ से जाना चाहती हूँ।" लाला गोस्वामी ने दान भीड़कर कहा।

"दुर्भाग्य कि मैं गन्तव्य काम करता हूँ।"

"हाँ। तुम—।"

"जहाँ काम मैं नहीं बुग करता हूँ। वो लक्ष्मणों का बहुत बड़ा सोदागर है। कभी वह स्थान में लक्ष्मण आते हैं तो कभी चीन और अमेरिका में। और वह लाले बुग के इसी काम आता है। कोई नहीं जानता कि लाला गोस्वामी के लक्ष्मणों का सबसे बड़ा सोदागर है बुग। कोई जान भी लाले तो उसकी बिनाफ सवुन नहीं मिल सकता।"

"और तुम लक्ष्मणों के इस बड़े सोदागर के खास सादी तो तुम—।"

"मैं कुछ भी नहीं हूँ।" मन्नाजी गम्भीर स्वर में कह उठा— "मन्ना" लाला से बुग के साथ है। बनने बनने उसका खास आदमी बनता चला गया। मुझे मनन मत समझो। मैं—।"

"सब कुछ सामने है और तुम कहते हो कि मैं तुम्हें मनन न समझूँ। लाली मन्नाजी, ये हमारी आखिरी मुलाकात है। आज के बाद कभी मुझसे मिलने की कौशिश मत करना।"

"यह सम्भव नहीं। मैं तुमसे दिन से प्यार करता हूँ।"

"तो क्या मेरा साथ जबरदस्ती करोगे।" लाला गोस्वामी के दान पित्त गये— "अगर कहते हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी, क्योंकि मुझका अमन रूप देख चुकी है मैं। तुम कुछ भी कर सकते हो।"

मलानी ने पैग बनाया। घूट भरा फिर शान स्वर में बोला।

“अगर मैं जबदस्ती नहीं होखी अनिता, मैं तुमसे शादी करना।”

“ये अब नहीं हो सकता। तुम जो काम करने हो, वो छोड़ो तो तभी हमारी शादी होगी।”

“इस काम में जो एक बार आ जाये तो बाहर नहीं निकल सकता। बूग को इस बात का अहसास भी हो गया कि मैं ऐसा कुछ सोच रहा हूँ तो जो मुझे लक्ष्म कर देगा। बूग की ताकत में तुम काफ़ी नहीं हो।”

“तो मैं तुम्हें क्या करता है बूग को छोड़ो।” अनिता गोम्बामी कहते स्वर में कह रही। “मैंने तो कहा है कि हम दोनों शादी नहीं कर सकते। भविष्य में मुझसे मिलने की कोशिश मत करना।”

मलानी सोचभर ठग से घूट भरता रहा।

“अगर मैं बूग का साथ छोड़ दूँ, यह काम छोड़ दूँ तो तब तुम्हें मेरे से शादी करने में कोई एनगार है?”

“तब कोई एनगार नहीं।”

“सच है। मैं कोशिश करूँगा कि बूग से अलग हो सकूँ। हो सकता है इसमें मान छ महिन का वक्त लग जाये।”

“मैं इन्तज़ार कर सकती हूँ। लेकिन उससे पहले तू मुझसे मिलने की कोशिश नहीं करोगे।” करने के साथ ही वो चर लड़ी लड़ी। “मुझे बन्दरगाह तक पहुँचा दो।”

मलानी ने उसे देखा और शान स्वर में कहा।

“बूग के आदमी आने वाला है। इस वक्त में जहाज गार्डर नहीं जा सकता। लेकिन बोट नौका, तुम्हें बन्दरगाह तक छोड़ आना है।” मलानी उठ खड़ा हुआ - “यह जो भी तुमने देखा है, इसका जिक्र किसी से मत करना। बात खुशी भी हम दोनों के लिए रहस्य हो सकता है।”

इतना बताने के बाद अनिता गोम्बामी टिप्टी।

दरगाज नौकान की निगाह दरावर, अनिता गोम्बामी पर थी।

“मलानी ने ही बातों के दौरान भुझे बनाया था कि इस बार जब जहाज सिगापर के लिये रवाना होगा तो रास्ते में पाकिस्तान द्वारा भेजी गई हथियारों की बहुत बड़ी खेप, बीच समन्दर में ही जहाज पर, बूग रिमीव करेगा और उस खेप को अपने आर्दमिश दाग, मुम्बई रवाना कर देगा। और मैं नहीं चाहती थी कि हथियार हिन्दुस्तान में पहुँचे। क्योंकि -।”

9-21-17

राधा तनय करे।

“महाराज, मैंने देखा कि आपने मेरी बातें सुनीं, मैंने देखा कि आपने मेरी बातें सुनीं।”  
महाराज बोले।

[illegible]

... ..

1944年 10月 10日

आमर कर्म के फल के लिये ।

11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 10

*[Faint handwritten notes]*

473

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

V. J. T. 195. 3

... ..

4. 7. 1977

[illegible][illegible]

अजिता माम्बायो ठिठकी ।

**Figure 1**

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

१७. १८. १९. २०. २१. २२. २३. २४. २५. २६. २७. २८. २९. ३०. ३१. ३२. ३३. ३४. ३५. ३६. ३७. ३८. ३९. ४०. ४१. ४२. ४३. ४४. ४५. ४६. ४७. ४८. ४९. ५०. ५१. ५२. ५३. ५४. ५५. ५६. ५७. ५८. ५९. ६०. ६१. ६२. ६३. ६४. ६५. ६६. ६७. ६८. ६९. ७०. ७१. ७२. ७३. ७४. ७५. ७६. ७७. ७८. ७९. ८०. ८१. ८२. ८३. ८४. ८५. ८६. ८७. ८८. ८९. ९०. ९१. ९२. ९३. ९४. ९५. ९६. ९७. ९८. ९९. १००.

1947

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमस्ते ही मन्वनी सम्पन्न गया कि

[illegible][illegible]

संविधानात् अत्र नान्यथा च । अत्र नान्यथा च । अत्र नान्यथा च ।

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

महाराजः न कदापि सत्यं वा पश्यन्तु। इत्येवमप्युवाच।

[illegible]

१. राजा राजा न राजा राजा

[illegible]

॥ गणेशाय नमः ॥

"शिवन गुरु पर कर्मने हिम के बरत करे" ३१-२-५०

437

"श्री।" श्रीमान् मन्त्रार्थः श्री विष्णवे नमः ॥ १ ॥



The page contains approximately 18 lines of handwritten text in Devanagari script, which appears to be bleed-through from the reverse side of the paper.

देवगज संस्थान में बना दिया।

... ..

... ..

... ..

[illegible]

११-४-१९५३ ई. में और सिरुट बंद का हो।

“अच्छा, १५ करोड़ = इस बक काय है।”

100





हरी - "इसी के कहने पर, इसके आदेशों ने तुम्हारे शरीर को बदलने का काम शुरू कर दिया था। तुमने अपने शरीर की चीजों का बदला क्यों नहीं किया? देखो पर काँड़ नहीं था, मोसों का मैं समझा नहीं। इनका बाँझा मोका तुमने हाथों से गवा दिया।"

देवराज चौहान ने शांत भाव से सिर पर सिर मलगा।

"शरीर की चीजों का बदला न हुआ तो फिर भी तुमने उसे रिज्जत नहीं।" वो तीखे स्वर में बोली।

"बूढ़ा जवान पर ही है। जान राख नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

"क्या मतलब?"

"अगर बूढ़ा का अभी काम कर देना तो वो प्रथम कगड़ है। हाथ नहीं आयेंगे।"

"वे समझी नहीं।" आनता गम्भायी की आवाज में उत्तर आ गया।

देवराज चौहान उस मुँह से बोला।

आनता गम्भायी भी उठी।

"बूढ़ा बचने कभी नहीं। पर उसी विद्वान् की आज्ञा पर ही है।" देवराज चौहान ने सगा स्वर में कहा - "प्राण नहीं छोड़कर जवान पर नहीं आया, वह बूढ़ा जवान पर ही आया। अभी इसका जिन्दा शरीर नहीं है। इसका काम करने के साथ-साथ अगर पचास हजार रुपये भी हाथ में पड़े तो उसे कुछ देना है।"

"समझो।" देवराज चौहान ने बूढ़ा से कहा - "क्या है जो मैं पर हाथ रखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।"

देवराज चौहान सिर मलगा।

आनता गम्भायी ने कहा - "क्या है जो मैं चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।"

"क्या है जो मैं चाहता हूँ।"

देवराज चौहान के भरोसे पर इन बातों में कुछ भी नहीं था।

"यह - यही शब्द है।" देवराज चौहान ने कहा - "क्या है जो मैं चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।"

"कभी जवान रहने का मतलब है।"

देवराज चौहान बूढ़ा से फीस भुगत कर बूढ़ा को राजा के पास





मकानी सुनी थी

जहाँ से वह आया था

जहाँ का इस्तेमाल करने।

जहाँ से वह आया था

मकानी सुनी थी

जहाँ से वह आया था

जहाँ से वह आया था

जहाँ से वह आया था

जहाँ से वह आया था

जहाँ से वह आया था

जहाँ से वह आया था

जहाँ से वह आया था

□□

□□

राज्य के राजा जिन्हें पर राज्य का अधिकार देकर से  
प्राप्तिक के लोको में बड़े अस्मद होकर नती जा रहे हैं। राजा का  
म स्वतन्त्रक, राजका हृदय। उन काल पर राज का है, राजा  
में उन हृदयों का काम बड़े काम में है। जो वह पर का  
का है, जिनमें म होकर बड़े का है। जो वह म बड़े बड़े का की  
राज्य में हम काह लोका की काम ही। जाने कि पूरा पचास  
काह होकर। एक काह कि इका भाग हो। जो वह राजा के भाग  
का तीन आदमी की काम ही।

बूढ़ा की आका में तीन राजा बड़ा का ही।  
वहा मकानी के अका तीन अन्य मकानी मकानी है  
‘मकानी’ बूढ़ा मुकाम पर बोन।

‘जी!’

पचास काम ने पूरा हो गया। अब दूसरा काम का। राजा का  
का फौरन हिन्दुस्तान भरने का इस्तेमाल का। जो वह का ही  
काह है कि किस काम में हम काह काह। हिन्दुस्तान का काम है  
का हिन्दुस्तान के काम में का पर काह काह है का। का  
वोना।

‘यह है का मकानी’

‘हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान का काम है काह का  
वहा मकानी है। हिन्दुस्तान को मकानी काह में काह

[illegible]

११३०४३११-१

[illegible][illegible]

“... 2000 年 12 月 31 日”

\* 111 111, 111 111 111 111 111 111

...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...

— १५१ —

אשר יצאנו ממצרים ונעלה אל הרי סיני

“यस्य सरः!”

[illegible]



... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...

... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...  
 ... तो मैं भी ...

*[Faint handwritten text at the bottom of the page]*

३। कर सेना इस समय को १०

... ३ ...

— 3 —



043

[illegible]

44 73 81 87 91

1997-1998 = 1,979,328 4-29

[illegible]

1990

२. प्रतीति - प्रतीति का अर्थ है वह चिह्न जो किसी वस्तु या भाव का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतीति का अर्थ है वह चिह्न जो किसी वस्तु या भाव का प्रतिनिधित्व करता है। प्रतीति का अर्थ है वह चिह्न जो किसी वस्तु या भाव का प्रतिनिधित्व करता है।

— १०० —

महानगर, जगमोहन की बचत खाता

• अनेकता मास्त्राची मे कशी बनते - अनेकता मे गुण

ਦੇਵਗਨ ਕੀਰਤਨ ਨੇ ਸਾਰੀ ਬਾਤ ਬਦਲ ਦਿੱਤੀ।

द्वैतान लीनान न सारी बन वरुण  
- प्राण, नी यह नम्र है - नम्रान न क हान म विहान

"नमो नमो गते नो ह्यनेन कृतं कुरु देवदत्तम भानुपतिं"

मोहन-नाथ ने कहा - "क्या ना? हमें पार्स" कुछ और कहा है।

कि ली, दहा कड गुन गयता थी है,

“नन् हमें खुद नहीं मालूम था कि हम का तन्हाऊ का यह है  
क्या रुझा है।” दशरथ चौधरी ने गर्भीर स्वर में कहा - “मगर  
तन्हाऊ का पाने।”

क्या रुह रुह है। दूसरी तो पावनी  
मिनी गुल राख का ईश, तल्लू का पावनी।

गान्धर्व गान्धर्व का ईश्वर, तबसे ही गान्धर्व का ईश्वर।  
गान्धर्व गान्धर्व ने फिर दिलाई गान्धर्व ने ही दिला।

"तु मया मन्त्र गता हि" साहजन्त न तु ग ।

"तु म्या मन्त्र गता है" - सत्यमेव जयते  
"पन्नाम काण्ड सत्य के आगे मे कि दुना बने रहम न-र  
... ..

पर पत्नी नहीं है।" रगमंजन मुस्कुराया।

"यहाँ तो मैं ही हूँ।" बगमन ने मुस्कुराया।  
 "तो ले आ। बगमन को अपने नीचे रखकर बगमन ने  
 कहा।" बगमन ने कहा।  
 "बगमन ने कहा।"

...सहज रूप से ब्रह्म।  
...ब्रह्म के रूप में।

जगमोहन - देवराज चौहान का देमा ।

जगमोहन ने देवराज को लिखा कि  
जगमोहन ने देवराज को लिखा कि

३ पु. ॥

न पुत्रान् न कन्या विद्या ।

जहाज नम्बर 302-165



हो ५० में आकर २० में आता है  
जिसमें १० होनी को आता है  
जिसमें १० होनी को आता है  
जिसमें १० होनी को आता है

जो भी आता जा सका है १० देखा

सुझाया देखा है कि क्या ने ही दिखाया है  
देखा है, हम उसमें दिखा सकते हैं १०

देखा दिया।

सुझाया देखा है कि क्या ने ही दिखाया है  
देखा है, हम उसमें दिखा सकते हैं १०  
देखा है, हम उसमें दिखा सकते हैं १०  
देखा है, हम उसमें दिखा सकते हैं १०  
देखा है, हम उसमें दिखा सकते हैं १०





[illegible]

1990 年 12 月 1 日

$$1 - \frac{1}{2} \left( \frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$$

1994 年 12 月 1 日

• 77 •

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॥ श्रीरामाय नमः ॥  
 ॥ श्रीशिवाय नमः ॥  
 ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥  
 ॥ श्रीविष्णुय नमः ॥  
 ॥ श्रीशक्त्यै नमः ॥  
 ॥ श्रीमहादेव्यै नमः ॥  
 ॥ श्रीमहामातृक्यै नमः ॥  
 ॥ श्रीमहामातृक्यै नमः ॥

पत्र १ - १९५१-५२

[illegible]

इस संसदीय प्रणाली

यह दशमो पर स्नान पाना होगा। दशमो करके सब लोग  
 ऐसा करनेवाला होगा कि कम से कम दो घण्टे दस घण्टे तक  
 सब इस योग्य व्यवस्था में रहने का लक्ष्य मानें। इस  
 वाक्य में दिन में अठारह घण्टों में आठ घण्टों में स्नान पर न  
 रहेंगे। अब भीतर प्रवेश करेंगे दरवाजा भीतर में बंद कर देंगे  
 ताकि बाहर से कोई भीतर आकर हमारे निवेष्ट मसीखन न करने में  
 देरगज बाधा न गम्भीर स्वर में कहा—“यह है भीतर प्रवेश करने  
 की योजना। समय पाने पर इसमें बदल-फेर भी हो सकता

कोई कुछ न बोला।

“सोहनलाल—!”

“हां।”

तुम केविन के पीछे बंगीं दीवारों को भाड़ मार फेंक देंगे।

...पर लड़ कर शत्रु को हरा दिया। ...  
...को ...  
...में ...  
...को ...  
...को ...  
...को ...  
...को ...

महाराज ने महाराज से फिर कहा

...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...

"...को मैं ध्यान रखूँगा।" ...

□□

□□

...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...

...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...

...में ...

...में ...

कहाँ है?"

...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...

...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...  
...में ...

"...में ..."

"नहीं—क्यों?"









॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

1. 音乐符号与谱号  
 2. 乐谱内容  
 3. 乐谱内容  
 4. 乐谱内容  
 5. 乐谱内容  
 6. 乐谱内容  
 7. 乐谱内容  
 8. 乐谱内容  
 9. 乐谱内容  
 10. 乐谱内容  
 11. 乐谱内容  
 12. 乐谱内容  
 13. 乐谱内容  
 14. 乐谱内容  
 15. 乐谱内容  
 16. 乐谱内容  
 17. 乐谱内容  
 18. 乐谱内容  
 19. 乐谱内容  
 20. 乐谱内容  
 21. 乐谱内容  
 22. 乐谱内容  
 23. 乐谱内容  
 24. 乐谱内容  
 25. 乐谱内容  
 26. 乐谱内容  
 27. 乐谱内容  
 28. 乐谱内容  
 29. 乐谱内容  
 30. 乐谱内容  
 31. 乐谱内容  
 32. 乐谱内容  
 33. 乐谱内容  
 34. 乐谱内容  
 35. 乐谱内容  
 36. 乐谱内容  
 37. 乐谱内容  
 38. 乐谱内容  
 39. 乐谱内容  
 40. 乐谱内容  
 41. 乐谱内容  
 42. 乐谱内容  
 43. 乐谱内容  
 44. 乐谱内容  
 45. 乐谱内容  
 46. 乐谱内容  
 47. 乐谱内容  
 48. 乐谱内容  
 49. 乐谱内容  
 50. 乐谱内容  
 51. 乐谱内容  
 52. 乐谱内容  
 53. 乐谱内容  
 54. 乐谱内容  
 55. 乐谱内容  
 56. 乐谱内容  
 57. 乐谱内容  
 58. 乐谱内容  
 59. 乐谱内容  
 60. 乐谱内容  
 61. 乐谱内容  
 62. 乐谱内容  
 63. 乐谱内容  
 64. 乐谱内容  
 65. 乐谱内容  
 66. 乐谱内容  
 67. 乐谱内容  
 68. 乐谱内容  
 69. 乐谱内容  
 70. 乐谱内容  
 71. 乐谱内容  
 72. 乐谱内容  
 73. 乐谱内容  
 74. 乐谱内容  
 75. 乐谱内容  
 76. 乐谱内容  
 77. 乐谱内容  
 78. 乐谱内容  
 79. 乐谱内容  
 80. 乐谱内容  
 81. 乐谱内容  
 82. 乐谱内容  
 83. 乐谱内容  
 84. 乐谱内容  
 85. 乐谱内容  
 86. 乐谱内容  
 87. 乐谱内容  
 88. 乐谱内容  
 89. 乐谱内容  
 90. 乐谱内容  
 91. 乐谱内容  
 92. 乐谱内容  
 93. 乐谱内容  
 94. 乐谱内容  
 95. 乐谱内容  
 96. 乐谱内容  
 97. 乐谱内容  
 98. 乐谱内容  
 99. 乐谱内容  
 100. 乐谱内容

1. The first part of the text discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions, including sales, purchases, and expenses. It emphasizes that proper record-keeping is essential for determining the correct amount of tax liability.

2. The second part of the text describes the various methods used to calculate the tax liability, including the use of tax tables and the application of various deductions and credits. It also discusses the importance of understanding the different types of taxes, such as income tax, sales tax, and property tax.

3. The third part of the text discusses the various ways in which taxes can be paid, including through direct payment to the tax authority or through a third party, such as a tax collector or a tax agent. It also discusses the importance of understanding the different methods of payment, such as cash, check, or credit card.

4. The fourth part of the text discusses the various ways in which taxes can be avoided or reduced, including through the use of tax shelters, tax credits, and tax deductions. It also discusses the importance of understanding the different methods of avoidance or reduction, such as capital gains tax, estate tax, and gift tax.

5. The fifth part of the text discusses the various ways in which taxes can be enforced, including through the use of tax audits, tax liens, and tax seizures. It also discusses the importance of understanding the different methods of enforcement, such as the Internal Revenue Service (IRS) and the State Tax Authority.



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

“कौन है?”

कौन है?

महर्षि - मैं ब्रह्म से आता हूँ, मैं ब्रह्म हूँ।

मेरा नाम - ब्रह्म है।

मेरी  
 अतिशय प्रियता से मेरा यह प्रेम-पत्र  
 तुम्हारे हृदय में मगल से भरी जाय।  
 - तुम्हारे प्रेम से मैं ही प्रेम-पत्र लिख  
 मैं तुम्हें प्रेम-पत्र लिखने में हूँ





"सुझाती कोई बात नहीं उतरी जाती। प्रकाश नहीं होता कि  
तुम जहाँ से गये हो वहाँ जाओ। लोग जानना चाहते हैं कि सब कुछ  
कहाँ है और तुम भी जानो। पर यह कहना भी लोग बर्दाश्त नहीं  
करते।"

मन्नाली, अविता गोम्वाली को दिलाता था।

अविता गोम्वाली को चले पाएँगे या नहीं यह भाव था।

"हम को सही तो सब मिला हुआ है। हमें सब मिला है।"

मन्नाली चले पाएँगे या नहीं यह प्रश्न और उद्देश्य में बाधा  
पड़ने लगा।

□□

□□

देवराज चौहान ने सोहनलाल द्वारा दिये धर्म में संपूर्ण को  
देखा फिर पलटकर बोला।

"आज का माया दिन तुम्हारा पास है। इस पलटन को तीन दिन  
नगर आना चाहिए। इससे बाद धीरे में, पलटन को जग मा लौटकर  
उसकी तार को सिर्फ इस मसल इस बाहर खींचना, यदि उसमें क  
साकर अपनी तार का कनेक्शन उसमें दिया जा सके।"

"समझ गया।"

"देवराज बंद करके काम करना।" देवराज चौहान ने उसे  
सतर्क किया।

"मे लापरवाह नहीं होता। दैव आज गत रहता है, ब्रह्म के  
पाइलट हिम्मा ही या नी जगह में जाने का।"

"हां।"

देवराज चौहान वहां से निरुत्तरकर जहाज की छती मंच पर  
अविता गोम्वाली के रुखिने में पहुंचा।

"आओ।" अविता गोम्वाली उसे देखते ही मुंह खोल कर पीछे  
हट गई।

देवराज चौहान ने पीछे प्रवेश किया। रुखी पर था।

देवराज बंद करके वो पलटन शुरू करती।

"मन्नाली से बात हुई थी। जहाज पर पचास करोड़ का भार तो  
होयार आ चुका है।"

देवराज चौहान ने फिर दिलाते हुए सिग्रेट मंगाई।

100%

रामायण ने देखा है जो नव वंश  
 "अभी गान्धर्वान के पार"।  
 निम्न- "उमने दी गरी में ता रति पाया तन  
 हा गा कि दीप में ज्योत बाली ह  
 वालुग ही मोहन गल से मिल चुक  
 टा- "यै अभी प्रियता गान्धर्वों से व  
 होड डीलर जहा व पर, वृ  
 गया है।"

जगमोहन की आँखें नमक (197)।

"इसका पीला भाव हास्य था, वही तो मेरा भाव था।"  
देवराज चौहान ने उसे पूछा तो जगमोहन ने कहा कि हास्य  
"इसका भावमय रस है मेरा भाव।" और हाँ, हाँ।  
"यही मेरी भावना है।" जगमोहन ने कहा।  
"मानुष काले बस है वह १२-१३ साली है।" देवराज चौहान ने  
कहा।

"जगमोहन पर हाँ।"

"और वह भी कि अगर जगमोहन को जगमोहन में कोई भावमय  
के वक्त, सब दर में जगमोहन पर तो उसके निचे भावमय भावों के  
पक्षों पर हाँ।" देवराज चौहान का स्वर गंभीर था।

"समझो। क्या मानुष करता है?" जगमोहन के गंभीर भाव  
जगमोहन के भावों का लय "देखो।"

"ही मानुष करने की करता है, पहल तो काम करो बाकी  
हार्ने बाद में ही जायेगी।"

जगमोहन ने फौरन सत्यमय में सिर हिलाया।

देवराज चौहान बाहर निकल गया।

दिन के ग्यारह बज रहे थे।

वैशाली इस वक्त मान मुख डेम में थी। हाथ में चाय का  
प्याला पकड़े बैलगी में आगे बढ़ रही थी। मस्ती के मूड में ही वह  
चलने चलने चाय का घूट भी भर लेती थी। इस वक्त जो मस्ती  
मजिन पर थी। कुछ आगे नीचे जाने के लिये लीढ़िया गया बाद  
तो उतरते-उतरते ठिठकी।

नीचे से बूटा गुप्त का खास आदमी ऊपर आ गया था।

जब वो ऊपर आया तो वैशाली ने पूछा।

"सुन्दर को देखा है।"

"सुन्दर, नहीं तो, कोई खास बात?" उस आदमी ने पूछा।

"नहीं, यू ही उसने काम था।" वैशाली ने चायमय में हाँ  
वो आदमी आगे बढ़ गया।

वैशाली चाय का प्याला थामे होने होने सीं उठा जगमोहन में  
पिछले दो घण्टों में उसने सान-आड लोगों में सुन्दर के काम मय  
था। परन्तु कोई भी ऐसा नहीं बिना था जिसने कहा कि उस

मृग की दृष्टि में मनुष्य की भाँति ही है। मनुष्य की भाँति ही वह  
जगत्प्रेम से भरा हुआ है।

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है।”

“जगत्प्रेम से भरा हुआ है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

मनुष्य ही मनुष्य है।

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

मनुष्य ही मनुष्य है।

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

“क्यों नहीं कहें कि मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है। मनुष्य ही मनुष्य है।”

जगत्प्रेम ने गहरी निगाहों से रेशमी की दृष्टि।

“मृग के साथ रहनी हो और मन से उससे दूर रहनी हो  
क्यों ? जगत्प्रेम की आश्रय धीमी थी।

“सह सह रहना मजबूरी है, क्योंकि जो एक बार उससे स  
लग जाता है। फिर शंभर कर ही अलग हो सकता है। शरीर भी अ  
जिन्दगी नहीं जी सकता, मृग के दुर्गम पर, अपनी निद्रा की निद्रा  
है। मृग की असाध्यता जानने के बाद जिसे भी उससे अलग हो  
ना चाहिये की, वो मर गया।” रेशमी गम्भीर थी।

“मनुष्य कि तुम मृग से अलग होना चाहती हो।”

“न ही क्या, मृग के अविच्छिन्न आदमी यही कहते हैं।”









— 102 —

[illegible][illegible]

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

...  
...  
...  
...  
...  
...  
...

[illegible][illegible]

"मन्त्र ने आपकी बातें साँस में ले लीं।  
 'मन्त्र'। मन्त्र मन्त्रों। मन्त्र मन्त्रों। मन्त्र मन्त्रों।  
 भी। हम दोनों की लड़कियाँ बड़ी हैं। उसकी लड़कियाँ।  
 मन्त्र मन्त्रों। मन्त्र मन्त्रों, मन्त्र मन्त्रों। मन्त्र मन्त्रों।

जो वे मुझे जो खबर देना शुरू किया  
वही मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
ही जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया

मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया

मुझे।  
"यान तो मालूम होगा" मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया

मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया

जगमोहन को पैरों के धरती पर मैं जाना शुरू किया  
सिंह को दूढ़ने में।  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया

मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया

देखा।  
"मालूम है भाग्य नाम अंतर" मैं जाना शुरू किया  
"है है" मैं जाना शुरू किया। मैं जाना शुरू किया  
"मैं जहाज का यात्री हूँ।"  
"मैं तो नगर आ ही रहा हूँ"  
"आत मुझे अंतर मैं मुझे जाना शुरू किया"

जहाज नम्बर 302 - 186



जगमोहन ने कहा "क्या मैं जानूँ कि तुम क्या सोच रहे हो?"

"नहीं दुबेगा यह जगमोहन।"

"क्यों?"

"टाईटेनिक डूबा था 1912 में। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"

"मिलाना धरमचंद कि वह था तब तो 1912 में।"

"नहीं, 1912 में ही डूबा था। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"

"यह जगमोहन ही था जो 1912 में डूबा था।"

"होना ही जगमोहन था 1912 में डूबा था।"

"मिलाना धरमचंद कि वह था तब तो 1912 में डूबा था।"

"नहीं, 1912 में ही डूबा था। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"

"यह जगमोहन ही था जो 1912 में डूबा था।"

"होना ही जगमोहन था 1912 में डूबा था।"

"मिलाना धरमचंद कि वह था तब तो 1912 में डूबा था।"

"नहीं, 1912 में ही डूबा था। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"

और बताऊँ?"

"मिलाना धरमचंद कि वह था तब तो 1912 में डूबा था।"

"नहीं, 1912 में ही डूबा था। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"

"यह जगमोहन ही था जो 1912 में डूबा था।"

"होना ही जगमोहन था 1912 में डूबा था।"

"मिलाना धरमचंद कि वह था तब तो 1912 में डूबा था।"

"नहीं, 1912 में ही डूबा था। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"

"यह जगमोहन ही था जो 1912 में डूबा था।"

"होना ही जगमोहन था 1912 में डूबा था।"

या?" जगमोहन बोला।

"मिलाना धरमचंद कि वह था तब तो 1912 में डूबा था।"

"नहीं, 1912 में ही डूबा था। यह जगमोहन 1912 में डूबा था।"



The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions. It emphasizes that proper record-keeping is essential for ensuring the integrity and transparency of financial reporting. The document also highlights the need for regular audits and reviews to identify any discrepancies or errors in the data.

In addition, the document outlines the various methods used to collect and analyze financial data. It mentions the use of both primary and secondary sources of information, as well as the application of statistical techniques to interpret the results. The document also discusses the challenges associated with data collection and analysis, such as the potential for bias and the need for careful selection of samples.

Finally, the document provides a summary of the key findings and conclusions. It states that the data collected over the period of study shows a general upward trend in the variables being measured. However, it also notes that there are still some areas where further research is needed to better understand the underlying causes of the observed trends.

— ۱۲۰ —

॥ अथ श्रीगणेशाय नमः ॥

22-11



नहीं। तुम आओ।"  
मन्वानी चला गया।

"कोन था? मन्वानी आया था?"

बोला। .

"जी!"

"कहा मन्वानी ने - 'कृष्ण ने जल्दी सड़क छोड़ दी।"



[illegible]

1944

— ५५५ —

1. 在 1950 年 10 月 1 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 2. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 3. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 4. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 5. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 6. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 7. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 8. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 9. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，  
 10. 在 1949 年 12 月 31 日以前，凡在 1949 年 12 月 31 日以前，

*[Faint, illegible handwritten notes]*

2.  $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

... ..

[illegible]

וְהָיָה כִּי יִשְׁמַע ה' אֶת הַקּוֹל  
 וְהָיָה כִּי יִשְׁמַע ה' אֶת הַקּוֹל  
 וְהָיָה כִּי יִשְׁמַע ה' אֶת הַקּוֹל  
 וְהָיָה כִּי יִשְׁמַע ה' אֶת הַקּוֹל

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

"१ इत्येतत् । तत्र ननु इति च । इति च ।

— १११ —

"टीक है। तु जा।"

इन्द्राय नमः यथा

३७ श्री सीता विनायक, जिनका सम्मान: पर - १०० टी. टी.

“अच्छा-धरती नू नी नगरों छिपाना मे साफ से प्रथम इस रंग  
सा। ऊपर ऊपर देख साफ़ नज़र से ही इसका मोन न बनाया।  
रेड-वैट घबराती ऊनी है -

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३५०१ सुभद्रा ज्ञानी का पीछा करती ।

• 2011年 2月

मे दुख गया ही ।

बाल्या ई - २०

3-2-20

नमो १०

“ਸ਼ਾਮਲੀ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ”

[illegible]

*[Faint handwritten text]*





"सुन्दर की बात मत करो। मैं अनिता गोस्वामी ही जान रहा हूँ।" बूढ़ा के स्वर में कठोरता आ गई।

"क्या बात?"

बूढ़ा ने गनमैन को देखा और व्यर्थपन स्वर में कहा -  
"मलानी साहब की तलाशी लो।"

मलानी कुछ समझ पाता, एक गनमैन उठ कर पास गया था। दूसरे के हाथ में रिवाल्वर नजर आने लगी थी, जिससे वह मलानी की तरफ था।

मलानी की जेब से रिवाल्वर लेकर गनमैन पकड़ हो गए मलानी का चेहरा कठार हो गया।

"बूढ़ा साहब! आपकी इस हरकत का मतलब नहीं समझ -

"हां, अनिता गोस्वामी ने सब कुछ बता दिया है।" बूढ़ा ने कहा।

"क्या सब कुछ?"

"जो तुम मुझसे छिपा रहे थे। जिसके बारे में मुझे न पता था। तुमने मुझे बताया नहीं कि अनिता गोस्वामी के साथ क्या खासा यागना है।" बूढ़ा उसे खा जान वाली निम्नता में पूछ रहा था - "इस वक्त मैं तुम्हें दो चार्ज बता रहा हूँ तो उम्हरी नजरों में तुम छोकरी को जहाज पर, मेरे ब्राइलट हिम्प में रखा न रहे।"

मलानी समझ गया कि, अनिता गोस्वामी ने सब कुछ बता दिया है।

"तुम्हारी गलती की वजह से वो मर गया। तब मैं तुम्हें गलती को फौरन सुझाव भी जा सकता था अगर तुम उसे खत्म कर देते। लेकिन तुमने उसे खत्म नहीं किया। न इस बारे में बताया। जब वो मेरी पोल सुनने में आया तो तुमने उसे खत्म नहीं किया। उस अपने पीछे। फिर दूसरी हो जाने लगे, उसे तलाश करो और खत्म कर दो।" बूढ़ा गुस्से में मुद्रा हो गया।

मलानी को खून लस होता नजर आने लगा।

"सुन्दर भाव गया कि तुम क्या कर रहे हो।" हिम्मत करके उसने सब कुछ भाफ साफ मुझे बता दिया और हम बातचीत जान केस तुम्हें लग गई और तुमने फौरन मुझे बताया दिया। क्या है वो?"

हां, थी मैं मलानी क्षामाश रहा।





[illegible]

ਸਭੀ ਧਾਰਮਿਕ ਆਗੂਆਂ ਨੂੰ ਇਹ ਸੂਚਨਾ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ ਕਿ  
 ਸਾਡੀ ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ  
 ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਸਾਡੀ ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸੁਧਾਰ  
 ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।  
 ਸਾਡੀ ਸੇਵਾ ਵਿੱਚ ਕੋਈ ਸੁਧਾਰ ਲਿਆਉਣ ਲਈ ਸਾਡੇ ਨਾਲ  
 ਸੰਪਰਕ ਵਿੱਚ ਰਹਿਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

\* 7 17 2 19 3 20 4 21 5 22

5-1 2nd 11 -1 1 1 1 1 1 1

ते पास पहुँच गये ।

[illegible]

की ।

10. 11. 1941

अथ वा अथवा अथवा अथवा

... ..

717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044 1045 1046 1047 1048 1049 1050 1051 1052 1053 1054 1055 1056 1057 1058 1059 1060 1061 1062 1063 1064 1065 1066 1067 1068 1069 1070 1071 1072 1073 1074 1075 1076 1077 1078 1079 1080 1081 1082 1083 1084 1085 1086 1087 1088 1089 1090 1091 1092 1093 1094 1095 1096 1097 1098 1099 1100 1101 1102 1103 1104 1105 1106 1107 1108 1109 1110 1111 1112 1113 1114 1115 1116 1117 1118 1119 1120 1121 1122 1123 1124 1125 1126 1127 1128 1129 1130 1131 1132 1133 1134 1135 1136 1137 1138 1139 1140 1141 1142 1143 1144 1145 1146 1147 1148 1149 1150 1151 1152 1153 1154 1155 1156 1157 1158 1159 1160 1161 1162 1163 1164 1165 1166 1167 1168 1169 1170 1171 1172 1173 1174 1175 1176 1177 1178 1179 1180 1181 1182 1183 1184 1185 1186 1187 1188 1189 1190 1191 1192 1193 1194 1195 1196 1197 1198 1199 1200 1201 1202 1203 1204 1205 1206 1207 1208 1209 1210 1211 1212 1213 1214 1215 1216 1217 1218 1219 1220 1221 1222 1223 1224 1225 1226 1227 1228 1229 1230 1231 1232 1233 1234 1235 1236 1237 1238 1239 1240 1241 1242 1243 1244 1245 1246 1247 1248 1249 1250 1251 1252 1253 1254 1255 1256 1257 1258 1259 1260 1261 1262 1263 1264 1265 1266 1267 1268 1269 1270 1271 1272 1273 1274 1275 1276 1277 1278 1279 1280 1281 1282 1283 1284 1285 1286 1287 1288 1289 1290 1291 1292 1293 1294 1295 1296 1297 1298 1299 1300 1301 1302 1303 1304 1305 1306 1307 1308 1309 1310 1311 1312 1313 1314 1315 1316 1317 1318 1319 1320 1321 1322 1323 1324 1325 1326 1327 1328 1329 1330 1331 1332 1333 1334 1335 1336 1337 1338 1339 1340 1341 1342 1343 1344 1345 1346 1347 1348 1349 1350 1351 1352 1353 1354 1355 1356 1357 1358 1359 1360 1361 1362 1363 1364 1365 1366 1367 1368 1369 1370 1371 1372 1373 1374 1375 1376 1377 1378 1379 1380 1381 1382 1383 1384 1385 1386 1387 1388 1389 1390 1391 1392 1393 1394 1395 1396 1397 1398 1399 1400 1401 1402 1403 1404 1405 1406 1407 1408 1409 1410 1411 1412 1413 1414 1415 1416 1417 1418 1419 1420 1421 1422 1423 1424 1425 1426 1427 1428 1429 1430 1431 1432 1433 1434 1435 1436 1437 1438 1439 1440 1441 1442 1443 1444 1445 1446 1447 1448 1449 1450 1451 1452 1453 1454 1455 1456 1457 1458 1459 1460 1461 1462 1463 1464 1465 1466 1467 1468 1469 1470 1471 1472 1473 1474 1475 1476 1477 1478 1479 1480 1481 1482 1483 1484 1485 1486 1487 1488 1489 1490 1491 1492 1493 1494 1495 1496 1497 1498 1499 1500 1501 1502 1503 1504 1505 1506 1507 1508 1509 1510 1511 1512 1513 1514 1515 1516 1517 1518 1519 1520 1521 1522 1523 1524 1525 1526 1527 1528 1529 1530 1531 1532 1533 1534 1535 1536 1537 1538 1539 1540 1541 1542 1543 1544 1545 1546 1547 1548 1549 1550 1551 1552 1553 1554 1555 1556 1557 1558 1559 1560 1561 1562 1563 1564 1565 1566 1567 1568 1569 1570 1571 1572 1573 1574 1575 1576 1577 1578 1579 1580 1581 1582 1583 1584 1585 1586 1587 1588 1589 1590 1591 15

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

1. The first group of people who are interested in the study of the history of the United States are the people who are interested in the history of the United States.

[illegible]

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

कहकर जोरी से लपकड़ाया।

“मैं चलता हूँ।”

जमशेद ने मेरे से बचस पन्द्रह और मैडि पाव कहे, बनी  
मरु मरु, केवने रुने मरु मे आ गया। हुनकर से इस  
रुन रुन रुन नही था। बनी से दो सोगा मरु मरु रु रुन  
मरु मरु मे पन्द्रह, जहा देवमन चमन मोरु था।

“हमे नीचे लिखकर, हाथ पाव बाध दो और मरुमनान के  
रुने दो, मेरे पन्स पन्द्रह जाना।” कहने के मरु हो देवगज चौहान

47

१५५

RT

2



समझो :

क्या नई मशीन

नहीं थी जहाँ

नहीं थी विमान विमान

जहाँ न था विमान न था विमान न था विमान न था विमान

जहाँ न था विमान न था विमान न था विमान न था विमान

जहाँ न था विमान न था विमान न था विमान न था विमान

जहाँ न था विमान न था विमान न था विमान न था विमान

समझो, वो कर देना।"

जगमोहन ने हँस धोती साँस में गहरी और विमान विमान

नहीं था न ली।

नहीं

"यस—।"

दरवाने चौकान न दवाजा न दवाजा न दवाजा न दवाजा

भीन उस दवाजा, दवाजा न दवाजा और भीतर प्रवेश कर गया।

नीचे पीछे साध ही जगमोहन ने भीतर प्रवेश किया। दरवाजे चौकान

न दवाजा बंद किया और भीतर में बैठकर लगा दी।

सामने दस फीट लम्बी गलियारा था और फिर बायाँ नरक मंद।

"क्या ख्याल है?" जगमोहन हाँक मार कर कहा— "यस लागी

न कठोर रुम में मौजूद स्त्रीना पर हमें इस निशा लागी या हमारी

चाल कामयाब रही कि उनकी स्त्रीना पर हमारी नज़र इस तरह

दृश्य नजर आ रहे होंगे।"

दरवाजे चौकान न कठोर रुम का बायाँ आगे बढ़ने लगा। नज़र

पर कठोर रुम नज़र आ रही थी सनसलाता सा दामन धाम जगमोहन ने

भी कदम आगे बढ़ा दिया।

□□

□□

कठोर रुम में उस वक्त दो व्यक्ति बैठे थे। जिनका काम आखें

खुली और कान बंद रखना था। उनके सामने बोर्ड पर तीन टी०वी०

सेट मौजूद थे। टी०वी० सेटों के जॉयंट्स बाँटकर पर स्थित ब्रॉड के

प्राइवेट हिस्से पर पूरी तरह नज़र रखने थे। अगर कहीं कोई शक

या फिर गटबट वाली बात होनी तो वे इन्टरफ़ोन पर नुस्खे बगल

में स्थित गार्ड रुम में खबर देने, हालात बनाने और फिर आगे का



हमने उसे दे दिया था।

मलार्म बजा देने।

मलार्म बजा देने।

मलार्म बजा देने।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।

वैदिक में नहीं था।



ले कह उठा।

हमने इस बात के लिए प्रयास किया कि यह सब सच हो सके।  
परन्तु हमें पता चला कि यह सब असंभव है। अतः हमने  
इस बात को ध्यान में रखा कि यह सब असंभव है। अतः हमने  
इस बात को ध्यान में रखा कि यह सब असंभव है। अतः हमने

रिवोन्वरें यामे लुडे ये ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

इस प्रकार शेष ज्ञान भावन साक्षी के मुह से आता है, इस भावन  
की योग्यता तथा

[illegible]

इसका ज्ञान तो अपने क इच्छा पर दाँतों कुंज की तरह बन गया  
"अपने अपने दाँतों हाथों मिश्रों के इच्छा रख लो।

दो सौ नौ फीसत अथवा दसवाँ का सिक्का पर रख लिया है तथा  
नक़्त हिसाब है।

द्वारा ज्ञान बढ़ेगा।" दैवशास्त्र विज्ञान ने समाधान में इन  
समाधानों ने कृष्ण के रूप का द्वारा ना धार में बढ़ कर किता

कहा—“भीतर कैसे आये?”

“ सी दरवाज़ से ज़रा से सब धीवर आने है ” दरवाज़ खोलने से शब्दों का घनाकुर क़रा ।

"य नहीं हो सकता " दूसरा पक्ष स्वर में कह रहा ।  
"क्या ?"

"जब यहाँ से आने जान वालों का डेरा गढ़ है। काफी इर म  
कह करती थीं। यहाँ का यहाँ की यहाँ।"

इस गलत चौकान ने स्क्रीन पर निगाह मारी और फिर कुछ देखा

तब जगज्ज मन्त्रई बन्दरगाह पर लंगर डाले सन्ना था । खाना था

"असम्भव। ये कैसे हो सकता है ?" सड़क हाथ में निडरता

“इस कैमा की तांग का जो जाल लयाँ क भाय फँजा गया है  
मर्यादा बना १९८०-१९८०



“देवाना तोहाने ने सखा म्या

तो पूरा-

करने वाले”

“हो” तो जल्दी से जाना।

विमल दा

“दुखन ना

दिगन ने कहा

“मे कह

“तो मरगये तो मे दया ने हो नरक भरी।

“देवो” “मगर नो जान तो जगमगन हो गये।

“नो” “तो मे नो” “मगर नो जान तो मे” “दुख”

“तो मरगये”

“तो नो मरगये।”

“तो” “तो मरगये” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”

“तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो” “तो”



जीवन में कार्य ।

१. ११. ११. ११

पुनः न मम हृदये उ शान्ति मया तस्य मे,

ਪ੍ਰਸੰਨ ਨੇ ਸਭਾ ਵਿੱਚ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਉਹ ਪੰਜ ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਆਪਣੇ ਪਿਤਾ ਦੀ ਮੌਤ ਨਾਲ ਸੰਘਰਸ਼ ਵਿੱਚ ਸਨ।

ਪ੍ਰਸੰਨ ਨਾਮ ਨੀ ਬਲੀ ਨੀ ਧੰਨ ਪ੍ਰਸੰਨ ਨੀ  
ਪ੍ਰਸੰਨ ਨੀ ਪ੍ਰਸੰਨ ਨੀ ਪ੍ਰਸੰਨ ਨੀ ਪ੍ਰਸੰਨ ਨੀ

*[Faint, illegible handwritten notes]*

१८३३ ई. ११  
 १८३३ ई. ११

[illegible]

१. संस्कृत २. हिन्दी ३. उर्दू ४. अंग्रेजी ५. बंगाली ६. मराठी ७. गुजराती ८. तमिल ९. तेलुगु १०. कन्नड़ ११. मलयालम १२. सिंधी १३. पंजाबी १४. संथाली १५. कोङ्कणी १६. ओड़िया १७. मैथिली १८. ब्रज १९. वैजयंती २०. सौराष्ट्र २१. गुजराती २२. मराठी २३. हिन्दी २४. उर्दू २५. अंग्रेजी २६. बंगाली २७. मलयालम २८. तेलुगु २९. कन्नड़ ३०. सिंधी ३१. पंजाबी ३२. संथाली ३३. कोङ्कणी ३४. ओड़िया ३५. मैथिली ३६. ब्रज ३७. वैजयंती ३८. सौराष्ट्र ३९. गुजराती ४०. मराठी ४१. हिन्दी ४२. उर्दू ४३. अंग्रेजी ४४. बंगाली ४५. मलयालम ४६. तेलुगु ४७. कन्नड़ ४८. सिंधी ४९. पंजाबी ५०. संथाली ५१. कोङ्कणी ५२. ओड़िया ५३. मैथिली ५४. ब्रज ५५. वैजयंती ५६. सौराष्ट्र ५७. गुजराती ५८. मराठी ५९. हिन्दी ६०. उर्दू ६१. अंग्रेजी ६२. बंगाली ६३. मलयालम ६४. तेलुगु ६५. कन्नड़ ६६. सिंधी ६७. पंजाबी ६८. संथाली ६९. कोङ्कणी ७०. ओड़िया ७१. मैथिली ७२. ब्रज ७३. वैजयंती ७४. सौराष्ट्र ७५. गुजराती ७६. मराठी ७७. हिन्दी ७८. उर्दू ७९. अंग्रेजी ८०. बंगाली ८१. मलयालम ८२. तेलुगु ८३. कन्नड़ ८४. सिंधी ८५. पंजाबी ८६. संथाली ८७. कोङ्कणी ८८. ओड़िया ८९. मैथिली ९०. ब्रज ९१. वैजयंती ९२. सौराष्ट्र ९३. गुजराती ९४. मराठी ९५. हिन्दी ९६. उर्दू ९७. अंग्रेजी ९८. बंगाली ९९. मलयालम १००. तेलुगु १०१. कन्नड़ १०२. सिंधी १०३. पंजाबी १०४. संथाली १०५. कोङ्कणी १०६. ओड़िया १०७. मैथिली १०८. ब्रज १०९. वैजयंती ११०. सौराष्ट्र १११. गुजराती ११२. मराठी ११३. हिन्दी ११४. उर्दू ११५. अंग्रेजी ११६. बंगाली ११७. मलयालम ११८. तेलुगु ११९. कन्नड़ १२०. सिंधी १२१. पंजाबी १२२. संथाली १२३. कोङ्कणी १२४. ओड़िया १२५. मैथिली १२६. ब्रज १२७. वैजयंती १२८. सौराष्ट्र १२९. गुजराती १३०. मराठी १३१. हिन्दी १३२. उर्दू १३३. अंग्रेजी १३४. बंगाली १३५. मलयालम १३६. तेलुगु १३७. कन्नड़ १३८. सिंधी १३९. पंजाबी १४०. संथाली १४१. कोङ्कणी १४२. ओड़िया १४३. मैथिली १४४. ब्रज १४५. वैजयंती १४६. सौराष्ट्र १४७. गुजराती १४८. मराठी १४९. हिन्दी १५०. उर्दू १५१. अंग्रेजी १५२. बंगाली १५३. मलयालम १५४. तेलुगु १५५. कन्नड़ १५६. सिंधी १५७. पंजाबी १५८. संथाली १५९. कोङ्कणी १६०. ओड़िया १६१. मैथिली १६२. ब्रज १६३. वैजयंती १६४. सौराष्ट्र १६५. गुजराती १६६. मराठी १६७. हिन्दी १६८. उर्दू १६९. अंग्रेजी १७०. बंगाली १७१. मलयालम १७२. तेलुगु १७३. कन्नड़ १७४. सिंधी १७५. पंजाबी १७६. संथाली १७७. कोङ्कणी १७८. ओड़िया १७९. मैथिली १८०. ब्रज १८१. वैजयंती १८२. सौराष्ट्र १८३. गुजराती १८४. मराठी १८५. हिन्दी १८६. उर्दू १८७. अंग्रेजी १८८. बंगाली १८९. मलयालम १९०. तेलुगु १९१. कन्नड़ १९२. सिंधी १९३. पंजाबी १९४. संथाली १९५. कोङ्कणी १९६. ओड़िया १९७. मैथिली १९८. ब्रज १९९. वैजयंती २००. सौराष्ट्र २०१. गुजराती २०२. मराठी २०३. हिन्दी २०४. उर्दू २०५. अंग्रेजी २०६. बंगाली २०७. मलयालम २०८. तेलुगु २०९. कन्नड़ २१०. सिंधी २११. पंजाबी २१२. संथाली २१३. कोङ्कणी २१४. ओड़िया २१५. मैथिली २१६. ब्रज २१७. वैजयंती २१८. सौराष्ट्र २१९. गुजराती २२०. मराठी २२१. हिन्दी २२२. उर्दू २२३. अंग्रेजी २२४. बंगाली २२५. मलयालम २२६. तेलुगु २२७. कन्नड़ २२८. सिंधी २२९. पंजाबी २३०. संथाली २३१. कोङ्कणी २३२. ओड़िया २३३. मैथिली २३४. ब्रज २३५. वैजयंती २३६. सौराष्ट्र २३७. <

...  
...  
...

- 3 -

- 31 - 22 - 7 - 3 - 4 - 1 - 2 - 3 - 4 - 5 - 6 - 7 - 8 - 9 - 10 - 11 - 12 - 13 - 14 - 15 - 16 - 17 - 18 - 19 - 20 - 21 - 22 - 23 - 24 - 25 - 26 - 27 - 28 - 29 - 30 - 31 - 32 - 33 - 34 - 35 - 36 - 37 - 38 - 39 - 40 - 41 - 42 - 43 - 44 - 45 - 46 - 47 - 48 - 49 - 50 - 51 - 52 - 53 - 54 - 55 - 56 - 57 - 58 - 59 - 60 - 61 - 62 - 63 - 64 - 65 - 66 - 67 - 68 - 69 - 70 - 71 - 72 - 73 - 74 - 75 - 76 - 77 - 78 - 79 - 80 - 81 - 82 - 83 - 84 - 85 - 86 - 87 - 88 - 89 - 90 - 91 - 92 - 93 - 94 - 95 - 96 - 97 - 98 - 99 - 100 - 101 - 102 - 103 - 104 - 105 - 106 - 107 - 108 - 109 - 110 - 111 - 112 - 113 - 114 - 115 - 116 - 117 - 118 - 119 - 120 - 121 - 122 - 123 - 124 - 125 - 126 - 127 - 128 - 129 - 130 - 131 - 132 - 133 - 134 - 135 - 136 - 137 - 138 - 139 - 140 - 141 - 142 - 143 - 144 - 145 - 146 - 147 - 148 - 149 - 150 - 151 - 152 - 153 - 154 - 155 - 156 - 157 - 158 - 159 - 160 - 161 - 162 - 163 - 164 - 165 - 166 - 167 - 168 - 169 - 170 - 171 - 172 - 173 - 174 - 175 - 176 - 177 - 178 - 179 - 180 - 181 - 182 - 183 - 184 - 185 - 186 - 187 - 188 - 189 - 190 - 191 - 192 - 193 - 194 - 195 - 196 - 197 - 198 - 199 - 200 - 201 - 202 - 203 - 204 - 205 - 206 - 207 - 208 - 209 - 210 - 211 - 212 - 213 - 214 - 215 - 216 - 217 - 218 - 219 - 220 - 221 - 222 - 223 - 224 - 225 - 226 - 227 - 228 - 229 - 230 - 231 - 232 - 233 - 234 - 235 - 236 - 237 - 238 - 239 - 240 - 241 - 242 - 243 - 244 - 245 - 246 - 247 - 248 - 249 - 250 - 251 - 252 - 253 - 254 - 255 - 256 - 257 - 258 - 259 - 260 - 261 - 262 - 263 - 264 - 265 - 266 - 267 - 268 - 269 - 270 - 271 - 272 - 273 - 274 - 275 - 276 - 277 - 278 - 279 - 280 - 281 - 282 - 283 - 284 - 285 - 286 - 287 - 288 - 289 - 290 - 291 - 292 - 293 - 294 - 295 - 296 - 297 - 298 - 299 - 300 - 301 - 302 - 303 - 304 - 305 - 306 - 307 - 308 - 309 - 310 - 311 - 312 - 313 - 314 - 315 - 316 - 317 - 318 - 319 - 320 - 321 - 322 - 323 - 324 - 325 - 326 - 327 - 328 - 329 - 330 - 331 - 332 - 333 - 334 - 335 - 336 - 337 - 338 - 339 - 340 - 341 - 342 - 343 - 344 - 345 - 346 - 347 - 348 - 349 - 350 - 351 - 352 - 353 - 354 - 355 - 356 - 357 - 358 - 359 - 360 - 361 - 362 - 363 - 364 - 365 - 366 - 367 - 368 - 369 - 370 - 371 - 372 - 373 - 374 - 375 - 376 - 377 - 378 - 379 - 380 - 381 - 382 - 383 - 384 - 385 - 386 - 387 - 388 - 389 - 390 - 391 - 392 - 393 - 394 - 395 - 396 - 397 - 398 - 399 - 400 - 401 - 402 - 403 - 404 - 405 - 406 - 407 - 408 - 409 - 410 - 411 - 412 - 413 - 414 - 415 - 416 - 417 - 418 - 419 - 420 - 421 - 422 - 423 - 424 - 425 - 426 - 427 - 428 - 429 - 430 - 431 - 432 - 433 - 434 - 435 - 436 - 437 - 438 - 439 - 440 - 441 - 442 - 443 - 444 - 445 - 446 - 447 - 448 - 449 - 450 - 451 - 452 - 453 - 454 - 455 - 456 - 457 - 458 - 459 - 460 - 461 - 462 - 463 - 464 - 465 - 466 - 467 - 468 - 469 - 470 - 471 - 472 - 473 - 474 - 475 - 476 - 477 - 478 - 479 - 480 - 481 - 482 - 483 - 484 - 485 - 486 - 487 - 488 - 489 - 490 - 491 - 492 - 493 - 494 - 495 - 496 - 497 - 498 - 499 - 500 - 501 - 502 - 503 - 504 - 505 - 506 - 507 - 508 - 509 - 510 - 511 - 512 - 513 - 514 - 515 - 516 - 517 - 518 - 519 - 520 - 521 - 522 - 523 - 524 - 525 - 526 - 527 - 528 - 529 - 530 - 531 - 532 - 533 - 534 - 535 - 536 - 537 - 538 - 539 - 540 - 541 - 542 - 543 - 544 - 545 - 546 - 547 - 548 - 549 - 550 - 551 - 552 - 553 - 554 - 555 - 556 - 557 - 558 - 559 - 560 - 561 - 562 - 563 - 564 - 565 - 566 - 567 - 568 - 569 - 570 - 571 - 572 - 573 - 574 - 575 - 576 - 577 - 578 - 579 - 580 - 581 - 582 - 583 - 584 - 585 - 586 - 587 - 588 - 589 - 590 - 591 - 592 - 593 - 594 - 595 - 596 - 597 - 598 - 599 - 600 - 601 - 602 - 603 - 604 - 605 - 606 - 607 - 608 - 609 - 610 - 611 - 612 - 613 - 614 - 615 - 616 - 617 - 618 - 619 - 620 - 621 - 622 - 623 - 624 - 625 - 626 - 627 - 628 - 629 - 630 - 631 - 632 - 633 - 634 - 635 - 636 - 637 - 638 - 639 - 640 - 641 - 642 - 643 - 644 - 645 - 646 - 647 - 648 - 649 - 650 - 651 - 652 - 653 - 654 - 655 - 656 - 657 - 658 - 659 - 660 - 661 - 662 - 663 - 664 - 665 - 666 - 667 - 668 - 669 - 670 - 671 - 672 - 673 - 674 - 675 - 676 - 677 - 678 - 679 - 680 - 681 - 682 - 683 - 684 - 685 - 686 - 687 - 688 - 689 - 690 - 691 - 692 - 693 - 694 - 695 - 696 - 697 - 698 - 699 - 700 - 701 - 702 - 703 - 704 - 705 - 706 - 707 - 708 - 709 - 710 - 711 - 712 - 713 - 714 - 715 - 716 - 717 - 718 - 719 - 720 - 721 - 722 - 723 - 724 - 725 - 726 - 727 - 728 - 729 - 730 - 731 - 732 - 733 - 734 - 735 - 736 - 737 - 738 - 739 - 740 - 741 - 742 - 743 - 744 - 745 - 746 - 747 - 748 - 749 - 750 - 751 - 752 - 753 - 754 - 755 - 756 - 757 - 758 - 759 - 760 - 761 - 762 - 763 - 764 - 765 - 766 - 767 - 768 - 769 - 770 - 771 - 772 - 773 - 774 - 775 - 776 - 777 - 778 - 779 - 780 - 781 - 782 - 783 - 784 - 785 - 786 - 787 - 788 - 789 - 790 - 791 - 792 - 793 - 794 - 795 - 796 - 797 - 798 - 799 - 800 - 801 - 802 - 803 - 804 - 805 - 806 - 807 - 808 - 809 - 810 - 811 - 812 - 813 - 814 - 815 - 816 - 817 - 818 - 819 - 820 - 821 - 822 - 823 - 824 - 825 - 826 - 827 - 828 - 829 - 830 - 831 - 832 - 833 - 834 - 835 - 836 - 8

$\frac{d}{dt} \left( \frac{\partial L}{\partial v^j} \right) = \frac{\partial L}{\partial x^j}$

१. छात्रों में नैतिक शिक्षा का प्रसारण करना।  
२. छात्रों में शारीरिक शिक्षा का प्रसारण करना।



[illegible]

100

[illegible][illegible]

थी। अजिना गंगवामी को भी एक कमी पड़ गई थी।  
 जो दान गुरु, गंगवामी को भी थी।

१. यह सुन, माताजी यह सुनो।  
 वहाँ करीब आठ हज़ार बच्चे अनाथ हैं।  
 माताजी - वृत्त ने कहा किता - इस उमर का बच्चा  
 मर जाये, माताजी से कहा जा रहा है। माताजी - वृत्त ने कहा  
 भावना - इस भावना।

१५०  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...  
 ...



... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..  
... ..  
... ..

... ..  
... ..





होगा।" कहते हैं साथ ही बुद्ध ने दिक्कत सारी की और दुःख देना दिया।

□□

□□

गण्ड्य हीन का दारुण जग सा सूना था। द्विती में से दुःखान्न चौहान और जगमाहान ने धीतर का साथ हाथ देखा और फिर वहाँ से हटकर एक साफ आर में हो गए। कहीं भी जा सकता था। ज्यादा दूर खूब में रहना सोच नहीं था। धीतर ही आकाश में नक नहीं आ रही थी।

"बुद्ध तो मलानी की पालन की देवारी में है - गण्ड्यन बना।

"हा।" दुःखान्न चौहान के हाथ धिन्न हाथ है - "हलाम ल्यादा हा २ ३ हा ना होक नहीं। बुद्ध मलानी के हाथ पाव भी हाट सकता है। एम में हम मलानी का दुस्तेमान न हो कर पावनी। न हा चना और यहा भी कुछ गनमैना का निशाना बनाना शुरू कर दो - जगना वो हमें देखते ही भूत देंगे।"

"लाइन हम दो, एक साथ दुस्तेमान गनमैना का दुस्तेमान ईसे कर सकते हैं।"

"परिक्त मत डगे, में सब गण्ड्यन बुद्ध - दुःखान्न चौहान ने कहने हा निशाना पर में माहरेमर हाहा और चेम्बा गनमैना जब से एक गाड़ी निकाली और सारी हा लुन में राख दे - गनमैना का एक खाना खाती था - वो गाड़ी राख में हा लुन का न गनमैना पर खर्च कर चुका था।

"हैमे सभाजोगे?"

"धीतर नलकर मानुस हो जगना - दुःखान्न चौहान ने हा ई-चार ने गार की - "आजी।"

दोना दरवाजे की राफ बट।

पास पहुँचकर, द्विती में से पावने की तरह धीतर झाड़ा। धीतर के हालाना में कोई फरक नहीं आया था। बुद्ध सदृश वाली निशाना का दुस्तेमान मलानी पर कर रहा था।

दोनों ने एक दूसरे का देखा। इशारा कि हा फिर दरवाजा खोलने हा। तुरन्त की धीतर धीतर प्रशा हा। और फुर्ती के साथ गनमैना का निशाना बनाने लगे।

कुछ पलों के लिए ऊई भी कुछ नहीं समझ पाया।

तब तक पाव गनमैना खुल ही चुके थे।

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

१० दशराज सदाय एकताक जग

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਮਰਾ ਹੋ ਕੁਝ ।

The figure consists of seven horizontal number lines arranged in two rows. The top row contains four lines, and the bottom row contains three lines. Each line represents a stage in the construction of the Cantor set \$C\$.

- Line 1 (top left):** Labeled with 0 at the left end and 1 at the right end. It has tick marks at \$1/3\$ and \$2/3\$, which divide the interval into three equal segments.
- Line 2 (top second):** Shows the same interval with the middle third removed, leaving two segments: \$[0, 1/3]\$ and \$[2/3, 1]\$.
- Line 3 (top third):** Shows the next iteration where the middle third of each of the two remaining segments is removed, leaving four segments.
- Line 4 (top fourth):** Shows the process continuing with more segments being added.
- Line 5 (bottom left):** Shows the construction of the Cantor set \$C\$ as a collection of points, represented by small circles or dots, located at the endpoints of the removed intervals.
- Line 6 (bottom second):** Another representation of the Cantor set \$C\$.
- Line 7 (bottom third):** A final representation of the Cantor set \$C\$.

*[Faint, illegible handwritten notes or bleed-through from the reverse side of the page.]*

३. इन धीनकर कर

उन्हीं ने वैसा ही किया।

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

— 18 —

३. अथवा अन्य विधि द्वारा

— *Leaves* —

क्या हमें यह पता है ?

2017年12月15日

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Handwritten musical notation on ten staves. The notation is in a cursive, handwritten style, likely from a 19th-century manuscript. The staves are numbered 1 through 10 on the left margin. The notation includes various notes, rests, and bar lines, though the specific notes are difficult to read due to the handwriting and image quality.

Handwritten musical notation on ten staves.

1111 1111 1111 1111





10

10

3  
7  
5

स्वर में बोला—“मारु?”

[illegible]

1. The first part of the paper is devoted to a review of the literature on the topic.

समस्त-मा हो गया ।

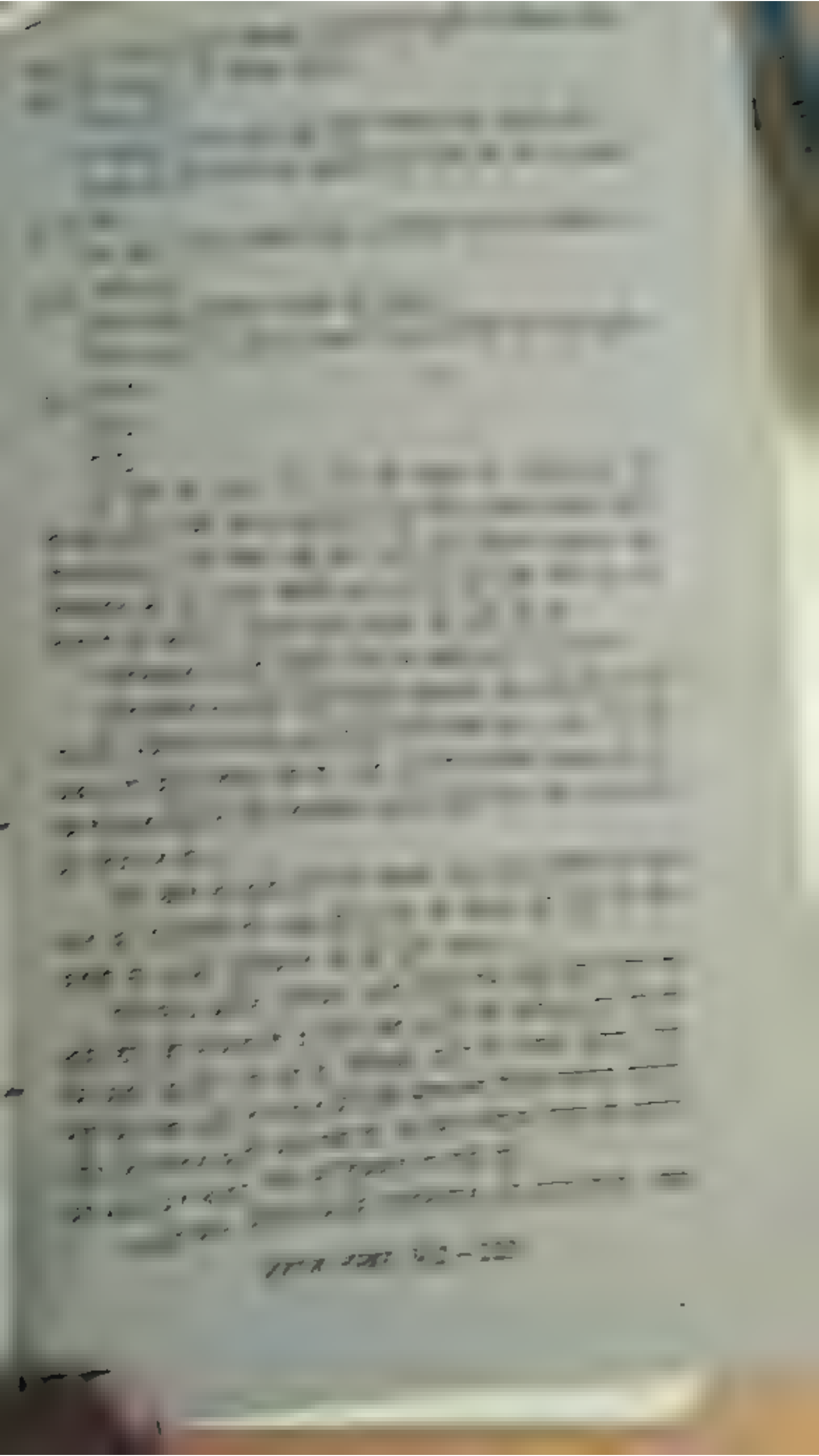
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

मरणा के क्षण पर उसने कहा नहीं था। उसने गन नीचे  
लगा दी। रक्तमन ने कहा, मरणा के क्षण पर को पीछे किया और

अक्षा नं० ३०२ २२२





कि जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
लड़कियों को जो दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
पर सफा था

परन्तु इन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
था

सोहनचान की पहचान के लिए वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
मैंने भी कि वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
जो वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
मैंने भी ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था

सोहनचान जयम आने के लिए मैं ठीक था

जैसा कि मैं ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
मैंने भी ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
मैंने भी ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
मैंने भी ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था

एक घण्टा की सोहनचान के दिनों में सोहनचान ने तीन फीट  
चौड़ा तीन फीट लम्बा और दो इंच गहरा छिनी छिनी में बनाया  
है, ताकि नष्टों को जोड़ कर दो फीट चौड़ा पड़े। इस काम में  
आपका न केवल ही मदद हो, बल्कि यह कि आपने भी  
नेत्र ही थे, ताकि किन्हीं तरह की कड़ खुरदरा सामान आया  
कई केविन का टांगना खरबाने नये आया।

यानि कि सब ठीक रहा था।

इस सारे काम के दौरान सोहनचान सिर में पट्टा लटका  
ले धार रहा था, जो कि बीच में बीच में पड़ा था, जो कि सिर  
में आने के लिए सोहनचान ने, मैं पुनः दोहराया कि

मैंने भी ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था  
मैंने भी ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था, तो वह ही जिन दिनों में वह ठीक था

इस बार पैन घड़ी ही लगा।  
दीवार कुन बाहर इंच भारी थी। बाकी की छे इंच साइज में



महान नमस्कार ५०२ - २२६

"किसी भी भी नहीं है।"

"कहाँ? गलती है? क्या है? मैं नहीं जानता।"

"किसी भी नहीं है। मैं नहीं जानता।"

"कहाँ?"

"कहाँ? मैं नहीं जानता। मैं नहीं जानता।"

उत्तर में नजर आया।

"कहाँ? मैं नहीं जानता।"

"कहाँ? मैं नहीं जानता। मैं नहीं जानता।"

"कहाँ? मैं नहीं जानता।"

"कहाँ? मैं नहीं जानता।"

"कहाँ? मैं नहीं जानता। मैं नहीं जानता।"

"साहब की बहन, अहाज पर—।"

"साहब! हम भी जानते हैं। हमें यह पता है कि वह कौन है।"

हम सबको या नहीं समझा। लेकिन फिर किसी ने कहा।

"मुझे भी नहीं पता है। कहा है कि वह।"

"तो तो मैं ही जानती हूँ।" वहने के साथ उसने साहब की हाथ में पकड़ी रिश्वत को देखा। "यह रिश्वत आपने हाथ में क्यों पकड़ रखी है? यह तो काटें मत।"

"बेचूँ, शादी में आया होता तो, यह सवाल न उठता। जब फरे हो रहे थे, मैंने तब भी रिश्वत पकड़ रखी थी। सब तब तक है कि एक हाथ से खाना खाना हुआ दूसरे हाथ में रिश्वत ली है। फालतू के सवाल मत कर। वृत्त के पास चल।"

"आइये—?"

□□

□□

वर्षों बाद मित्रों के बीच और वहाँ की बड़ी जगहों से मुझने के बाद, साहब ने भी तब तक मन में यह दर्ज है कि साहब की और उसने साहब की दृष्टि।

"कहा है - साहजिक ही मैं पुत्र

गणपति के लिए परीक्षा में भाग लूँगा

"आप ही जानें परीक्षा का आनंद है - गणपति

में है प्रभु।

"हूँ मैं तो हूँ ही नहीं बलवान् हूँ, मैं तो हूँ ही

"मैं तो हूँ ही नहीं बलवान् हूँ, मैं तो हूँ ही

साहजिक ही मैं पुत्र गणपति का हूँ।

कहा करता।

"तुम्हारे बाल बाल काले हैं, तुम तो तो हूँ ही

बाल काले हैं कहा - साहजिक ही मैं पुत्र गणपति

गणपति के लिए प्रभु।

"गणपति के लिए प्रभु ही तुम है कि यह तुम ही तुम

है -

"कहा पुत्र - साहजिक ही मैं पुत्र गणपति

"आप पर विश्वास करके आइए मैं यहाँ तक मैं आया

बालक आप में पढ़ने मैंने आइए कभी नहीं देखा। आपने कहा

आप तुम साहजिक ही तुम हैं। मैंने यहाँ आया। सब आइए

के लिए, आपमें यह बात पुरानी है कि कभी मैं किसी गणपति

की तो यहाँ नहीं ने आया - गणपति ने ज्ञान स्वर में कहा

"गणपति आइए हैं - तुम के जीना की यहाँ कि तुम गणपति

आइए गणपति हैं।" साहजिक ही मैंने देखा मैंने यहाँ पर

गणपति ही रहा था कि सामान्य विगड़ने जा रहा है - यहाँ तुम

की बातें हैं।

"कहा - गणपति उत्तम में पड़ा।

"बन तो सही -"

साहजिक ही, गणपति की उस दृष्टि में पड़ने करण है -

गया।

"अब मुन की मैं बता रहा हूँ।"

"कहा -"

"तुम की मैं कम नहीं लगता। उस मंदर का तो मैंने

कभी देखना भी नहीं देखा।"

"कहा - गणपति गीता। अगले ही पल की मैंने

सीधी करनी लगी।

तब तक साहजिक ही मैंने देखा, साहजिक ही मैंने









इसे शिकार नहीं करते, हमारे दुश्मन हैं।  
वही भी नहीं करते।

गणेशाय नमः ।

[illegible]

नारे सामने होने का मतलब है कि वह नारा नहीं है।  
नारे के अर्थ में ही यह नारा है।

‘कुले ही गुप्त-’ यत्नाही गुरा व  
‘काले गळे बकवास ।’ बृग दगिन्दगी म न र ११

महात्मा ने लड़े गनवरों से कहा—“तुम मेरे साथ आ जाओ। मैं तुम्हें अपने घर में रहने दूँगा।”

[illegible]

१७.  
मन्त्र-ना न प्रथम भवेत् तदा ही को  
नव व हं इव हि हं न पञ्चमीय क इति मन्त्रेण वा यन्त्रेण  
कृतेनैव क स्यात् नरा क इति एवै कम्बे भाग्य मिता कृतस्यैव लक्षण  
मा

[illegible][illegible]

१. ब्रह्मण्येति शब्दोऽत्रादिभिरुक्तः ।  
२. अतएव तस्मात्प्राप्तः ।

[illegible]

— ११३ —

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

देवगढ़ सैनिक ने कहा ।

महाराज महाराज के नाम पर एक एक बार अपने नाम  
परन्तु वह वृत्त के प्रति पूर्ण नरक मन्त्र था कि अपने नाम पर  
स्वयं ध्यान कर के एक गुण का पा

[illegible]

श्रीगुरुभ्यो नमः ।

मनुष्यों को संतुष्ट करने के लिए, मनुष्यों के जीवन और शानति का ध्यान रखना।

बदन में धमक पड़ी मन्दा की दाढ़ में मनानी का ज़ोर जड़  
गया था। पीला के कारण मिट चुका रहा था। परन्तु अगले ही पल,  
सब कूड़ भूनकर, वो मोहनलाल के हाथ में थमी मन पर डपटा।  
कम में कम सन्दनलाल को मनानी से ऐसी किसी हरकत की आशा  
नहीं थी।

गन बनानी के हाथ में पहुँच गई।  
... से जाड़े कितनी

गन बनानी के हाथ में पहुँच गई।  
अगले ही पल गन से जाने कितनी गोनिया निकलीं और बूंग  
के शरीर के हिस्सों में धमती चली गई जो, वैशाली की कुर्सी के  
पास पड़ी मिर्चाल्वर को झपटकर, उठाने जा रहा था।

जहाज नम्बर 302-233

वैशाखी घोसकर को से ३२ मारी हुई।  
वैशाखी से दुका नीचे नगपद बना था जो १००० के  
भी भीका नीचे पिना था। अगले दिनसगाह से तो मुंदे दि का  
ही गया था।

सबही निगदर श्रम की लाज पर १००० मुंदे थी  
“मने तो मयजा था इन, हम पावन तो १००० है।” मने १०००  
ने मुंदे गहर मसानी हो दगा।

मसानी के दाते पिना १००० थे। लोहा पर मुंदे गहर भा १०००  
“बहन भासना धीन पर गगा दगाप मने” मसानी दाते भी १०००  
१००० उठा।

वैशाखी, अनिता गाव्यामी तो ही मसानी लगे थी।

दुकाज चौहान और जगपदन के बहन भी मुन गाये पर न  
शरीर में धुकी मुंदे ने उनके त्रिम्भ से अह गहर, नगभग नाह ग  
कर रहा था।

तभी उनके कानों में बड़े दौने कदमी की आवाजें पूरी फिर  
देखने की दुका ने मुने दावान से छ गनमेनी ने भीतर प्रकाश कि रा  
तो फापीरग की आवाज मुनकर आये थे, मनेर का नगभग दगाप  
ही उनके चहरे पर भी १००० के भाव आये, उन्हें विद्वान नही  
भा रहा था कि वृत्त पर गया है।

मसानी अपनी पीठ से मुनकर, गन धाम आगे बढ़ा। गनमेनी  
क पास गगा। उसकी गन का सग गनमेनी की नगही ही था और  
चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे।

“दृढ़ क्या रहे ही।” मसानी मनेर स्वर में बोला “वृत्त पर मुन  
है। पर आदमी का मनेर, मनेर कर ही दिना तो मनेर है लोकेन मने  
माथ मुन नग त्रिन्दा गहर भी दे सकन है। बोना क्या दगा है।”

वृत्त की मोन के साथ ही मनेर हावान बढ़ने गये थे।

“हम आदमी मनेर है मसानी मादव ।”

मसानी के चेहरे पर गहन के भाव उभरे उसने गन भाव कर  
ली।

“मने बढ़ने से मनेर निकाली।” मसानी बोला।

दो गनमेन मसानी के त्रिम्भ में धुकी मुंदे निकालने लग  
गये। वैशाखी और अनिता गाव्यामी, दुकाज चौहान और जगपदन  
के त्रिम्भ में धुकी मुंदे निकालने लगीं।

हम पिना में ही उनके त्रिम्भ में धुकी मुंदे निकल रहा





दीन। भगवान् विनाश देने की चेष्टा कर रहे हैं। मैं तो-  
करोड़ डोंवर धे।

"सुनो" जगमोहन फौज का पता लगाया। मैं भी का-  
लिका- "पताम काल के बाद इनसे बातें करके का-  
मजा आ गया! मैं तो-।"

"जगमोहन भगवान् के हाथों का-  
पता लगाया। मैं भी का-

मैं भी का-

मैं भी का-

जगमोहन पतया।

"पताम काल के बाद इनसे बातें करके का-

"जगमोहन भगवान् के हाथों का-

देखा।

"मैं भी का-

"नहीं-।"

"मैं भी का-

मैं तो बीबी पाकर-।"

"मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-

"मैं भी का-

"मैं भी का-

"मैं भी का-

"मैं भी का-

"मैं भी का-

"मैं भी का-

"मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-  
मैं भी का-

ले पाई तो निश्चय ही ...  
जहाँ कहा निश्चय ही ...  
राने पर गंगा कि ...

बेशाली ने मुँह बनाया।

"तुम मुझसे भयंक कर रहे हो।"

जहाँ सोहनराज पास पराग और ...

... घड़ी लौटकर कर रहा है, सोहनराज ...  
लायक कड़े सेना हो तो ...  
बड़ी से बड़ी धूल को बाध ...  
नहरों में कड़ा हो ...  
धनी शान में तारीफों के पुनः ...  
जहाँ जहाँ जगन्नाथ ने खुद ...

"शेखर ..." बेशाली मुँह ...

"... जाना है" सोहनराज ने तुल्य दायें-बायें सिर हिलाया।

देवराज चौहान ने मनानी का देखा।

"... की मान के बाद जहाँ पर अब तुम्हारे क्या परिणाम ...  
... देवराज चौहान ने पूछा।

"... जैसी ही है।" मनानी ने पक्के स्वर में कहा "जहाँ ...  
पर घड़ी पूरी चनेगी।"

"तो इस जहाँ का फौज ...  
... में कहा - "यह जहाँ सम्पूर्ण में ...  
जहाँ के कर्मचारियों की मफ्ती बोटी पर यहाँ में निकाल दो।"

"जहाँ को तबाह करने की ...  
... मनानी गम्भीर हो गया।

"... है। जिस ...  
... माना है। उसके बाद में ...  
... ही इसी ...  
... कर सकता है।"

... कहने दो। मैं अभी ...  
... को मुश्किल पानी में ...  
... मजदूर सम्झाकर ...

"... बेशाली फौज ...  
... की पर ...  
... में ...

"... नहीं ...  
... जगन्नाथ ...

मलानी जी तरफ बढ़ती

१७. १९५५

1. *... ..*

... : ३ अ गी मी ॥

ମାଧ୍ୟମିକ ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗର ଅଧିକାରୀଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପ୍ରସ୍ତୁତ ।

“यह नगर अनेक दुःखाने की । शराबी कुपान के घर में ही ।”  
शराबी गोशाला के घर में कुपान के भाव थे ।

“ब्रह्म की प्रशंसा करते-करते तुमने देहा का ही नहीं, जनता का भी  
 भजन में गाँझा है। नहीं तो उस ईश्वर-प्रेम में फँस गये हो-गया,  
 ज्ञान का ज्ञान-तन्त्रालय जान। तुम महाशय की सन्ने टोहन हो। अपनी  
 राज-पराधीनता, तुमने महाशय की मोत का बन्ना निरा।” अनिता  
 गोरगर्भी का स्वर भरी उग - “मनानी को भी बन्ना निरा। मुझे भी  
 बन्ना। नहीं तो ब्रह्म मुझे अपना सिद्धि-दान बना लेता। ये—।”

तथा मोहनदास दी सा ।

जब नारायण गौरी ने गौरी भाग्या में साधनलाल को देखा।

रमाने के सोचने-बाल पुत्र गले हुए फिर हिलाने लगा ।



१४११ का मातृत्व कर भुगतान था। अफगानिस्तान का मातृत्व पैसा

[illegible]

377050

[illegible][illegible]

05



महाराष्ट्र शासन, न्याय विभाग, मुंबई

[illegible][illegible]

† 1. 15 27 29 31 33 35 37 39 41 43 45 47 49 51 53 55 57 59 61 63 65 67 69 71 73 75 77 79 81 83 85 87 89 91 93 95 97 99 101 103 105 107 109 111 113 115 117 119 121 123 125 127 129 131 133 135 137 139 141 143 145 147 149 151 153 155 157 159 161 163 165 167 169 171 173 175 177 179 181 183 185 187 189 191 193 195 197 199 201 203 205 207 209 211 213 215 217 219 221 223 225 227 229 231 233 235 237 239 241 243 245 247 249 251 253 255 257 259 261 263 265 267 269 271 273 275 277 279 281 283 285 287 289 291 293 295 297 299 301 303 305 307 309 311 313 315 317 319 321 323 325 327 329 331 333 335 337 339 341 343 345 347 349 351 353 355 357 359 361 363 365 367 369 371 373 375 377 379 381 383 385 387 389 391 393 395 397 399 401 403 405 407 409 411 413 415 417 419 421 423 425 427 429 431 433 435 437 439 441 443 445 447 449 451 453 455 457 459 461 463 465 467 469 471 473 475 477 479 481 483 485 487 489 491 493 495 497 499 501 503 505 507 509 511 513 515 517 519 521 523 525 527 529 531 533 535 537 539 541 543 545 547 549 551 553 555 557 559 561 563 565 567 569 571 573 575 577 579 581 583 585 587 589 591 593 595 597 599 601 603 605 607 609 611 613 615 617 619 621 623 625 627 629 631 633 635 637 639 641 643 645 647 649 651 653 655 657 659 661 663 665 667 669 671 673 675 677 679 681 683 685 687 689 691 693 695 697 699 701 703 705 707 709 711 713 715 717 719 721 723 725 727 729 731 733 735 737 739 741 743 745 747 749 751 753 755 757 759 761 763 765 767 769 771 773 775 777 779 781 783 785 787 789 791 793 795 797 799 801 803 805 807 809 811 813 815 817 819 821 823 825 827 829 831 833 835 837 839 841 843 845 847 849 851 853 855 857 859 861 863 865 867 869 871 873 875 877 879 881 883 885 887 889 891 893 895 897 899 901 903 905 907 909 911 913 915 917 919 921 923 925 927 929 931 933 935 937 939 941 943 945 947 949 951 953 955 957 959 961 963 965 967 969 971 973 975 977 979 981 983 985 987 989 991 993 995 997 999 1001 1003 1005 1007 1009 1011 1013 1015 1017 1019 1021 1023 1025 1027 1029 1031 1033 1035 1037 1039 1041 1043 1045 1047 1049 1051 1053 1055 1057 1059 1061 1063 1065 1067 1069 1071 1073 1075 1077 1079 1081 1083 1085 1087 1089 1091 1093 1095 1097 1099 1101 1103 1105 1107 1109 1111 1113 1115 1117 1119 1121 1123 1125 1127 1129 1131 1133 1135 1137 1139 1141 1143 1145 1147 1149 1151 1153 1155 1157 1159 1161 1163 1165 1167 1169 1171 1173 1175 1177 1179 1181 1183 1185 1187 1189 1191 1193 1195 1197 1199 1201 1203 1205 1207 1209 1211 1213 1215 1217 1219 1221 1223 1225 1227 1229 1231 1233 1235 1237 1239 1241 1243 1245 1247 1249 1251 1253 1255 1257 1259 1261 1263 1265 1267 1269 1271 1273 1275 1277 1279 1281 1283 1285 1287 1289 1291 1293 1295 1297 1299 1301 1303 1305 1307 1309 1311 1313 1315 1317 1319 1321 1323 1325 1327 1329 1331 1333 1335 1337 1339 1341 1343 1345 1347 1349 1351 1353 1355 1357 1359 1361 1363 1365 1367 1369 1371 1373 1375 1377 1379 1381 1383 1385 1387 1389 1391 1393 1395 1397 1399 1401 1403 1405 1407 1409 1411 1413 1415 1417 1419 1421 1423 1425 1427 1429 1431 1433 1435 1437 1439 1441 1443 1445 1447 1449 1451 1453 1455 1457 1459 1461 1463 1465 1467 1469 1471 1473 1475 1477 1479 1481 1483 1485 1487 1489 1491 1493 1495 1497 1499 1501 1503 1505 1507 1509 1511 1513 1515 1517 1519 1521 1523 1525 1527 1529 1531 1533 1535 1537 1539 1541 1543 1545 1547 1549 1551 1553 1555 1557 1559 1561 1563 1565 1567 1569 1571 1573 1575 1577 1579 1581 1583 1585 1587 1589 1591 1593 1595 1597 1599 1601 1603 1605 1607 1609 1611 1613 1615 1617 1619 1621 1623 1625 1627 1629 1631 1633 1635 1637 1639 1641 1643 1645 1647 1649 1651 1653 1655 1657 1659 1661 1663 1665 1667 1669 1671 1673 1675 1677 1679 1681 1683 1685 1687 1689 1691 1693 1695 1697 1699 1701 1703 1705 1707 1709 1711 1713 1715 1717 1719 1721 1723 1725 1727 1729 1731 1733 1735 1737 1739 1741 1743 1745 1747 1749 1751 1753 1755 1757 1759 1761 1763 1765 1767 1769 1771 1773 1775 1777 1779 1781 1783 1785 1787 1789 1791 1793 1795 1797 1799 1801 1803 1805 1807 1809 1811 1813 1815 1817 1819 1821 1823 1825 1827 1829 1831 1833 1835 1837 1839 1841 1843 1845 1847 1849 1851 1853 1855 1857 1859 1861 1863 1865 1867 1869

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

सुखं न भवति तत्र मरणं च तत्र

संस्कृत-विद्यापीठ

मन्त्रं च श्रीगणेशाय नमः ॥

• प्रमाण: वृत्त मध्य में गंगा ३, ४४ गंगा ५० गंगा ५० गंगा ५०

Figure 1

3000

संज्ञा संख्या ३०२ - २४०









हिला है, हुकों में पल्लव का दान ...

...  
...  
...  
...  
...  
...  
...  
...

किया जाता है।

देवगज चोखन के सपने में देव गज के मित्र  
- जो भी है बलवान बनने, बहुत दिनों तक करे य सिद्धि  
बनाए । • देवगज चोखन बोला ।

सिद्धि मे सागर

मन्त्रों का ही इस्तेमाल था एक। इस सिद्धि में साग  
 सिद्धि का नाम है। लेकिन अब साग कम हो गया तो एक  
 दिन ब्रह्मा ने उसे खुश करवा दिया कि कहीं वो जगत के राजा को  
 न मार दे। मन्त्री ने धीरे स्वर में कहा - "ब्रह्मा श्रेष्ठ दिशा  
 का, बाहर खुलने का इन्साज था।"

CD

CC

८८  
 तब ही जयलाल ने, भारत के सब पत्नी और कपंगनी बचक  
 को घेरकर कहा कि तुम नुरु हो। अब भारत में सब  
 बचक नुरु ही है।

सुख-दुःख के भेद को छोड़कर।

[illegible][illegible]

॥ १ ॥

दुःख ।  
"दुःख मे भवतु विदुः कष्टमेव । दुःखेन कति ध्यानादपि मोक्षोपयोगी भवति ।"

ह। जो कि हमारा नजर न हो ? " जगमोहन ने कहा ।  
असानी से निकल सकते हैं ।"

"तब पर तो हमारा के से पानी निकल रहा था ?"

देवगज चौहान ने उसे देखा ।  
"हां, इस पर वाद जगमोहन है । यही कि बिना के र सड़नी से  
सकता है ।" पनानी ने पौराणिक रूप से कहा ।

"सकता है ।" पनानी ने पनानी को ही जवाब दे दिया । इन्हें  
भोकरबाग में रखा गया है ।

□□

□□

उन पनानी के ही का नाम रक्त ने जगमोहन में गणग भर लग गया ।  
गान्धारी में भी भागी थे । जगमोहन पनानी ने भोकर बाग में रखा था ।  
पानी में रखा गया । पानी बागों में भी रखा गया । इ सब भी  
बाग में रखा । बाग में भी रखा । इसमें अभी भी रक्त पनानी में  
आ सकते थे ।

जगमोहन चौहान ने पनानी में कहा ।

"रिपोर्ट कंट्रोल दो ।"

"हां" पनानी के होंठों में निकला ।

"जगमोहन के ही रक्त दोनो तल छानने रहे । जगमोहन में पानी भर  
जावेगा । नाक को दब सकें ।"

पनानी ने रिपोर्ट कंट्रोल निरंतर रूप से दिया तो देवगज  
चौहान जहाज पर चला गया । इस बिना वाद लोग और बाग पर  
आ गया । मोहननाल स्थापित पर था ।

देवगज चौहान के इशारे पर मोहननाल ने मोहननाल को दबाने  
मार्ग दिया और आगे बढ़ा दी ।

"दोनों तल हटा दिए" जगमोहन ने पूछा ।

"हां" कहते हुए देवगज चौहान ने रिपोर्ट कंट्रोल सभन्धर में  
फेंक दिया "एक मिनट घण्टे में जहाज दब जाएगा ।"

भोकरबाग नजी से सभन्धर में भागने लगी ।

□□

□□

बागमोहन का एक बग रहा था । सूर्य मिर चढ़ा रहा था । पानी  
में पड़ने वाली उसकी चपक से अस्तर आली चुपचा जाता था ।

पवि घण्टी के बाद पानी के अस्तर 3-4 जमीन दिखाई दी



1. The first part of the document is a list of names and titles, including "The Hon. Mr. Justice" and "The Hon. Mr. Justice".

A page of handwritten musical notation on ten staves. The notation is in a historical style, possibly 18th or 19th century, with various note values, rests, and bar lines. The handwriting is somewhat faded and the paper shows signs of age.

*[Faint musical notation]*

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥  
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्री लक्ष्म्याय नमः ॥  
 ॥ श्री बालदेवाय नमः ॥  
 ॥ श्री नारायणाय नमः ॥  
 ॥ श्री रामाय नमः ॥  
 ॥ श्री हनुमताय नमः ॥  
 ॥ श्री विष्णवे नमः ॥  
 ॥ श्री शिवाय नमः ॥  
 ॥ श्री महेश्वराय नमः ॥  
 ॥ श्री परमात्मने नमः ॥

१. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 २. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ३. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ४. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ५. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ६. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ७. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ८. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 ९. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।  
 १०. "सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापी सर्वभूतहितं रक्षति" ।

... ..

... ..

... देवराज चौहान ...

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

... ..

□□

□□

... ..

... ..

[illegible]

... ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

साधन-तार का, तार की तरह बंधा हुआ यह गाँव ।

[illegible]

दशमः श्रीमान् श्रीरामायणः मन्त्रः ॥ श्रीगुरुः ॥

"ये लगती जा रही हैं। इनके सामने कुछ रहस्य हैं।" - "होना"

शुभकालीन मनः स्यात् मे वीणा ।

वो कुल धाँदह थे ।

उन्होंने उन दोनों को घर निया आर अपनी भाषा में सब  
कहा। जो उनही समय में नहीं आया। वे देखकर एक ने इशारे में  
उन्हें आगे बढ़ने को कहा।

देशगज चीहान और साहनलान उनरु गे म आगे बरन लग।

इसके साथ ही वो जगती लोग खुशी से उठन कूद रहे थे। नाच रहे थे। करीब दस मिनट चलने के बाद वे लोगों उन्हें लेकर पास जगह पर चले गये। खुशी जगह में लीम चालीस जापानिया यमी रहे थे। उन्हे भी जगती नगर आ रहे थे, बन्दे खन रहे थे। उन्हे देख ही गये उन्हे जगती से भरे उन पर पास आये उन्हे घेरे हुए होन ॥१॥

“अब क्या होगा?” सोहनलाल अतीव्र से पूछा था।

“देव ने गीत, प्रणव इन्होंने हमारे जान लना होनी तो अपने ही ने ली।” देवराज चौहान ने गम्भीर स्वर में कहा।

गोहमन्त्र ३३ नक्षत्रा ।

साग की लवणता को शांत करने ही जा रहा था।

नभी मरने लगे से यहाँ भी भाग नरक आया : जो भी धार  
कीर्णवादी ने पाया था।

बाबा। "इस बाबा की भी इतनी ताकत है, जितनी मैं पकड़ नहीं पा रहा हूँ," इतना ही कहकर

महेश्वर जी की आज्ञा पर मैं सब कुछ करूँगा।  
महेश्वर जी की आज्ञा पर मैं सब कुछ करूँगा।

$$\frac{1}{x^2} = x^{-2}, \quad \frac{d}{dx} x^{-2} = -2x^{-3} = -\frac{2}{x^3}$$

“हिन्दुस्तान में, मेरी गाँव की जमीन पर कुछ लोग कब्जा कर रहे थे। वे लाकड़ार थे। उनका रखना था। मैं उनका मुँहासा करने लगा था। और फिर एक दिन गुप्ते में आकर मैं देशरत जागी का गार्ड से भून दिया। जमीन पर कब्जा करने वालों को भी भाग दिया मैं। लेकिन अब मेरे लिए फायो के अस्सा और कोई सजा नहीं बची थी। और मैं फायो वाली मौत नहीं चाहता था। दो पक्षीने कानून में बन्दर भागता रहा। और फिर किसी तरह बन्दरगाह के जहाज पर छोड़े जहाज पर ठिप गया। वो जहाज यूरोप की यात्रा पर रवाना हो रहा था। वो अपनी यात्रा पर चल पड़ा। मैं जहाज में ही ठिप रहा। रातों रातों कुछ नहीं था। दूसरे दिन लंग होकर खाने की तलाश में मैं किसी जगह से निकला तो पकड़ा गया। कैद कर लिया गया, नाकि अगर मैं बन्दरगाह पर जहाज रुक तो मुझे वहाँ की पुलिस के हवाले कर दिया जाये। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। जहाज में छसबी आ गई। तो उस जहाज को इस करीबी टापू पर रुकना पड़ा। यहाँ रुकते ही इन लोगों ने जहाज पर अपना कब्जा कर लिया और खाने-पीने का सामान और कपड़े लूटने लगे। मेरी तरफ से उन लोगों का ध्यान हट गया। मैं किसी तरह जहाज से निकलकर टापू पर आ ठिप। दो दिन के बाद जहाज आगे बढ़ गया। मैं टापू पर ही रहा। धीरे-धीरे इन लोगों से घुल-मिल गया। फायो की मौत से बेहतर ये जिन्दगी। वक्त के साथ-साथ इनकी भाषा भी मुझे समझ आनी चली गई। और अब यहाँ से जाने का मेरा कोई दुरादा नहीं है।”

देशरत चौहान ने समझने वाले ढंग में सिर हिलाया।

“तुम लोग अपने खाने और पहनने का सामान इन्हें दो और यहाँ से चले जाओ।” रामसिंह बोला।

“हमारे पास खाने का सामान नहीं है। खाने की तलाश में ही हम यहाँ आये थे।” देशरत चौहान ने शांत स्वर में कहा - “कपड़ों का नाम पर हमारे पास मुँहासा भी नहीं है। हमारा जहाज डूब रहा था। हमें मोटरबोट पर चढ़कर हमने अपनी जान बचाई।”

रामसिंह ने तगरी भाषा में सरदार को यह बात बताई तो सरदार गुप्ते में गिल्लकर कुछ कहने लगा। रामसिंह ने देशरत चौहान को देखा।

“सरदार कहता है कि तुम शून्य बचने हो।”

“मैं शून्य कह रहा हूँ। हमारे पास कोई सामान नहीं है।” देशरत चौहान बोला।



रामसिंह ने पुनः जंगली सरदार से बात की। सरदार ने मुस्से से जवाब दिया।

"वे कहता है हम बोट की सलाशी लेने। तुम लोग घूट भेज रहे हो।" रामसिंह बोला।

"हमें कोई एतराज नहीं।" देवराज चौहान ने शांत स्वर में कहा।

रामसिंह ने यह बात जंगली सरदार से कह दी।

सरदार ने मुस्से से ऊँचे स्वर में चिल्लाकर, जंगली लोगों से कुछ कहा तो वे सारे खुशी से चिल्लाने-नाचने भाग गये। देखते ही देखते वे सारी जगह खाली हो गई। सिर्फ जंगली सरदार के साथ उसके अंगरक्षक टाईप के छारों जंगली जादमी बही खड़े रहे।

"वो सब पोटरबोट की सलाशी लेने गये हैं।" रामसिंह बोला—

"अभी लौट आयेने।"

जगमोहन ने हड़बड़ाकर कहा।

"बोट में तो बचास करोड़ बीरर गये हैं।"

"वे लोग सबसे-पैसे की कीमत नहीं जानते। इन्हें खाने का सामान और पहनने की कपड़े चाहिए। और किसी चीज से इन लोगों को मतलब नहीं।" रामसिंह ने कहा— "जान रखना, कुछ न मिलने पर सरदार मुस्से से आ जायेगा। और वह मुस्से से कुछ भी कर सकता है। मेरा इरादा यही है। यहाँ से निकल जाने की करना। ज्यादा देर यहाँ रुकें तो यह तुम लोगों की जान भी ले सकता है। तुम लोगों के निकलने तक, वे इसे समझा-समझाकर रोके रखेंगे।"

□□

□□

दो सारे जंगली आधे घण्टे के बाद लौटे। पोटरबोट पर कुछ न होने की खबर उन्होंने अपने सरदार को दी तो सरदार बहुतन से मुस्से से पर उठा।

रामसिंह ने सरदार को समझाने की कोशिश की तो कभी सरदार ठगता ही जाता तो कभी फिर गर्म हो उठता। रामसिंह के जोर देने पर, सरदार ने उन लोगों को जाने की इजाजत दी।

"तुम लोग जल्दी से, यहाँ से निकल जाओ।" रामसिंह बोला—

"अभी यह तुम लोगों को यहाँ से चले जाने को कह रहा है। कुछ पता नहीं मिनट बाद यह तुम लोगों की पीठ का फरमान जारी कर दे।"

देवराज चौहान ने मुस्कराकर रामसिंह को देखा।

उसके बाद वे सब तेजी से उस तरफ बढ़ गये जहाँ पोटरबोट

छड़ी थी। किसी ने उन्हें रोकने या साय आने की कोशिश नहीं की।

पीछे से उनके कानों में सरदार और रामसिंह की ऊंची-ऊंची आवाजें आती रहीं।

“जल्दी से निकल चलो।” सोहनलाल ने कहा—“उन दोनों में बहस हो रही है। कोई बड़ी बात नहीं, सरदार गुस्से में अपने आदमी, हमारी जान लेने के लिये दौड़ा दे।”

सबकी रफ्तार पहले से ही तेज थी।

समन्दर के किनारे पर पहुंचते ही सब हड़बड़ा उठे। उनकी आंखें जैसे फटकर फैलती चली गईं। दो पल के लिये लगा, जैसे उनके जिस्म वहीं के वहीं खत्म हो गये थे। घड़कन रुक गई हो।

सबसे पहले देवराज चौहान के होंठों पर मुस्कान रेंगी। फिर जो खुलकर मुस्कराया और सिग्रेट सुलगाकर सब पर निगाह मारी। वो सब जैसे धीरे-धीरे बेहोशी के दौर से बाहर निकलने लगे थे। लेकिन शायद सांसों का चलना अभी भी शुरू नहीं हुआ था।

वहां नजारा ही ऐसा था।

हर तरफ डोंलर ही डोंलर नजर आ रहे थे। टापू की जमीन पर डोंलर, समन्दर के पानी के ऊपर दूर-दूर तक डोंलर बिछे हुए थे। पानी का बहाव डोंलरों को दूर ले जाये जा रहा था। समन्दर का पानी नजर नहीं आ रहा था। हर तरफ डोंलर ही डोंलर बिखरे नजर आ रहे थे। दो पल के लिए तो यही लगा कि जैसे वहां डोंलरों की बरसात हुई हो। और समन्दर डोंलरों का समन्दर बन गया हो। वह नजारा मीठा भी नग रहा था और कड़वा भी।

खाने का सामान और कपड़ों की तलाश में जंगली लोगों ने डोंलरों वाले <sup>302</sup> ने खोल डाले थे और डोंलरों को बाहर फेंक-फेंककर, अपना काम <sup>303</sup> में तलाश की होगी, यह उसी हरकत का परिणाम था।

डोंलर पानी में बह गये थे। कुछ टापू पर बिखरे हुए <sup>304</sup> के पास कहने को कोई शब्द नहीं था।

हक्के-मुक्के थे सब।

लेकिन देवराज चौहान बराबर मुस्करा रहा था।

डोंलरों वाले किस्से से वे लोग पूरी तरह संभल भी नहीं पाये थे कि उनके कानों में पीछे से उठता शोर पड़ा। जंगली लोगों का



शोर। वो अजीब-अजीब, उन्ही आवाजों में चिल्ला रहे थे। शोर हर पल करीब आता जा रहा था।

“निकलो यहाँ से।” देवराज चौहान चिल्लाया—“वो जंगली, हमें मारने आ रहे हैं।”

सबको होश आया।

सोहनलाल जल्दी से जामे बड़ा और स्टेयरिंग सीट पर बैठकर मोटरबोट स्टार्ट करने लगा। मलानी और अनिता गोस्वामी भी जल्दी से बोट पर पहुँच गये।

जगमोहन बुत-सा बना पचास करोड़ डॉलर के समन्दर को देख रहा था।

“जगमोहन!” देवराज चौहान ने उसे धकेला—“बोट में घलो।”

“वो डॉलर—।” जगमोहन ने अजीब-से स्वर में कहना चाहा।

“वो जंगली हमारी जान लेने आ रहे हैं। जल्दी से बोट में बैठो।” देवराज चौहान ने उसे पुनः धकेला।

“लेकिन ये डॉलर—।”

जंगली लोगों का शोर सिर पर आ पहुँचा था। अब वो नजर भी आने लगे थे। उनके हाथों में तरह-तरह के हथियार थे और चेहरों पर गुस्सा नजर आ रहा था। दूर से ही वो अपने हाथों में धमे हथियारों को इस तरह हिला रहे थे जैसे उनका बस चले तो दूर से ही उन्हें मार दें।

देवराज चौहान ने होंठ भींचकर जगमोहन को उठाया और पाँच कदम आगे बढ़कर बोट में डाला। मलानी ने उसे संभाला और देवराज चौहान भी बोट में आ चुका था। अगले ही पल सोहनलाल ने जल्दी से मोटरबोट आगे बढ़ा दी।

देखते ही देखते मोटरबोट किनारे से दूर, डॉलरों के समन्दर को पार करती चली गई।

वो ठेरसारे जंगली किनारे पर पहुँच गये थे। मोटरबोट दूर होती जाकर वो गुस्से से चिल्लाने लगे। कुछ ने गुस्से का इजहार अपने हथियारों को उनकी तरफ पानी में फेंक कर किया। लेकिन बोट उनकी जद से दूर पहुँच चुकी थी और दूर होती जा रही थी।

जगमोहन जल्दी से संभला और टापू की तरफ नजर मारी। डॉलरों का समन्दर अभी भी स्पष्ट नजर आ रहा था। वहाँ पानी की जगह दूर-दूर तक, उस पर जमी डॉलरों की तह नजर आ रही थी। उसके घेरे पर ऐसे भाव थे जैसे, उसकी प्यारी दुनियां उजड़ गई हों।



"बच गये।" सोहनलाल ने टांगू की तरफ देखा, जहाँ दोस्तों  
जंगली नजर आ रहे थे। कि उसको निगाह जगमोहन के लुटे-पिटे  
चेहरे पर पड़ी— "तेरे को क्या हो गया जगमोहन?"  
"डोंतर। पचास करोड़ डोंतर—।" जगमोहन ने अफसोसभरे  
स्वर में कहा।

"जान बच गई। ये ही बहुत है।" सोहनलाल ने गहरी सांस  
ली— "डोंतर फिर कभी मिल जायेंगे।"

"वे पचास करोड़ डोंतर थे—।"

"कोई बात नहीं। अपनी जान उन डोंतरों से ज्यादा कीमती  
है।" सोहनलाल मुस्कुराकर बोला।

जगमोहन की निगाह, उधर ही, टांगू के किनारे पर ही रही।  
देवराज चौहान मोटरबोट की सीट पर सेटा शान्त भाव से  
सिगरेट के फल से रहा था।

"तुम्हें दुःख नहीं हो रहा।" जगमोहन, एकाएक देवराज चौहान  
से कह उठा।

"किस बात का?" जगमोहन की देखकर, देवराज चौहान  
मुस्कुराया।

"पचास करोड़ डोंतरों के बरबाद होने का—।"

"वे हमारे नहीं थे। इसलिये दुःख नहीं हो रहा।"

"तो किसके थे?"

"दीलत किसी की भी नहीं होती।" मुस्कुराकर देवराज चौहान  
बोला और जवाबों बंद कर लीं।

जगमोहन, देवराज चौहान की देखता रहा। सम्झ नहीं पा रहा  
था कि क्या जवाब दे। देवराज चौहान ने टीका ही तो कहा था कि  
दीलत किसी की नहीं होती। आज वहाँ तो फल यहाँ। पिना  
गलों की दीलत, के दीहने की रफ्तार का कोई पुरस्कार नहीं कर  
सकता। वे जाने बच-कहा किन्तु, किन्तु फल पहुँच जाये, और सब  
उस से चल दे। जैसे कि अभी पचास करोड़ के डोंतर के साथ हुआ  
था। कुछ देर पहले उसके पास थे और अब वो उसके पास नहीं थे।

□□□□□

□□□

□

समाप्त